ॐ श्री

नारायण शरणम् (गुरुमन्त्र)

卐 राम जी राम राम ॐ राम जी राम राम 卐

राम जी राम राम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

राम जी राम राम

卐 राम जी राम राम ॐ राम जी राम राम 卐

੧ਓ

शब्दामृत

ॐ कर कृपा प्रभु दीन दयाला। ॐ
ॐ तेरी ओट पूरण गोपाला।। ॐ

क्रम सं.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	प्रभु पासजन की अरदास	5
2.	दोय कर जोड करु अरदास	9
3.	इहै मनोरथ मेरा प्रभु जी	13
4.	मांगऊ राम ते इक दान	16
5.	प्रभु मेरे प्रीतम प्राण प्यारे	19
6.	कवन संजोग्र मिलहु प्रभु अपने	22
7.	सेवक की अरदास प्यारे, जप जीवां प्रभु चरन तुम्हारे	24
8.	बिसर नाही एं बड दाते, कर कृपा भगतन संगराते	27
9.	भक्तां की टेक तूं संता की ओट तूं	30
10.	तुम शरणाई आया ठाकुर	33
11.	प्रभु जी तूं मेरे प्राण आधारे	36
12.	तुम तो राखनहार दयाल	39
13.	दास तेरे की बेनती, हृदय कर प्रगास	42
14.	ठाकुर जां सिमरा तूं तांही	44
15.	कर किरपा किरपाल आपे बख्शलै	46
16.	तुम करो दया करो दया, करो दया मेरे सांई	49
17.	राम गुसइआं जीअ के जीवना मोहे न बिसारो मैं जन तेरा	53
18.	तुझ बिन विआ न होर ठाकुर तुझ बिन विआ न होर	56
19.	अपने सेवक को कबहु न विसारो	59
20.	राख सदा प्रभु अपने साथ	62
21.	शरणी आइओ नाथ निधान	68
22.	हरि जीओ सदा तेरी शरणाई	69
23.	बिसर नाही प्रभु दीनदयाला, तेरी शरण पूर्ण किरपाला	73
24.	हरि धार हो हरि धार हो कृपा	75
25.	हरि जन मंगल गावहु, हरि जन मंगल गावहु	78
26.	हे गोविन्दा हे गोपाल हे दयाल लाल हे	81
27.	सभे जीअ संभाल अपनी मेहर कर	83
28.	जिऊ भावे तिऊ मोहे प्रतिपाल	86
29.	मेरे प्रीतम प्यारे मान करु तुध उपेर	89

30.	आइओ शरण तुहारी, सतगुरु आइओजी	92
31.	सब अवगुण मैं गुण नहीं कोई, क्योंकर कंत मिलावा होई	96
32.	किउं छूटउ कैसे तरउ भवजल निधिभारी	100
33.	पतित पावन प्रभु नाम तुम्हारे	103
34.	हम मूर्ख मुगध अज्ञान अविचारी	106
35.	प्रभु लावहो अपनी चरणी	110
36.	हम ऐसे तू ऐसा माझो, हम ऐसे तू ऐसा	113
37.	हउं किछु न जाणा तेरी सार तूं कर गति मेरी प्रभु द इआर	117
38.	ठाकुर प्रीतम प्रीतम प्रभु मेरे	122
39.	हउ बलि -बलि जाऊ रामइआ	126
40.	मोहे निर्गुण सब गुणों विहूणा	129
41.	निरगुण राखि लीआ संतन का सदका	132
42.	हरि चरण-शरण गोविंद दुख भजना	134
43.	पतित पावन प्रभु तेरो नाऊ, पूरब कर्म लिखे गुण गाऊ	138
44.	मैं को तार ले	140
45.	हरि जू राख लेहो पति मेरी	142
46.	मिठबोलड़ा जी, हरि सज्जन स्वामी मोरा	145
47.	तेरे बांके लोइड दंत रसाला	147
48.	कोऊ हरि समान नहीं राजा	148
49.	ऊंच अपार बेअंत स्वामी कौन जाने गुण तेरे	151
50.	बडी तेरी वडआई दाता	152
51.	पिता मेरो बडा धनी अगमा	154
52.	हउ वारि बंज्जा	158
53.	कबहु न विसरे हिय मोरे ते	161
54.	हरि की गति नहीं कोऊ जाने	163
55.	ऐसी मेरे लाल, ऐसी मेरे लाल	166
56.	सब गोविंद है, सब गोविंद है	168
57.	अव्वल अलह नूर उपाइआ कुदरत दे सब बन्दे	170

58.	मिहरवान -मिहरवान साहब मेरा मिहरबान-मिहरबान	173
59.	रोगी का प्रभु खंडहो रोग	176
60.	प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई	179
61.	जिसदा साहिब डाढा होय	181
62.	घर बाहर तेरा भरवासा	184
63.	कर कृपा प्रभु दीन दयाला	186
64.	दीन दुनिया तेरी टेक, सब मैं रविआ साहब एक	188
65.	अब हम चली ठाकुर पै हार	191
66.	स्वामी शरण परिओ दरबारे	193
67.	तऊ मैं आइआ शरणी आइआ	196
68.	तेरी किरपा, तेरी किरपा, तेरी किरपा	199
69.	मैं अंधुले की टेक तेरा नाम खुदंकारा	204
70.	दीन दयाल भरोसे तेरे	207
71.	राखा एक हमारा स्वामी	210
72.	अऊखी घड़ी न देखणा देई	212
73.	तती बाऊ न लगदी जी, गुरां जी तेरी शरण पया	215
74.	रंग रता मेरा साहब, रव रहिया भरपूर	217
74-क.	दय गुसांई मीतुला तूं संग हमारे वा स जीओ	220
75.	साजनड़ा मेरा साजनड़ा	223
76.	तू मेरो प्यारो, ता कैसी भूखा	226
77.	तू साजन तू प्रीतम मेरा	229
78.	मन तन तेरा धन भी तेरा	232
79	तू मेरा पिता तू है, मेरा माता	236
80	कर किरपा करहु प्रभु दात, तुम्हारी उसतत करहु दिन रात	240
81	प्रभु कीजे किरपा निधान राम, हम हरि गुण गावेंगे	244
82.	डोरी हाथ तुम्हारे प्रभु जी, डोरी हाथ तुम्हारे	248

83. रामईआ हऊं बारिक तेरा, काहे न खंडस अवगुण मेरा 250

84. तू ही, तू ही, तू ही, तू ही,
रसना जपती तू ही तू ही 253

85. हम चाकर गोबिंद के ठाकुर मेरा भारा 256

86. काम करावणा आइआ अपने संता दे
संता के कारज आप खलोइआ 260

87. राखो राखो कृपाधार, तेरी शरण तेरे दरबार 263

88. जो का मीत साजन है समिया
तिस जन को कहो का की कमिआ 266

89. मेरे रामराय तू संता का संत तेरे 268

90. गुरु पूरे मेरी राख लई 271

91. थिर घर बैसहो हरि जन प्यारे 273

92. जो मांगे ठाकुर अपने ते सोई सोई देवै 276

93. ठाकुर होय आप दइआल 279

94. सतगुरु होय दयाल , सतगुरु होय दयाल 282

95. गुरु गुरु गुरु कर मन मोर, गुरु बिना मैं नाहीं होर 283

96. गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंद, गुरु मेरा पारब्रहम गुरु भगवंत 284

97. मेरा प्यारा प्रीतम सतगुरु रखवाला 285

98. हरि चरण कमल की टेक 286

99.. सतगुरु अपने सुणी अरदास, कारज आया सगला रास 287

100. आवहो जी साजणा हऊं देखां दर्शन तेरा 289

101. हम घर साजन आए, हम घर साजन आए 290

102. संत रहत सुनो रे भाई, उआ की महिमा कथन न जाई 291

103. संत जना मिल हरि जस गाइयो 293

104. हम ते कछू न होय स्वामि,
जिऊं राखे तिऊं रहिए 294

105. से संजोग करो मेरे प्यारे 296

106. प्यारे राम राम बोल राम राम 298

107. हरि को नाम सदा सुखदाई 301

108. ठाकुर ऐसे नाम तुम्हारो 302
109. दर्शन मांगऊ, मांगऊ दर्शन मांगऊ देह प्यारे 304
110. मन मेरो गज जीव्हा मेरी काती
मप मप काटो जम की फांसी 305
111. मन मेरो गहो हरि नाम का मौला
तुझे न लागे ताता झोला 306
112. ओट लेहो हरि नाम रे मन, ओट लेहो हरि नाम 308
113. काहे मन तू डोलता, हरि मनसा पूर्ण हार 309
114. हरि सिमरत तेरी जाय बलाय,
सर्व कल्याण बसे मन आय 310
115. लख खुशियां पातशाहियां जे सतगुरु नदर करे 311
116. कीरत प्रभु की गाओ मेरी रसना 312
117. राम नाम गुण गाये लै मीता 313
118. जाचक नाम जाचै जाचै, सुख आधार सर्व के नायक 315
119. करहु किरपा गोपाल गोविन्दे 316
120. उचरहु राम नाम लखवारी, अमृत रस पीवहु प्रभु प्यारी 318
121. राम रंग कदे उतर न जाये, गुरपूरा जिस देइ बुझाए 319
122. भाई रे राम कहो चित लाये 320
123. हम धनवंत भागठ सच नाए 321
124. जो सुख प्रभु गोविंद की सेवा 322
125. एह धन मेरो हरि को नाऊ 324
126. झिम झिम बरसे अमृत धारा 325
127. मेरा वैध गुरु गोविन्दा 327
128. दुख भंजन तेरो नाम जी 328
129. प्रभु जीओ तू मेरो सुखदाता 329
130. शान्त भई गुरु गोविन्द पाई 331
131. मेरा सतगुरु रखवाला होआ 332
132. मिल मेरे गोविन्द अपना नाम देवहो 333

134.	कावन गुन प्रानपति मिलहु मेरी माई	335
135.	मन राम नामा बेधिअले	336
136.	गुरु पारस हम लोह	337
137.	साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी	338
138.	ऐसी प्रीति करो मन मेरे आठ पहर प्रभु जानहो मेरे	339
139.	चरण कमल की आस प्यारे	339
140.	घोली जी मैं घोली घोली घोल घुमाई लालना	340
141.	हउ बारि बारि जाउ गुरु गोपाल	341
142.	कोई आणि के मिलावे, मेरा प्रीतम प्यारा-प्यारा	342
143.	मैं गुरु देखणा जाई प्यारिया	343
144.	मन मेरे, मन मेरे, हरि के चरण रवीजे	344
145.	दर्शन दीजे खोल किवाड़ , खोल किवाड़	345
146.	दुई दुई लोचन पेखा, हउ हरि बिन अवर न देखा	346
147.	दरशन देख जीवा प्रभु तेरा, पूर्ण कर्म होवे प्रभु मेरा	347
148.	धन सुवेला जित हरि दर्शन करना	348
149.	गोविंद गोविंद गोविंद मई	349
150.	आउ जी तू आंउ हमारे, हरि जस श्रवण सुनावना	350
151.	मैं बउरी मेरा राम भर्तार	351
152.	पूरी आसा जीओ मेरी मनसा, मनसा मेरे राम पूरी आसा	352
153.	गाओ गाओ री दुलहनि मंगलाचारा	353
154.	साहनु देओ बधाइयां जी, मेरे घर राम आए	354
155.	हरि पहलड़ी लख परविरती करम द्रिडाइआ बलिराम जीओ	355
156.	भूले मार्ग जिनहि बताइआ	358
157.	चरण कमल संग लागी डोरी	359
158.	माई चरणा गुरु मीठे-मीठे	360

159.	माई प्रभु के चरण निहारो	361
160.	हरि हरि नाम अपार अमोली	362
161.	झिम-झिम बरसे अमृत धारा	363
162.	हरि हरि तेरा नाम है जी तेरा नाम है	365
163.	कबीर रोड़ा होय रोवाट का	366
164.	एकादशी निकट पेखो हरि राम	368
165.	नारायण नारायण नारायण, प्रानी नारायण सुधि ले	370
164क.	चरण कमल तेरे धोई धोई पीवां मेरे सतगुरु दीन दयाला	371
165क.	चांदना चांदन आजन प्रभु ओ अन्दर चांदना	373
166.	राख पिता प्रभु मेरे, मोहे निर्गुण सब गुण तेरे	375
167.	रे मन ऐसो कर सन्यासा	377
168.	किआ मांगऊ किछ थिर न रहाई	378
169.	राम रस पीआ रे पीआ राम रस पीआ रे पीआ	379
170.	राम सिमर राम सिमर एही तेरो काज है	381
171.	मन राम सिमर, मन राम सिमर, मन राम सिमर पछतायेगा	382
172.	ऐका टेक मेरे मनचीत	383
173.	ऊलाहनो मैं काहू न दीओ, मन मीठ तुहारो कीओ	384
174.	एका टेक मेरे मन चीत	385
175.	होली कीनी संत सेव	386
176.	दिन राती आराधो प्यारे, निमख न कीजे ढीला	387
177.	संता टेक तुम्हारी मेरे राम राई संता टेक तुम्हारी	388
178.	आपाहि मेल लहे हरि आपहि मेल लहे	389
179.	रतिया रतियां रतियां साई नाल मैं रतिआ	390
180.	पूता माता की आसीस	391
181.	आवे साहब चित मैनू तेरिआ भगता डिठियां	393
182.	जीवनो मैं जीवन पाइआ गुरमुख भाये भाये राम	394

183.	मेरे साहिबा साहिबा तेरे चोज विडाणा	395
184.	मिल मेरे प्रीतमा जीओ, तुध बिन खरी निमाणी	396
185.	ठाकुर तुझ बिन आहि न मोरा	397
186.	दइआ करहु बसहु मनि आई	398
187.	मेरा मन लागा है राम प्यारे	400
188.	हमारे एकै हरि हरि	401
189.	गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा	402
190.	गोविंद नाम मत वीसरे री माई	403
191.	बारह माह	406
192.	आनन्द साहब	413
193.	आरती	417

श्रीराम

हलो प्यारा हरे प्यारा खुशखबरी ?

अब आप के लिए शब्दामृत तैयार हो गया है।

बाणी गुरु, गुरु है बाणी, विच बाणी अमृत सारे

गुरबाणी कहै सेवक जन माने प्रत्यक्ष गुरु निस्तारे

। विद्या कंठ और माया गांठ होनी चाहिए

इसी भाव को सन्मुख रखते हुए, जो जो शब्द हम नित्य प्रति गाते हैं, वह सब एक ही जगह संकलित कर दिये गये हैं। आप नित्य प्रति इन को गा गा कर अपना जीवन सफल करें

" जिन गाइआ तिन पाइआ मान
नानक गाविये गुणी निधान "

गुरु साहब जी की आज्ञा को शिरोधार्य करके

बाणी खूब गाओ और कण्ठ करो
ज्यों २ शब्द गाओगे जैसा २ भाव शब्द में
होगा उस का वैसा ही प्रभाव हमारे हृदय पर
स्वयं ही हो जायेगा। जैसे हमने गाइआ
" उतर गइआ मेरे मन का संसा
जब तेरा दर्शन पाइआ "
तो सचमुच हमारे सारे भ्रम दूर होते जायेंगे
जीवन सरल हो जायेगा।

आप सब के आशीर्वाद से यह शब्दाञ्जलि
पूरी हो गया है, अभी आप यह सारे शब्द
याद करो फिर ज्यों २ और नये शब्द आते
जाएंगे साथ २ छपते रहेंगे

नोट — यह शब्द केवल गुरबाणी
(गुरु ग्रन्थ साहब जी के हैं)

सदा २ तुम्हारे ही

रामजी राम राम

श्रीराम
14.2.97

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुरी गोपाला

गुरुमन्त्र

इस के जाप करने से जीव पर सब प्रकार की कृपा हो जाती है भक्ति की शान्ति की, आनन्द की और संसार की भी कामनाए पूरी हो जाती हैं।

राम जी राम राम

"वाणी गुरु, गुरु है वाणी
विच वाणी अमृत सारे
गुरुवाणी कहै, सेवक जन माने
प्रत्यक्ष गुरु निस्तारे "

" डंडौत वन्दन अनिक बार
सर्व कला समरथ
डोलन ते राखहु प्रभु
नानक दे कर हथ "

"पहले प्रभु को सिमरिए
पीछे करिए काज
काज सवारेगे प्रभु
राखेगे तेरी लाज "

(भूमिका)

वाहिगुरु नाम जहाज है
चढ़े सो उतरे पार
जो श्रद्धा कर सेवदे
सतगुरु पार उतारणहार
कैसे ?

गुरु महाराज की बाणी में ऐसी शक्ति है कि उन का जैसा शब्द हम सब मिल कर, संतो के साथ गायेंगे, वैसा ही प्रभाव हमारे मन पर हो जायेगा। उदाहरणतयः जैसे हम यह शब्द नित्य प्रति गाते हैं ?

तुध बिन अवर न जाणा मेरे साहबा
गुण गावा नित तेरे

तो एक दिन ऐसी अवश्य ही हमारे मन की अवस्था अवश्य ही बन जायेगी कि

हम प्रभु के नाम के सिवा कुछ नहीं
जानना चाहें और प्रभु के गुण गाने में
ही हमें आनन्द आने लग जायेगा।
इस लिए इस किताब में हम थोड़े
से शब्द संकलित कर रहे हैं जिस से
हमारे जीवन की धारा कुछ संसार से
बदल कर प्रभु भक्ति की ओर हो
जाये, जो कि हमारे जीवन का परम लक्ष्य
है। क्योंकि
"जिना तिन्हा दा जीवणा।
जिन्हा खाया वधाया पेट"
आशा है आप भी इस अमृत सरोवर में
स्नान कर के जीवन मुक्ति का आनन्द
प्राप्त करेंगे।

रामजी राम राम
श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।"

शब्द (1)

प्रभु पापजन की अरदास
तूँ सचा साँई। तू सचा साँई 2

II

तूँ रखवाला सदा सदा
हउ तुध ध्याई हउ तुध ध्याई 2

III

जीअ जंत सब तेरिआ
तूँ रहिया समाई, तू रहया समाई 2

IV

जो दास तेरे की निंदा करे
तिस मार पचाई तिस मार पचाई 2

V

चिंता छड अचिंत रहो
नानक लग पाई 3

प्रभु पाप - - - -

व्याख्या शब्द (1)

साधक के जीवन में हमेशा नम्रता अरदास प्रार्थना होनी चाहिए, उसे सदैव अपने सतगुरु के आगे समर्पण कर देना चाहिए कि संसार मे उस का प्रभु के सिवा और कोई भी सच्चा रिश्ता नाता नही है। केवल वही उस का मालिक है

उसे दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि सर्वशक्तिमान। हरजगह हाजिर नाज़िर। ईश्वर उस का रक्षक है, केवल उसी के ही ध्यान मे रहना चाहिए

जितने भी परिवार के प्राणी हैं उन्हें भी अपने प्रभु के चरणों मे समर्पित कर देने चाहिए। क्योंकि वह सर्वज्ञ व्यापक है

साधक को किसी की भी निन्दा

नही करनी चाहिए। निन्दा की उनके भक्तो की, सन्तो की, महापुरषो की क्योंकि जो भी भक्तों की निंदा करता है उसे भगवान आप प्रगट हो कर मार देते है जैसे हिरण्यकश्यप को उसने प्रहलाद के साथ वैर किया उसे डुबा दिया।

महाराज जी फरमाते है। सेवक को कभी भी चिन्ता नही करनी चाहिए उस की जगह चिन्तन करना चाहिए और अपने सतगुरु जी की शरण मे ही रहना चाहिए

हमें प्रतिदिन की दिनचर्या मे यह सब चैक करते रहना है। क्योकि गीता मे भगवान कहते है कि हम आप ही अपने शत्रु है और आप भी ही मित्र है अगर हम ऊपर लिखित सारे नियमों को रोज पढ़ कर

अपने जीवन की स्वयं पड़ताल करते रहते हैं तो हम अपने आप ही अपने मित्र बन जायेंगे नहीं तो जीवन निष्फल हो जायेगा।

हमें नित्य प्रति इन सिद्धान्तो पर अवश्य विचार करना होगा

रामजीराम राम श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर घुरा गोपाला

शब्द (१)

(अरदास)

दोय कर जोड़ करु अरदास

तुध भावें तॉ आखे रास

II

कर किरपा अपनी भक्ति लाये

जन नानक प्रभु सदा ध्याये

III

कीता लोड़हि सो प्रभ होय

तुम बिन दूजा नाही कोय

दोय कर —.

IV

जो जन सेवे तिस पूरी काज

दास अपने की राखहु लाज

दोय --

V

तेरी शरण पूरी दयाला

तुम बिन कवन करे प्रतिपाला

दोय —

VI

जलथल महिअल रहया भरपूर

निकट वसे नाही प्रभु दूर

VII

जिसनु लोहे लहे सो लागे
ज्ञान रत्न अन्तर तिस जागे।
दोय - -

VIII

दुरमत जाये परमपद पाये
गुरु परसादि नाम ध्याये
दोय - -

व्याख्या शब्द 2
(अरदास)

हमें अपने सतगुरु से केवल भक्ति ही मांगनी चाहिए वह भी अरदास कर के। प्रार्थना कर के। दोनो हाथ जोड़ कर। हे प्रभो अगर मेरी विनती आप को स्वीकार हो तो आप कृपा कर मुझे अपने नाम मे ध्यान मे ही सदा रखिये। क्योंकि संसार की वस्तुए तो मैने कभी भी नही मागनी क्योंकि शेष सब नाशवान हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि अगर भक्ति मिल गई तो शेष सब कुछ स्वयं ही आ जायेगा।

इसलिए हे प्रभो! मुझे आप सदा अपनी भक्ति मे ही लगाये रखना। और भक्ति क्या है। सदा अपने सतगुरु के दास बने रहना। और निरंतर उन्ही का नाम जाप करते रहना। केवल सुबह शाम नही

क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है जो आप की ही सेवा करते है उन के सारे कार्य आप पूरा कर देते हो और अपने दास की सदा ही लाज रखते हो। जैसे आपने मीरा बाई की, द्रोपदी की नामदेव जी की रखी।

मै सदा आप की शरण मे हूँ कि क्योंकि आप पूर्ण हो। आप दयालु। आप के बिना मेरी प्रतिपालना करने वाला संसार मे और कोई भी नही है। शेष संसारी लोग तो पालना कर सकते हैं। प्रतिपालना नही करते वह केवल शरीर की जरूरते पूरी करते है। आत्मा का भोजन तो केवल सतगुरु दे सकते हैं वह है नाम दान।

मुझे ऐसी दृष्टि देना कि मै हर समय, हर जगह आप को देख सकूं। आप को कभी भी अपने से दूर न समझूं। ऐसा होने से मैं पाप कभी नही करूंगा

यह तो तभी हो सकता है जब आप अपनी कृपा से मेरे हृदय मे ज्ञान जागृत कर देंगे। ऐसा होने से मेरी दुर्बुद्धि सारी समाप्त हो जायेगी तब मैं परमपद को प्राप्त कर सकूंगा

इस लिए सतगुरु से कृपा याचना तो अवश्य ही करनी चाहिए

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दुर्गा जोवाला

राम श्रीराम राम
श्रीराम

शब्द 3

इहै मनोरथ मेरा प्रभु जी

" " "

II

किरपा निधान दयाल मोहे दीजो

कर सतन का चेरी

इहै मनोरथ —

III

प्रात: काल लागहु जन चरणी

निशि बासुर दर्शन पावउ

तन मन अरपि करउ जन सेवा

रसना हरि गुण गाउ

इहै मनोरथ —

IV

सास स्वास सिमरउ प्रभु अपना

संत संग नित रहिये

एक आधार नाम धन मोरा

आनन्द नानक इह लहिये

इहै मनोरथ —

व्याख्या शब्द 3

संसार में ज्यों ही जीव आत्मा है उस में इच्छाएं शुरु हो जाती हैं। बचपन में पढ़ाई की इच्छा जवानी में शादी बाल बच्चों की इच्छा। बुढ़ापे में बच्चों द्वारा सुख लेने की इच्छा। परन्तु जब जीव सतगुरु शरण में आ जाता है तो वह उस की बुद्धि को बदल देते हैं उस की केवल एक ही इच्छा रह जाती है ? कि वह हर समय नाम ध्यान में रहे और अपने सतगुरु की तन मन धन से सेवा करें। इस के लिए वह हर समय यही याचना करता है हे प्रभो मुझे प्रातः जल्दी उठा देना और सब से पहले मैं जा कर अपने सतगुरु के दर्शन करुं उन के चरणों में नमस्कार करुं फिर उन के साथ बैठ कर गुरुवाणी गाऊं और फिर रात दिन उन्हीं का दर्शन करता रहूं मुख से, मन से हरि के गुण ही गाऊं

संसार में केवल अपने सतगुरु को ही अपना समझूं उन्हीं का निरन्तर संग करूं, हर श्वास में सिमरण करूँ।

सच्चा धन मैं केवल नाम सिमरण ही समझूं, यही मेरे जीवन में आनन्द देने वाला है शेष तो सब स्वार्थ ही स्वार्थ है क्योंकि शंकर भगवान ने भी रामायण में उमा से कहा ?

उमा कहुं मैं अनुभव अपना
सत्य हरि भजन, जगत सब सपना

बाणी में भी गुरु साहब ने कहा
"ज्यों सपना रैनाई"

रामजी राम राम श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूरन गोपाला"

शब्द 4

मागू राम ते इक दान

मांगउ राम ते इक दान 2

सगल मनोरथ पूरी होवे। सिमरउ तुम्हरा नाम

मागउ राम ते - - -

II

चरण तुम्हारे हृदय वासे

संतन का संग पावउ

शोक अगिन मे मन न व्यापे

आठ पहर गुण गाउ

मागू राम ते - -

III

स्वस्थ अवस्था हर की सेवा

मध्य अन्त प्रभु जापणा

नानक रंग लगा परमेश्वर

बहुड़ जनम न छापणा

मागू - - -

शब्द ध्यान

जब जीव पर प्रभु की पूरी कृपा हो जाती है तो वह अपने भगवान से केवल सिमरण दान रूप में मांगता है (क्योंकि दान एक बार देने से वापिस नहीं लिया जाता) वह समय अपने सतगुरु से यही मांगता है कि उसे ऐसा नाम ध्यान दे कि एक क्षण के लिए भी उसे नाम न भूलें

क्योंकि उसे विश्वास होता है कि अगर उसे भक्ति प्राप्त हो गई तो शेष इच्छाएं सारी अपने आप ही पूरी हो जायेगी और एक अवस्था ऐसी भी हो जायेगी कि कोई भी इच्छा संसारिक उसे नहीं रहेगी।

वह अपने भगवान से यही मांगता है कि शरीर भी स्वस्थ रहे और मन भी स्वस्थ रहे क्योंकि वेदों में भी यही लिखा है कि

" शरीरस्य खलु धर्म साधनम् "

इस लिए ऐसी कृपा करना कि, मैं मरण से ले कर अन्त तक सतगुरु के दिये मन्त्र का जाप करता रहूं ताकि मुझे बार 2 मरना और जन्मना न पड़े

रामजी राम राम श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला

तेरी ओर पुरी गोपाला

शब्द 5

प्रभु मेरे प्रीतम प्राण प्यारे

प्रेम भगति अपनो नाम दीजे

दयाल अनुग्रह धारे

प्रभु मेरे — —

II

सिमरऊ चरण तुम्हारे प्रीतम

हृदय तुम्हारी आसा

संत जना पै करऊ बेनती

मन दर्शन की प्यासा

प्रभु मेरे —

III

बिछरत मरन जीवन हर मिलते

जन को दर्शन दीजे

नाम आधार जीवन धन नानक

प्रभु मेरे किरपा कीजे

प्रभु मेरे — —

शब्द ५ व्याख्या

संसार में लोगो की बड़ी चीजे प्राणो से भी प्यारी होती हैं किसी को धन प्राणो से भी प्यारा लगता है किसी को परिवार प्राणो से भी प्यारा लगता है इसी प्रकार कई संसार की चीजे

जब जीव पर सतगुरु कृपा करते है तो उसे भगवान प्राणो से प्यारे लगते हैं वह हर समय उन से प्रेम भक्ति की याचना करता है भक्ति मे और प्रेम भक्ति मे बड़ा अन्तर है भक्ति तो सभी करते हैं सवेरे थोड़ा पाठ किया रात को थोड़ी प्रार्थना की और शेष सारा दिन विषयविकारों मे बिता दिया। परन्तु प्रेमभक्ति मे तो प्रेमी को अपने प्रभु से एक तिल का बिछोड़ा भी सहन नही होता। हर समय उन्ही को याद मे रहता है, उसे संसार का कोई पदार्थ अपनी ओर आकर्षित नही

करता। जब वह सिमरण में होता है तो उसे ऐसा लगता है कि वह जी रहा है परन्तु जब उसे सतगुरु से बिछोड़ा होता है या उसे नाम भूल जाता है उसे ऐसा लगता है कि वह मर गया है। ऐसी अवस्था ब्रह्मज्ञानी की होती है

ब्रह्मज्ञानी के एको रंग
ब्रह्मज्ञानी के सदा प्रभु संग
और फिर
" ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर "

ऐसी अवस्था प्राप्त करने के लिए हमें नित्य प्रति भगवान से याचना करनी होगी ताकि अन्त समय आने तक हम उन्ही का रूप बन जाये

राधेश्याम राम श्रीराम

श्रीराम

शब्द 6

कवन संजोग मिलहुं प्रभु अपने ?
पल पल निमख सदा हर जपने
कवन - - -

II

चरण कमल प्रभु के नित ध्यावहु
कवन सुमति जित प्रीतम पावउ
कवन - - -

III

ऐसी किरपा करहु प्रभु मेरे
हर नानक बिसर न काहू बेरे
कवन - - -

व्याख्या शब्द 6

संसार में जिस जीव पर सतगुरु अपनी कृपा करते हैं, उन के मन में एक प्रश्न उठता है मै अपने प्रभु को किस प्रकार मिलूं, कैसे उन के दर्शन हों ? फिर अन्दर से सतगुरु उन्हें बताते हैं कि जो पल पल निमख २ सिमरन करता है केवल उसे ही प्रभु मिल सकते हैं

फिर वह सतगुरु से अरदास करते है ऐ मेरे राम जी आप कृपा करो कि मै इस असार संसार में अपने रामजी के (सतगुरु) के चरण कमलों का निरन्तर ध्यान करुं अर्थात उन के दिये गुरु मन्त्र का निरन्तर जाप करता रहुँ क्योंकि प्रभु प्राप्ति केवल जीव को सुमति प्राप्त करने से ही हो सकती हैं। सुमति वह है जिस बुद्धि में केवल शुभ कर्म (तप यज्ञ दान, जप) आदि रहते हैं। या निरन्तर कृपा मांगने से कि हम आप का नाम ध्यान कभी भी न भूले। बस केवल यही आसान मार्ग है प्रभु प्राप्ति का, इसी लिए हम नित्य, प्रति कृपा मांगते रहते हैं कि हम आप का नाम ध्यान जप कभी भी न भूले।

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला
रामजी राम राम
श्रीराम

श्रीराम

शब्द 1

सेवक की अरदास प्यारे जप जीवो प्रभु चरण तुम

II

तूं बेअंत को विरला जाणे

गुरु परसादि को शब्द पछाणे

सेवक - - -

III

दइआल पुरख मेरे प्रभु दाते

जिसे जनावहु तिन्हे तुम जाते

सेवक - - -

IV

सदा २ जाई बलिहारि।

इत उत देखु ओर तुम्हारी

सेवक - - -

V

मोहे निर्गुण गुण किछु न जाता

नानक साधू देख मन राता

सेवक - -

व्याख्या शब्द 1

प्रभु प्राप्ति के लिए सब से पहला गुण है

नम्रता अपने आप को सदा सतगुरु का

दास की अवस्था में रहें और केवल यही प्रार्थना करें कि उस का सारा जीवन नाम जप में सिमरण में सतसंग में बीते। क्योंकि परमात्मा बेअंत है जिसे वेद में नेति नेति कह कर पुकारते है (न इति न इति) इस लिए हमारा जप भी न इति हो, जीवन के अन्तिम श्वास तक जप चलता रहे और अगले जन्म के लिए भी केवल भक्ति ही मांगें। जैसा कि रामायण ने हमें इशारा दिया है

दोहा

वार वार वर मांगहु हर्ष देहु श्री रंग
पद सरोज अनपायिनि भक्ति सदा सतसंग

और

अर्थ न धर्म न काम रुचि
गति न चाहू निर्वाण
जन्म जन्म पद कमल रति
यह वरदान मोहि आन

प्रभु तो दाता है उन से जो मांगो नही दे देते है
वह दयालु भी बहुत है, जिस पर वह कृपा करते
है, उसे अपना आप प्रकट कर के दिखा देते है
फिर वह जीव संसार के पदार्थो पर बलिहार
नही जाता वह अपना स्वर्तव अपने सतगुरु
पर वार देता है और सदा अपने प्रभु के
आश्रित रहता है। उसे संसार के झूठे आश्रय नही
चाहिए। क्योंकि शेष सब तो नश्वर है। सेवक
सदा अपने आप को निर्गुण समझता है
और महाराज जी फरमाते है कि यह केवल
संतो की संगत करने से ही हमारा मन
प्रभु चरणों में तल्लीन रहता है
" माधो सत संगति करे सो तरिआ "

राधास्वामी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
त्री आर पुरी जावाल

शब्द 8

विसर नाही ऐ वड दाते, कर किरपा भगतन साराते
विसर नाही ऐ वड दाते

II

दिनास रैणा जीओ तुध ध्याई
एह दान मोहे करना जीओ। विसर नाही - -

III

माटी अंधी सुरत समाई
सब किछ दीआ भलिआ थाई
अनद बिनोद चोज तमाशे
तुध भावे सो होणा जीओ। विसर नाही - -

IV

जिस दा दित्ता सब किछ लहणा
छतीह अमृत भोजन खाणा
सेज सुखाली शीतल पवना
सहज केल रंग करना जीओ। विसर नाही

V

सा मात दीजे जित विसरे नाही

व्याख्या शब्द 8

हमें अपने सत्गुरु से केवल यही अरदास करनी चाहिए कि ए प्रभो। आप ही संसार में सब से बड़े दाता हो आप मुझे सदा याद आते रहो। यह भी तभी हो सकता है जब हम संतों के संग निरन्तर रहते हैं क्योंकि संसारी लोग कभी भी हमें प्रभु को याद नहीं करवाते।

हमें दान के रूप में ह अपने भगवान से यही मांगना है कि रात दिन। हम केवल उन्हीं के ध्यान में रहें। क्योंकि संसार को ध्यान करने से तो कुछ भी हाथ नहीं आता। संसार सारा बड़ा स्वार्थी है।

भगवान इस शरीर को बनाया फिर इस में अपनी ज्योति रखी, फिर जो भी इस शरीर को चाहिए वह सब कुछ दिआ, संसार के ऐश्वर्य पदार्थ, खान आदि दिये। परन्तु इन मूर्खों को

वही भोग सकता है जो समर्पण भाव मे रहता है
साधक सतगुरु का हुक्म मानता है तो संसार के पदार्थ होते हुए भी त्यागी ही रहता है

सतगुरु हमें बार 2 समझाते है, कि जिसने तुम्हे छत्तीस प्रकार के भोजन दिये। घर मे सब ऐश्वर्य दिया। इन का सहज अवस्था मे तभी प्रयोग कर सकता है जब तेरी सहज अवस्था सिमरण ध्यान मे भी हो जाये।

इस लिए हम बार 2 रामजी से सुमति मांगनी है। जिस बुद्धि से हम कभी भी दाता को न भूले हर श्वास मे सिमरण करने का अभ्यास करें और रामजी के चरण कमलो का आश्रय ले

"जहां सुमति तह सम्पति नाना"

रामजीरामराम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
और पूरी गोपाला

शब्द १

भक्तां की टेक तूं, सतां की ओट तूं

सच्चा सिरजनहारा 2

II

सतगुरु पास बेनंतिआ मिले नाम आधारा

तुठा सच्चा पातशाह, ताप गइआ संसारा

भक्तां की - -

III

सच तेरी स- ग्री सच तेरा दरबारा

सच तेरे खाजिनिआ सच तेरा पासारा

भक्तां - - -

IV

तेरा रूप अगम है अनूप तेरा दरसारा

हउ कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन हरि नाम प्यारा

V

भक्तां - -

सभे इच्छा पूरिआ जां पाइआ अगम अपारा

गुरुनानक मिलिआ पारब्रहम तेरिआ चरणा तो बलिहारा

भक्तां की - - -

व्याख्या शब्द ९

संसार मे जो प्राणी भगवान को टेक लेता है वह भक्तों की श्रेणी मे आ जाता है और जो सदा अपने भगवान के आश्रित हो जाता है वह संतो की श्रेणी मे आ जाता है। भगवान को भक्त तथा संत ही प्यारे हैं। शेष सब प्राणी तो कर्मों के भोग, भोग कर संसार से ऐसे ही चले जाते हैं

इस लिए हमें सतगुरु अवश्य धारण करना चाहिए और उन से सदा विनती करनी चाहिए कि वह अपनी कृपा से हमें नाम का आश्रय दें।

जब हमारा मन नाम मे लग जाता है तो यह सारा संसार हमें सच स्वरूप दिखाई देता है सब राम ही राम नज़र आता है।

और जब हम सतगुरु की कृपा से नाम मे रत हो कर अपने भगवान को प्राप्त कर लेते हैं तो हमारी सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं अर्थात हमारे

मन मे ससारिक कोई इच्छा रहती ही नही ।

भगवान का रूप तो अगम है पहुच से बाहर है परन्तु उन के संतो के दर्शन करते मात्र से उन पर अपना स्वार्थ न्योछावर करने से ही हम ऐसा प्रतीत होता है कि हम स्वयं भगवान ही मिल गये हैं क्योकि रामायण ने भी इस की पुष्टि की है

" मोरे मन प्रभु अस विश्वासा
राम ते अधिक राम का दासा "

हम दास बनता हैं केवल नाम दान मांगने हैं

रामजीराम राम
श्रीराम
करबद्धा प्रभु दीनदयाला।
तेरीओर दुर्गा गोपाला।
29-8-96

शब्द 10

तुम शरणाई आया ठाकुर
तुम शरणाई आया 2

II

उतर गया मेरे मन का संशय
जब तेरा दरशन पाया ठाकुर
जब तेरा दरशन पाया
तुम - - -

III

अनबोलत मेरी बिरथा जानी
अपना नाम जपाया
सतगुरु अपना नाम जपाया
तुम - - -

IV

दुख नाठे सुख सहज समाये
अनद 2 गुण गाया ठाकुर
अनद अनद गुण गाया
तुम - - -

V

बाँह पकड़ कढ लीन्हे अपने
गृह अंध कूप ते माया ठाकुर

गृह अन्ध कूप ते माया
तुम - - -

VI

कहे नानक गुरु बंधन काटे
बिछुरत आन मिलाया ठाकुर
बिछुरत आन मिलाया
तुम शरणाई - - -

व्याख्या शब्द 10

गीता मे भगवान ने हम आदेश दिया
यह त्रिगुण दैवी घोर माया
अगम और अपार है
आता शरण मेरी नही
जाता सहज में पार है
गीता ने तो केवल इशारा दिया परन्तु जब
सतगुरु हम मिले तो उन्होने हम ऐसे बोलना
सिखाया कि आप सोर मिल कर कहो कि
अब हम ठाकुर जी की शरण आये है

शरणागति की पहली शर्त यही है कि हमारे मन में किसी प्रकार का भी संशय नहीं होना चाहिए। हम यह पूर्ण निश्चय होना चाहिए कि वह समरथ है अन्तरयामी है वह हमारे मन की बात बिना बोले ही सब जान लेते हैं और अन्तर से हर समय हमें नाम सिमरण की प्रेरणा देते रहते हैं।

जब उन्होंने अपनी कृपा की हमारा नाम सहज अवस्था में अन्तर में चलने लगा तो संसार के सारे दुख दूर हो गये। हम संसार में आनन्द से रहने लगे।

इस का परिणाम यह हुआ कि यह सांसारिक माया से हम बिलकुल छूट गये उन्होंने अपनी कृपा से हमें अपना हाथ दे कर निकाल लिया।

जब यह सांसारिक बन्धन सब खुल गये तो हमारी जीवात्मा जीते जी ही अन्दर भगवान में समा गई

शब्द ॥

प्रभु जी तू मेरे प्राण आधारे 2

नमस्कार डंडौत वन्दना, अनिक बार जाऊं वारे

प्रभुजी - - - -

II

ऊठत बैठत सोवत जागत

एह मन तुमहि चितारे प्रभुजी - - - -

III

सुख दुख इस मन की बृथा

तुम ही आगे सारे प्रभुजी - - - -

IV

तू मेरी ओट बल बुद्धि धन तुम्ही

तुम्ही मेरे परिवारे प्रभुजी - - .

V

जो तुम करो सोई भल हमरे

पेखि नानक सुख चरनारे प्रभुजी - -

व्याख्या शब्द ॥

बिन तुध होर जे मगणा

सिर दुखां दे दुख

दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख

अपने सतगुरु की शिक्षा अनुसार हमें भगवान से केवल नाम की ही याचना करनी चाहिए और वह नाम कैसा ? जो कि उठते बैठते सोते जागते हमारे अन्दर सहज अवस्था में चलता हुआ अनुभव हो। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है, इस के लिए हमें अरदास करनी है, वह भी सतगुरु जी की बाणी द्वारा

हमने नित्य प्रति प्रार्थना करनी है, हे सतगुरु मैं उठते बैठते सोते जागते हर समय आपका ही नाम सिमरन करूँ, क्योंकि जिस का हम नाम जाप करते हैं हमारी सारी जिम्मेवारी उन की हो जाती है

परन्तु ऐसी अवस्था प्राप्त करने के लिए हमें सर्वस्व समर्पण करना होता है, हमें अपनी बुद्धि भी

नहीं रखनी, अपना बल भी नहीं रखना, कोई दूसरा आश्रय भी नहीं लेना, हर समय एक पर ही आश्रित रहना।

चाहे जीवन मे सुख आये या दुख आये, हमारे नाम जाप में बिल्कुल भी कमी न आवे।

इस प्रकार की अगर कृपा हो जाय तो हमारी अवस्था इतनी अच्छी हो जायेगी कि जो भी परिस्थिति होगी उस मे हम सदैव सन्तुष्ट रहेंगे, हम मान अपमान निन्दा स्तुति, संयोग वियोग सब सम हो जायेगे तभी हम अन्दर के आनन्द का अनुभव कर सकते हैं।

इसलिए हमें सदैव अपने सतगुरु से यही प्रार्थना करनी है हर पल हर क्षण, हम उन का दिया मन्त्र जाप हर करते रहे फिर तो जीवन में आनन्द ही आनन्द है

रामजीराम राम
श्रीराम

शब्द 12

तुम तो पावन हर दयाल 2
सुन्दर सुघर वेअंत पिता प्रभु
आप हो हो कृपाल
हरि तुम तो ---

II

नेत्र पुनीत भये दरस पेख
माथे परऊ रवाल
हर तुम तो --

III

रस रस गुण गावऊ ठाकुर के
मेरे हृदय बसो गोपाल
हर तुम तो -

IV

महा आनन्द मंगल रूप तुम्हरे
वचन अनूप रसाल
हर तुम तो -

V

हृदय चरण शब्द सतगुरु के
नानक बांधिओ पाल
हर तुम तो --

व्याख्या शब्द

अपने प्रियतम गोपाल जी से हमारी बातचीत हो रही है। हे गोपाल जी। हे रामजी! आप ही मेरे रक्षक हो। आप इतने सुन्दर हो आप की महिमा बड़ी बेअंत है। आप सदा मेरे पर अपनी कृपा रखना

आप के दर्शन करने मात्र से मेरे नेत्र पवित्र हो जाते है और आप की चरण रज माथे पर लगने से मेरे भाग्य उदय हो जाते हैं। संसारी विषयों को देखने से हमारी आंखें दूषित हो जाती हैं सारे दृश्य हमारे अन्दर मन मे जमा हो जाते है जिससे ध्यान नही लग सकता।

हे गोपाल जी आप ही सदा मेरे हृदय में रहो मै केवल आप के ही गुण गाने मे रम लूं (जिसको भजन में आनन्द आने लगता है उसे फिर दूसरे विषयों के सब रस फीके लगते है)

आप की वाणी बड़ी ही रसमयी है। आप का रूप सदा आनन्द देने वाला है। आप का मन्त्र रूपी चरण सदा मेरे हृदय मे चल रहा है जिस से मैं बहुत ही आनन्द प्राप्त कर रही हूं गुरु साहिब अपनी आत्मा रूपी स्त्री के द्वारा भगवान से यह सारी बाते कर रहे हैं कहते है कि अब तो मै लाईन मे खड़ा हूं। अन्तर से वह एकाकार थे, यह तो केवल हमारी आत्माओ को जोड़ने के लिए यह सारी वाणी बोली जा रही है कि हम ऐसे अपने प्रियतम से बाते करनी चाहिए।

रामजीराम राम श्रीराम
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर दृष्टि गोपाला।"

13

शब्द

दास तेरे की बेनती 2

हृदय कर प्रगास 2

II

तुम्हरी कृपा ते पारब्रह्म

मेरे सब दोखन को नास 2

III

चरण कमल को आसरा 2

प्रभ पूर्ण गुरा तास 2

दास तेरे — —

IV

कीरतन नाम सिमरत रहउ

जब लग घट में साम 2

दास तेरे —.

V

मात पिता बन्धप तू ही

तू ही सर्व निवास 2

दास तेरे

VI

नानक प्रभ शरणागति

जो का निरमल जास 2

दास तेरे

हमें अपने सतगुरु के सामने हमेशा दास बने रहना है, सदा बेनतिआ ही करनी है हुक्म नही चलाना, और प्रार्थना में अन्तर प्रकाश का ही विषय होना चाहिए।

हमें भगवान पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि उन की कृपा से हमारे सब दुखों का नाश हो जाता है। मेरे प्रभु पूर्ण है, हम केवल उन्ही के चरणों का आसरा है अर्थात केवल उन्ही का शब्द ही हमारे अन्दर चलना चाहिए और दूसरे संसारिक विकार नही आने चाहिए।

मेरे प्रभु तो ऐसे मेरे माता पिता है जो सर्व व्यापक है हर समय मेरी रक्षा करते हैं संसारिक माता पिता तो सदा साथ नही रहते मै सदा अपने सतगुरु की शरण मे रहता हु क्योंकि उन का यश तो हमेशा २ निमल ही रहेगा

शब्द 14

ठाकुर जो सिमरा तूँ ताँही २

कर किरपा सर्व प्रतिपालक, प्रभु को सदा सलांही

II ठाकुर - -

तूँ दाता जीअ सभना का

वसो मेरे मन माँही

III ठाकुर - - - .

IV चरण कमल हृदय माँही समाय, तह भरम अंधेरा नाही

सास सास तेरा नाम समारउ

तुमही को प्रभु आँही

ठाकुर - - -

V

नानक टेक भई करते की

होर आस बिडाणी लाही

ठाकुर जो - - .

व्याख्या शब्द 14

जैसा कि रामायण तथा गीता में भी यही दर्शाया है कि परमात्मा सर्वव्यापक है

प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना

(रामायण)

इस एक मेरे अंश से व्यापा हुआ संसार है
(गीता)
ठीक इसी प्रकार गुरुबाणी मे भी सतगुरु देव
हमे ऐसे समझा रहे हैं कि ईश्वर सर्व व्यापक है
जहां भी आप उसे याद करेंगे वही प्रकट हो जायेंगे
जहां उन के चरण कमल (नाम शब्द) बस जाते हैं वहां
सब भ्रम आदि दूर हो जाते हैं। इस लिए हमे सदा
अपने प्रभु से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हम
निरन्तर आप को ही याद करें। संसार के नश्वर
पदार्थो का ध्यान छोड़ दो क्योंकि भगवान तो
सभी की प्रतिपालना करते हैं।

हर श्वास में केवल उन्ही को ही याद करें
और केवल उन्ही की ही चाहना करें। महाराज
फरमाते है कि मैने तो शेष सब अन्य आधार
समाप्त कर दी है। केवल एक अपने प्रभु की
टेक (आसरा) रखी है आप भी अपना जीवन
ऐसा बनाओ राम जी राम राम श्रीराम

शब्द 15

कर किरपा किरपाल आपे बख्श लै

सदा सदा जपी तेरा नाम

सतगुरु पाये पै

कर किरपा - - - -

II

मन तन अंतर वसि। दुखां नास होय

हथ दे आपे रख। व्यापै भउ न कोय

कर किरपा - -

III

गुण गावां दिन रैण एते कम लाय

संत जनां के संग हउमै रोग जाय

कर किरपा .

IV

सरब निरंतर खसम एको रव रहया।

गुरु परसादि सच। सचो सच लहया

कर किरपा - .

V

दया करो दयाल अपनी ~~सिफत~~ सिफत दे

दरशन देख निहाल नानक प्रीति ए

कर किरपा - - .

"श्रीराम" 1.9.96

शब्द 15

हमारे अन्दर निरन्तर नाम क्यों नही चलता?
क्योंकि हमारे मन में माया निर्मित कई अवगुण आ जाते हैं इस लिए हमें नित्य प्रति अपने सतगुरु से क्षमा याचना करनी पड़ती हैं कि हे प्रभो आप कृपा करो, मेरे सारे अवगुण नाश कर दो मेरा हृदय खाली कर दो ताकि मेरे मन में केवल आप का ही नाम हो ।

मेरे मन में केवल आप का ही ध्यान निरन्तर रहे और मेरा मुख केवल आप का ही गुण गाण करे। इस से मेरे सारे दुखों का नाश हो जायेगा आप सदा कृपा भरा हाथ मेरे सिर पर रखें ताकि मुझे किसी प्रकार का डर न लगे, क्योंकि ब्रह्मज्ञानी का तो यही लक्षण है

भय काहू को देत नही
नही भय मानत आन

सारा संसार तो किसी न किसी कार्य मे लगा हुआ है मुझे तो आप अपने कार्य मे लगा दो अर्थात सेवा सिमरण सतसंग दे दो। साथ २ सतगुरु का संग नित्य प्रति दे देना जिससे मेरे भी कभी भी अहंता का रोग न आय।।

जब मै निरन्तर आप के ही नाम मे मस्त रहुंगा तो मुझे हरसमय, हरजगह, हरपल केवल आप ही नजर आयेगो इस प्रकार सतगुरु की कृपा से हम इस असार संसार मे सत्य को प्राप्त कर लेगे।

बार २ यही प्रार्थना करते है दयामय भगवन अपनी कृपा कर के अपना नाम जपाओ। मह और आप का दर्शन कर के मुझे आनन्द आये यही तो आप का प्यार है। बस ऐसी कृपा बनाये रखना।

राधास्वामी राम राम
श्रीराम
कर क्षमा प्रभु दीनदयाला
करो आस पूरी जीवाला

शब्द 16

तुम करो दया, करो दया, करो दया, मेरे साईं,
ऐसी मति दीजे मेरे ठाकुर सदा सदा तुध धयाईं

II तुम करो - - -

पानी पावां पीसऊ संत आगे, गुरा गोबिन्द जस गाईं

III तुम करो - -

सास सास मन नाम सम्भाले, एह बिस्राम निध पाईं

IV तुम करो -

तुमहरी कृपा ते मोह मान छूटे, बिसर जाये भरमाईं

V तुम करो - -

अनद रूप रविओ सभ मधे, जत कत पेखऊ जाईं

VI तुम करो - -

तुम दयाल कृपाल कृपानिधि, पतित पावन गोसाईं

VII तुम करो - - -

कोटि सुख आनन्द राज पाये, मुख ते निमख बोलाईं

तुम करो - - -

VIII

जाप ताप भगति सा पूरी, जो प्रभ के मन भाई

तुम करो ---

IX

नाम जपत तृपताय सब भ्रमी हैं, नानक तृपत अघाई

तुम करो ---

व्याख्या शब्द 16

इस माया के संसार में रह कर हर समय हम भगवान के ध्यान में ही रहें, यह बड़ा कठिन है। इस लिए हमें नित्य प्रति भगवान से दया कृपा मांगनी पड़ती है कि हे प्रभो! मेरी ऐसी बुद्धि बना दो कि मैं निरन्तर आप के ही ध्यान में मस्त रहूं, क्योंकि हम संसार में आये तो केवल प्रभु प्राप्ति के लिए हैं परन्तु इन नाशवान पदार्थ में फंस कर हमारी बुद्धि विकारात्मक हो गई है और हम अपना लक्ष्य भूल गये हैं, फिर सतगुरु हमें सारे रहस्य बताते हैं कि तुम्हें संतो की सेवा करनी पड़ेगी उन के लिए

पानी भरना उन के लिए आटा पीसना। इस का अर्थ है संतो की सतगुरु की याद में रोना और अपने आप को मिटा कर आटे की तरह पिस जाना। तभी हम गोविन्द के गुण गा सकते हैं। हर श्वास में अगर हम भगवत नाम या गुरु मन्त्र का जाप करते हैं तभी हमारे मन को विश्राम शान्ति मिल सकती है। इस के लिए हमने अपने सतगुरु की कृपा मांगनी होगी जिससे मोह और अहंकार छूट जायें और मन में कोई भी संशय न आये। भगवान अपनी कृपा से हमें ऐसी मूर्ति दृष्टि दे दें। कि हर जगह हम अपना प्यारा ही दिखाई दे जैसा कि रामायण ने इशारा दिया ?

"जड़ चेतन जग जीव जत
सदा रामभय जान"

तभी हम जीवन में आनन्द ले सकते हैं

ऐसे हमारे भगवान कृपालु है दयालु है और पतितों को पावन करने वाले हैं। ऐसे रहस्य हम सतगुरु से ही प्राप्त होते हैं कि थोड़ी देर भी गुरु-मन्त्र का जाप करने से हम करोड़ों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो सकते हैं। वही भक्ति पूरी है जो मेरे राम जी के मन को भा जाय क्योंकि भगवान को तो केवल निष्काम भक्ति ही अच्छी लगती है

जो निरन्तर गुरु मन्त्र का जाप करता रहता है उस की सांसारिक सारी तृष्णाएं समाप्त हो जाती है और वह सदा सन्तुष्ट रहता है वही संसार मे सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है

इस लिए हम सदा यही मांगना चाहिए कि हमारा सदैव बुद्धि योग आप के साथ हो जो कि हमारे जीवन का लक्ष्य है

रामश्रीरामराम श्रीराम

शब्द 17

राम गुसइआं जीअ के जीवन।
मोहे न बिसारो मैं जन तेरा 2
" " " " " "
मोहे न बिसारो मैं जन तेरा

राम गुसइयां ---

II

मेरी संगति पोच, सोच दिन राती
मेरा कर्म कुटिलता, जन्म कुभांति।

राम गुसइयां

III

मेरी हरहु विपत्ति जन करो सुभाई
चरण न छांडू शरीर कलि जाई

राम गुसइयां

IV

कहि रविदास परऊं तेरी सांभा
बेग मिलहु जन करो न बिलम्बा।

राम गुसइयां

हमे हमेशा अपने इष्ट देव से यह प्रार्थना करनी है कि, वह हमें न भूलें। क्योंकि हम तो मायावी जीव हैं। यह माया हमें भगवान की ओर बढ़ने नही देती। अगर बड़ा छोटे का हाथ पकड़ लेता हैं तो छोटा नही छुड़ा सकता। इस लिए इस शब्द में प्रार्थना की जा रही हैं। हे रामजी आप तो गोसाई हो मेरे जीवन दाता हो आप मुझ भूल न जाना।

मेरी तो संगत भी माया की है और दिन रात मै तो माया की ही सोच मे रहता हूं मेरा जन्म तथा कर्म दोनों ही नीच हैं (परन्तु सतगुरु ने यह साबित कर दिया कि भगवन् जाती पांति। गुण। अवगुण नही देखते। जो भी शरण में आ जाये उस का उद्धार कर देते हैं)

परन्तु शरण में आने वाला अपने प्राणो की

बाजी लगा कर आये उसे अपने सतगुरु नेही छोड़ने चाहे उसे कोई मारने की भी धमकी दे दो। इस प्रकार के भक्त तो बहुत कम ही होते हैं रविदास जी जैसे जो प्रभु को दर्शन देने के लिए मजबूर कर देते हैं और जल्दी ही दर्शन प्राप्त कर भी लेते हैं।

हों भी इसी प्रकार भक्ति में तल्लय रहना है संसार की कोई भी वस्तु अपने प्यारे राम जी से मूल्यवान नही सोचनी है जैसा कि रामायण ने भी संकेत दिया है

राम उपासक जे जग मांही
एही सम प्रिय तिन के कछु नाही

जा को रस हरि रस है आइओ।
सो अनरस नांही लपटाइओ

रामजी राम राम
श्रीराम

शब्द 18

तुम बिन किआ न होए ठाकुर तुम बिन किआ न होए

II

चित्त चितऊ हरि रसन नामातऊ
निरखऊ तुम्हरी ओर 2

तुम बिन किआ - - .

III

कर किरपा अपना दरस दीजे
जस गावऊ निसि भोर 2

तुम बिन - -

IV

केस संग दास पग झारऊ
इहै मनोरथ मोर 2

तुम बिन - .

V

दइआल पुरख सर्व के ठाकुर
विनय करूं कर जोड़ 2

तुम बिन -

VI

नाम जपे नानक दास तुम्हरे
उधरसि आवें फोर 2

तुम बिन -

शब्द 18 व्याख्या

जैसा कि गीता में भगवान श्री कृष्ण अनन्यभक्ति की व्याख्या करते हैं कि जिस के मन में केवल मै ही रह गया हूं और संसार की कोई भी कामना नही रही वही भक्त मुझे अतिशय प्रिय है। वही भक्ति इस शब्द के द्वारा प्रकट की गई है। हमें सदा अपने राम जी के आगे इस प्रकार प्रार्थना करनी है हे ठाकुर इस संसार में मेरा तेरे सिवा कोई नही क्योंकि (शेष जो भी हम देख रहे है सब नाशवान है) इस लिए आप मेरे पर विशेष कृपा करना कि चित में मै केवल आप का ध्यान करुं और रसना से केवल आप की ही महिमा गाऊं, नामजपु और नयनों से केवल आप के ही दर्शन करुं।

अगर मै इस प्रकार दिन रात आप को ही ध्याऊंगा तो तभी मुझे आप के दर्शन हो सकते हैं

(क्योंकि संसार के दृश्य मन में रखने से ध्यान में बाधा आती है) अपने बालों से मै अपने प्रियतम के पैर पोंछू। आप तो अति दयालु है इसलिए दो हाथ जोड़ कर मेरी विनती है कि मै केवल आप का ही नाम जपुं और इन नयनों के पार तक आप को ही बसा लूँ अर्थात स्थूल नेत्र और सूक्ष्म नेत्र केवल आप को ही निहारें

ऐसी २ विनती हमें नित्य प्रति अपने प्रियतम के आगे करनी चाहिए, तभी हमारा संसार में आने का कुछ लाभ है।

राधाजी राम राम

श्रीराम

शब्द 19

अपने सेवक को कबहु न बिसारो 2

उर लागहु स्वामी प्रभु मेरे

पूरब प्रीति गोबिन्द बिचारो।

II अपने सेवक -

पतित पावन प्रभु बिरद तुम्हारा

हमरे दोख हृदय मत धारहो

III अपने - -

जीवन प्राण हरि धन सुख तुम ही

हउमै पटल कृपा कर जारो।

IV अपने - - -

जल बिहूणा मीन कत जीवन

दूध बिना रहत कत बारो।

V अपने सेवक .

जन नानक प्यास चरण कमलान की

पेख दरस स्वामी सुख सारो।

अपने - -

शब्द 19 व्याख्या

जैसा कि रामायण ने संकेत दिया

सेवक धर्म कठिन जग जाना।

इसलिए हम सेवक बन कर प्रार्थना करते हैं

हे प्रभो! मैं आप का शुद्ध सेवक हूं आप मेरे स्वामी हो आप मुझे विसार न देना भूला न देना आप मुझे अपना सच्चा प्यार दो। क्योंकि यह मुझे मालूम है पिछले जन्म मे भी मैं आप की भक्ति में ही था तभी तो इस जन्म में मुझे आप की महिमा आप का नाम। सतसंग सेवा सिमरन अच्छा लगता है (क्योंकि संसार मे हर एक को इस विषय में आनन्द नही आता) अगर अब मुझे माया ने अपनी ओर कर के आपसे थोड़ा सा विमुख कर दिया है तो भी मुझे मेरे अवगुण न देख कर मेरा उद्धार कर दो।

आप अपनी कृपा कर के मेरी अहंता ममता मिटा दो क्योंकि मेरे प्राण मेरा जीवन। यह धन सब तो आप के दिये हैं और आपके ही हैं मै इन्हे अपना समझ कर व्यर्थ की चिन्ता तथा अहमता मे आ जाता हूं। मेरी लगन ऐसी तेज करो जैसे मछली की पानी से और बच्चे की व दूध से, अपने चरण कमलो की लाग ऐसी बना दो कि मुझे संसार का सारा सुख यही लगे, शेष सब नीरस लगे।

यह सब केवल आप की कृपा से ही हो सकता है इस लिए हम नित्य प्रति आप की कृपा मांगते हैं

राम जी राम राम श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूर्ण गोपाला"

शब्द 20

राख सदा प्रभु अपने साथ 2

तूँ हमरो प्रीतम मनमोहन

तुम बिन जीवन सगल अकाथ
राख - - -

II

रंक ते राउ करत खिन भीतर

प्रभु मेरो अनाथ को नाथ
राख - - -

III

जलत अग्नि में जन आप उधारो

कर अपने दे राखो हाथ
राख - - -

IV

शीतल सुख पाइओ मन तृपते

हरि सिमरत भ्रम सगले लाथ
राख - -

V

निधि (निधान) नानक हरि सेवा

अवर सयाराप सगल अकाथ
राख - - -

रामजी राम राम
श्रीराम

शब्द 20 व्याख्या

जैसा कि गीता में कहा गया है

ईश्वर सर्वभूतानाम् हृद्देशे:

अर्जुन: तिष्ठति

भ्रामयानि सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया

"ईश्वर अंश जीव अविनाशी

चेतन अमल सहज सुख राशि"

इससे यह सिद्ध होता है कि हम सब भगवान का ही अंश है परन्तु माया के वश हो कर हम उन से अलग हो जाते हैं। जब सतगुरु मिलते हैं तो वह फिर से याद करवाते हैं कि तुम अपने प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना करो?

हे प्रभो आप मुझे सदा अपने साथ ही रखना माया में फसने न देना। आप तो मेरे प्रियतम हो। मन को मोहने वाले हो। आप के बिना तो यह जीवन

बिल्कुल व्यर्थ है, अगर आप चाहें तो एक रंक को राज्य सिंहासन दे दो। आप चाहे तो राजा को फकीर बना दो जैसा कि रामायण में भी इशारा किया है

मसकहिं करहि विरंच प्रभु
अजहि मसक ते हीन
अस समर्थ रघुनाथकहि
राम भजहि प्रवीण

आप सब कुछ कर सकते हो, इस लिए आप मुझे सदा अपने साथ रखना। अर्थात (अपनी याद करवाते रहना इस जलती हुई माया से अपने सेवक को आप ही बचा सकते हो क्योंकि माया तो आप की दासी है। यह तो केवल सतगुरु जी ने भेद बताया कि अगर मानसिक शान्ति चाहिए। और मानसिक सन्तुष्टि चाहिए तो यह केवल नाम सिमरण से ही मिल सकती है, गुरु मन्त्र जाप से शारीरिक मानसिक सारी थकावट दूर हो जाती है

सतगुरु जी की कृपा से यह बात हमारी समझ में आ जाती है कि वास्तविक सच्चा खजाना तो सतगुरु की सेवा है। शेष संसार की चतुराइयां तो सब व्यर्थ जाती हैं।

इस लिए सदा हमें अपने सतगुरु के साथ ही रहना चाहिए, वही केवल हमें सच्चा सुख, मानसिक शान्ति और अन्तर का आनंद प्रदान कर सकते हैं। शेष तो सब नाशवान है।

रामजी राम राम
श्रीराम
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तारी आर पूरी गोपाला।"

श्रीराम

शब्द 21 (व्याख्या)

गीता में श्री कृष्ण जी ने संकेत दिया
यह त्रिगुण दैवी घोर माया।
अगम और अपार है
आता शरण मेरी वही
जाता सहज में पार है
इस लिए सतगुरु जी ने हमें समझाया कि
अपने ॐ रामजी की शरण में जाओ। और ऐसे कहो!
हे नाथ! हे मेरे स्वामी मै आप की शरण आया हूं
मेरे मन में आप का प्रेम जागृत हो गया है इस
लिए मै आपसे केवल नाम की दीक्षा मांगता हूं
आप तो हमेशा अपने भक्तों को सुख देने वाले हो।
आप मेरा मान रखो और हर श्वास मे अपना नाम
जपाओ। पहले आप मुझे संतो के चरणों की प्रीति
बख्शो उन का संग दो, उन के संग से, आप का

नाम जाप में रस आने लगेगा, आप के अनेको नाम है जैसे गोपाल हो, दयाल हो, गोविन्द हो, दामोदर हो, आप का ध्यान, आप की कथा में ही मुझे आनन्द आये, शेष सब रस फीके लगें। आप मुझे अपने ही रंग मे रंग लो, जो कभी भी न उतरे मेरा मन केवल आप के ही चरणों मे लगा रहे। यह सब केवल आपकी कृपा से ही हो सकता है।

राधेश्याम श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
श्रीहरि और प्यारे गोपाला"

शब्द 21

शरणी आइओ नाथ निधान
नाम प्रीति लागी मन भीतर
मागन को हरि दान
शरणी आइओ — — .

II
सुखदाई पूरन परमेश्वर
कर किरपा राखो मान
शरणी — —

III
देह प्रीति साधू संग स्वामी
हरि गुण रसन बखान
शरणी — —

IV
गोपाल दयाल गोबिन्द दामोदर
निरमल कथा ज्ञान
शरणी — —

V
नानक को हरि के रंग रांगो
चरण कमल संग ध्यान
शरणी — —

राधास्वामी राम राम
श्रीराम

शब्द 22

हरि जीओ सदा तेरी शरणाई
जिउ भावे तिउं राखो स्वामी
एह तेरी वडआई
हरि जीओ - -

II

जो तेरी शरणाई हरि जीओ
तिस तूं राखन जोग
तुध जेवड मैं अवर न सूझे
न को होआ न होग
हरि जीओ - -

III

जो तेरी शरणाई हरि जीओ
तिन की करे प्रतिपाल
आप कृपा कर राखहो हरजीओ
पोह न सकै जम काल
हरि जीओ

IV

तेरी शरणाई सच्ची हरि जीओ
न हो घटे न जाई

जो हरि छोड दूजे भाय लागे

ओह जमै ते मर जाय

हरि जीओ

V

जो तेरी शरणाई हरि जीओ

तिना दुख किछु नाही

नानक नाम सलाही सदा तूँ

सच्चे शब्द समाहि

हरि जीओ - -

शब्द 22 व्याख्या

गीता के उपदेश के अनुसार प्रभु की शरणागति ही सब से उत्तम है उस में संकेत दिया गया है, हमें अर्जुन के माध्यम से।

तज धर्म सारे एक मेरी ही शरण को प्राप्त हो।

मैं मुक्त पापों से करुंगा। तूं न चिन्ता व्याप्त हो।

इस लिए गुरुसाहब जी ने हमें शरणागति के शब्द बोलने का हुक्म दिया। ताकि हम गीता को।

के उपदेश को ही को प्रैक्टिकल कर सके जैसा
कि इन शब्द मे है अपने रामजी को, हरि जी को
कह रहे हैं हे रामजी हम सदा आप की शरण मे
है क्योंकि आप की शरणागति से, आप जैसे भी
हम रखो हमें स्वीकार है क्योंकि यह सारी बड़ाई
तो आपकी है (यह समर्पण है, जो भगवान को वश
करने की कुंजी है)

आगे गुरुसाहब हमें शरणागति के लाभ बताते
है ताकि हम सदा समर्पण की अवस्था मे रहें।
जो आपकी शरण में रहता है उस की आप विशेष
रक्षा करते हैं और आप जैसा, बड़ा, उदार, दयालु,
न कोई अभी तक हुआ है और न ही होगा।

जो आपकी शरण मे रहते है उन की आप
प्रतिपालना करते हो। पालना मे और प्रतिपालना मे
बड़ा अन्तर है। प्रतिपालना मे साथ २ जीवात्मा के भोजन
का भी ध्यान आता है। इस लिए जब हम बच्चो को

शरीर का भोजन देते है तो और अगर हम साथ उन्हें गुरुमन्त्र उच्चारण की शिक्षा भी देते हैं तो हम उन की प्रतिपालना भी करते हैं। और अगर साधन प्रति-पालना होती रहती है तो उन की आयु बड़ी होती है उन्हें रोग आदि नही लगते।

भगवत शरणागति हमेशा सत्य है यह कभी कम नही होती और संसार मे जिस की भी शरण लेते हैं वही कमी आ जाती है।

रामजी की शरण मे जाने से कितने लाभ है कोई संसार की तृष्णा नही रहती। कोई दुःख नही व्यापता। सदा मन उन्ही को उस्तत् करता रहता है और गुरुमन्त्र जाप करते २ वह शब्द रूप में परिवर्तित हो जाता हैं और अन्त मे हमारी आत्मा परमात्मा मे समा जाती है।

रामजीराम राम श्रीराम

शब्द 23

विसर नाही प्रभु दीनदयाल।
तेरी शरण पूर्ण किरपाल। 2

II

जहँ चित आवे सो थान सुहवा।
जित वेला विसरे तां लागे हावा

विसर नाही -

III

तेरे जीअ तू सद ही साथी
ससार सागर ते कड दे हाथी विसर नाही —

IV

आवण जाणा तुम ही कीआ
जिस तू राखहि तिस दुख न थीआ

विसर नाही

V

तूं एको साहब अवर न होर
विनय करु नानक कर जोर

विसर नाही ---

शब्द 23 व्याख्या

हे राम जी मैं आप का बहुत ही छोटा बच्चा हूं आप मुझे भुला नही देना। मुझे सदा अपनी शरण में रखना। आप मेरी इस बुद्धि बना दो कि मुझे वही स्थान अच्छा लगे, जहां मैं आप का ध्यान करूं संसार के विषयों से मुझे उपरामता दो। अगर कभी मै आप का नाम भूल जाऊं तो मुझे बहुत ही पश्चाताप हो।

क्योंकि यह सारा संसार आप से ही उत्पन्न हुआ है, इसलिए आप ही मुझे इस से निकाल सकते हो, अपना आप हाथ दे कर मेरी रक्षा कीजिए। संसार मे जन्म मृत्यु तो आप के ही हाथ में है परन्तु जिस पर आप का हाथ होता है, आप की कृपा होती है वह आने की खुशी नही करता और जाने वाले का शोक नही करता

आप ऐसी कृपा मुझ पर बनाये रखना

"श्रीराम"

शब्द 24

हरि धारहो हरि धारहो कृपा
कर किरपा लेहो ओर राम
हम पापी हम पापी निगुरा
दीन तुम्हरे, तुम्हेर राम

II

हम पापी निगुरा दीन तुम्हरे
हरि दइआल शरणाया
तुम दुखभंजन सर्व सुख दाता
हम पाथर तेर तराइआ

हरि धारहु

III

सतगुरु भेट, राम रस पाइआ
राम रस पाइआ, राम रस पाइआ
जन नानक नाम ओर राम

हरि धारहु — -

रामजीरामराम
श्रीराम

व्याख्या शब्द

इस संसार रूपी सागर से पार होने के लिए प्रभु की कृपा की बहुत ही आवश्यकता है। भगवान कृपा तो करते हैं उन्होंने पहली कृपा की, कि हमें मानव तन दिया। दूसरी कृपा की, सांसारिक साधन। और तीव्र बुद्धि भी दी, तीसरी कृपा जो सब से बड़ी है हमें सतगुरु मिलवाये, सतसंग भी दिया। अब चौथी कृपा हमने मांगनी है कि हे प्रभो! आप अपनी कृपा धारणा कर के रखो ताकि हम निरन्तर से भजन करें। क्योंकि आपकी माया हमारे मन को फिर से अपनी ओर हर लेती है। जब आप अपनी पूर्ण किरपा धारणा कर के रखेंगे तभी हमारा उद्धार हो सकता है इसलिए आप कृपा कर के उभार लो। हम तो मानते है कि हम जन्म जन्मान्तरों से पाप ही करते आये हैं और अभी भी जो गुण आप को प्रसन्न करने के हैं वो नहीं हैं। सेवा सिमरण दया, प्रेम शान्ति जप तप

सर्वज्ञ आदि भी नहीं है। हम बिल्कुल निर्गुणी हैं

परन्तु हमें यह पता है कि हम आप के ही अंश हैं

ईश्वर अंश जीव अविनाशी

चेतन अमल सहज सुख राशि
(रामायण)

ममैवांशो जीव लोके, जीवभूतः सनातनः।

मनः षष्ठानि इन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति
(गीता)

हे प्रभो। इस माया ने हमें आप से दूर कर दिया है

परन्तु आप तो बड़े दयालु हो। अपने भक्तों को सुख देने

वाले हो। आप तो भक्तों के दुःखों को समूल नष्ट करने

वाले हो। हम तो पत्थरों की तरह भारी होते जा रहे

हैं (ज्यों ज्यों मनुष्य बड़ा होता है इस पर अनेक प्रकार

की जिम्मेवारियां विकार घेर लेती हैं) अगर हमें

सतगुरु मिल जाते हैं। हमें मन्त्र देते हैं और हम

खूब मन्त्र जाप करते हैं, तो फिर हमें जप में रस

आने लग जाता है तो हम इस संसार रूपी सागर

से पार हो जाते हैं   रामजीराम राम कौराम

शब्द 25

हरि जन मंगल गावहु, हरि जन मंगल गावहु
अपनी विधि आप जनावो 2

I

काम क्रोध लोभ झुठ निंदा
इन ते आप छडावहु 2
हरि जन - - -

III

इह भीतर ते इन को डारहु
आपन निकट बुलावहु 2
हरि जन - -

IV

बिसर नाही कबहु हिये ते
इह विधि मन में पावहु 2
हरि जन - -

V

गुरु पूरा भेटिओ वडभागी
जन नानक कतहुं न धावहु 2

हरि जन - -

श्रीराम

25

व्याख्या शब्द

काम क्रोध मद लोभ सब
नाथ नरक के पंथ
सब तज रघुवीरहि भजो
भजो भजहिं जेही संत
(रामायण)

रामायण ने संकेत दिया कि काम क्रोध लोभ और मद यह सब नरक की ओर ले जाने वाली कुरीतियां हैं इन को छोड़ कर रामजी का भजन करो। जब सतगुरु मिले तो उन्होंने इन्हें दूर करने का उपाय बताया? कि जब सब सतसंगी मिल कर मंगल (कीर्तन) गाते हैं तो सभी और मिल कर प्रार्थना करते हैं हे प्रभो! इन से तो केवल आप ही बचा सकते हो। आप इन को हमारे हृदय से निकाल दो, जब जीव पूर्णतया निर्मल हो जाता है तभी वह भगवान को प्राप्त कर सकते हैं।

एक बार हम किसी के घर गये उन का लड़का हमारे सन्मुख न ही आये। माता पिता ने बहुत कहा परन्तु वह छिप गया और इधर सत्संग के कमरे में अंत तक नहीं आया फिर हम उठ कर उस के कमरे में गये तो वह उधर से भाग गया। सबने कहा राम जी यह क्यों नहीं आ रहा। हमने कहा यह गन्दा खाना खाता है शराब आदि पीता है। इस लिए इस के पाप कांपते हैं यह हमारे सामने नहीं आ सकता

इसी प्रकार अगर अन्दर दूसरे विकार होंगे तो हम भी प्रभु के द्वार तक नहीं पहुंच सकेंगे। इस के लिए हम अरदास करती हैं कि हे प्रभो! आप कृपा करो कि आप का ध्यान, नाम, हमारे हृदय से कभी भी न भूले। ऐसा तभी हो सकता है जब पूर्ण सतगुरु हमें मिल जाये जो कि हमारे मन को नाम में स्थिर कर दे ताकि हमारा मन सारे विषयों से दूर हो जाये।

शब्द 26

हे गोविन्द, हे गोपाल, हे दयाल लाल

हे दयाल लाल, हे दयाल लाल

हे गोविन्द हे गोपाल हे दयाल लाल

II

प्राणनाथ अनाथ सखे, दीन दरद निवार

III

हे समरथ अगम पूरन मोहि मया धार

अंध कूप महा भइआन, नानक पार उतार

IV

हे अच्युत हे पारब्रह्म अबिनाशी अघनाश

हे पूरन हे सर्बमय, दुख भंजन गुणतास

V

हे अपरम्पार हर हरे है भी होवनहार

हे संतों के सदा संग निराधार आधार

VI

हे ठाकुर हउ दासरो मैं निर्गुण गुण नहीं कोय

नानक दीजे नाम दान, राखो हिय परोय

VII

हे साँई हे निरकांर हे निर्गुण अब टेक
नानक दीजे नाम दान राखहो हिय विवेक

अपने प्रियतम को आवाजें लगाओ और प्रार्थना करो कि हे प्रभो! आप मुझे कभी न विसारो मैं तो माया का कीड़ा हूं आप सर्वज्ञ हो, पारब्रह्म हो अच्युत हो, अविनाशी हो, इस प्रकार से अपने भगवान को अलग२ नामो से पुकारो। जैसे संसारियों का अपने बच्चे से प्यार होता है तो वह अपने बच्चे के अनेको नामो से पुकारते है और आनन्द लेते है इसी प्रकार भक्त अपने भगवान को अनेको नामो से सम्बोधित कर के आवाजे लगाता है, जैसे हमारे सतगुरु लगा रहे हैं हमें सदा अपने सतगुरु का अनुकरण करना चाहिए

रामजीराम राम श्रीराम

श्रीराम

शब्द 27

सभे जीअ समालि अपनी मेहर कर
अन्न पाणी मुच उपाई दुख दालिद भन तर

सभे - - - -

II

अरदास सुणी दातार होय सृष्टि ठर
लेहु कंठ लगाय। अपदा सब हर

सभे - - .

III

नानक नाम धियाय प्रभु का सफल घर

सभे जीअ - - .

जगत जलंधा राख लै, अपणी कृपा धार
जित द्वारे उबरे तितै लेहो उबार

रामजी राम राम
श्रीराम
17. 9. 96

जैसा कि गीता मे भगवान श्री कृष्ण कहते है

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि भारत"

अर्थात जब २ इस पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है और पाप बढ़ जाते हैं तब धरती डोलने लगती है फिर प्रकृति भी हमारे विरुद्ध हो जाती है। कभी भूचाल आते है कभी बाढ़ आने लग जाती है। कभी आपस मे ही मनुष्यों का द्वेष बढ़ जाता है मार काट शुरु हो जाती है सब तरफ अशान्ति का वातावरण हो जाता है तो उस समय सतगुरु हम सब के लिए उस परमपिता अकाल पुरख के आगे प्रार्थना करते हैं। तब शान्ति हो जाती है

जैसा कि इस शब्द मे कर रहे हैं हे प्रभो इन नादान जीवो की आप ही अब सम्भाल करो अपनी कृपा करो मेहर करो। इन्हे अन्न पानी उतना ही दो जिससे इन की रक्षा हो सके (कई बार इतनी वर्षा होने लगती है कि बाढ़ आ जाती है

कई बार बिल्कुल ही सूखा पड़ जाता है। इसी प्रकार कभी तो अन्न प्रचुर मात्रा में उपजता है तो कभी अकाल भी पड़ जाता है। हे प्रभो यह नादान जीव हैं आप के, इन के द्वारा दलिद्र सारे हर लो। इस प्रकार जब सतगुरु के द्वारा अरदास की जाती है तो अवश्य ही सुनी जाती है थोड़े ही दिनों में सारे संसार में शान्ति हो जाती है। फिर कहते हैं इन जीवों को आप अन्दर से अपना प्यार दो ताकि यह शान्त रहे।

(जब भारत में   में बहुत ही अशान्ति हो गई थी उस समय हम अमेरिका में थे वहीं हमने प्रार्थना की तो यह शब्द अंदर आप आया हमने भारत में पत्र लिखा जिस में यह शब्द लिखा और बोला कि अन्न धन मिल कर सब गाया तब एक दम शान्ति हो गई)

श्रीराम

शब्द 28

जिउ भावे तिउ मोहे प्रतिपाल

" " " " "

पारब्रह्म परमेश्वर सतगुरु

हम बारिक तुम पिता किरपाल

जिउ भावे - -

II

मोहे निर्गुण गुण नाही कोय

पहुंच न साकउ तुमरी घाल

जिउ - - -

III

तुम्हरी गति मिति तुम्ही जानो

जीउ पिंड सब तुम्हरो माल

जिउ भावे - -

IV

अन्तरयामी पुरख स्वामी

अनबोलत ही जानहु हाल जिउ भावे

V

तन मन शीतल होय हमारो

नानक प्रभु जी नदर निहाल रामजीराम राम श्रीर

भगवान को केवल समर्पण ही पसन्द है

इसलिए हम सतगुरु की आज्ञा अनुसार जैसे उन्हों अपनी वाणी द्वारा अपना जीवन समर्पित किया वैसे ही उन के शब्द बोल २ कर हम भी नित्य प्रति अपने भगवान से ऐसे प्रार्थना करनी चाहिए

हे प्रभो जैसे आप को ठीक लगे वैसे ही आपकी प्रतिपालना करें मेरे बस मे तो कुछ भी नही है आप तो परब्रह्म हो जिन की माया का पार हम कभी भी नही पा सकते। आप हमारे स्वामी हो। आप हमारे सतगुरु हो, हम आपके बहुत ही छोटे २ बच्चे हैं। आप तो बड़े दयालु पिता हो। आप सदा ही कृपा करते रहते हो। हम मे तो कोई भी गुण नही और आप के लिए कोई भी सेवा नही करते। अपनी गति मति तो आप ही जानते हो यह शरीर और इस के अन्दर जो जीवात्मा है यह आपकी ही दिया हुआ है। आप तो अंतर्यामी हो

श्रीम I

हमारी सारी परिस्थिति आप हमारे बिना बोले ही समझते हो। जब आप अपनी मेहर भरी आंखो से हम देखते हो तब हम बहुत ही आनन्द लेते हैं और हमारे मन को शीतलता मिलती है और शरीर की सारी थकावट दूर हो जाती है।

सदा हमारे मन मे उच्चभावनाएं रहें

(1) अपने इष्ट देव के दर्शन

(2) अपने प्रभु प्यारे का गुरु मन्त्र का जाप

(3) हर कार्य उसी का ही लगे

(4) करने वाला भी वह आप ही हैं

(5) सब मे अपने रामजी की झलक दिखे

(6) अपने आप को सदा निर्गुणी ही समझें

(7) अपना सब कुछ अपने प्यारे को समर्पित करदे

(8) भगवान अन्तरयामी हैं ऐसा विश्वास बना रहे

इस प्रकार से हम जीवनमुक्त हो सकते हैं

श्रीराम

शब्द 29

मेरे प्रीतम प्यारे मान करूं तुध उपर 2

हम अपराधी सद भूलते, तुम बख्सनहार

मान करूं तुध उपरे -

II

जिउ जानहु तिउ राख हर प्रभ तेरेआ

केते गनउ असंख अवगुण मेरेआ

III मेरे प्रीतम प्यारे -

असंख अवगुण खते फेर, नित प्रति सद भूलिए

मोह मगन विकराल माया, तउ प्रसादि घूलिए

मेरे प्रीतम प्यारे

IV

लूक करत विकार बिखड़े, प्रभ नेरहु ते नेरेआ

बिनवंत नानक दया धारहु, काढ भवजल फेरेआ

मेरे प्रीतम प्यारे

रामजीराम राम
श्रीराम
18.9.96

व्याख्या शब्द 29

प्रायश्चित करने से पाप धुल जाते है और भगवान प्रसन्न होते है केवल सतगुरु ही हमें प्रायश्चित करना सिखाते है जैसा कि, इस शब्द मे अपने इष्टदेव के आगे कह रहे है हे मेरे प्रियतम हे मेरे प्यारे। मेरा मान केवल तू ही क्योंकि संसार मे तो मुझे कोई अपना दिखता नही है, फिर भी आप की माया हम से अपराध भी करवा लेती है और आप की भी विस्मृति भी करा देती है आप ही तो गीता मे कहते हो, "मम माया दुरत्या।" जैसे भी हो आप मुझे अपनी शरण मे रखना मै तो अपने अवगुण गिन भी नही सकता। नित्य प्रति हम भूल जाते हैं फिर फिर वही गलतियां करने लग जाते हैं। यह माया बड़ी

विकराल है। परन्तु यह आप की कृपा से समाप्त हो सकती है। इस लिए हम कृपा तो मांगते रहते हैं। हम इस बात का ज्ञान भी है कि माया के वश मे नही होना चाहिए ऐसा जान कर के भी कई विकार मानसिक और शारीरिक हो जाते हैं।

अब आप ही अपनी दृष्टि किरपा धार कर रखो और इस भवसागर से अपना हाथ दे कर निकाल लो।

रामजी राम राम श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर दृष्टि गोपाल॥

श्रीराम

शब्द 30

आइओ शरणा तुम्हारी, सतगुरु आइओ जी 2

II

मिले सुख नाम हर शोभा चिंता लाहे हमारी

सतगुरु आइओ जी

III

अवर न सूझे दूजी ठाउर, हारि परिओ तउ द्वारी

सतगुरु ---

IV

लेखा छोड अलेखै छूटे, हम निर्गुण लेहो उबारी

सतगुरु आइओ --

V

सद बख्संद सदा मेहरवाना, सभना देह अधारी

सतगुरु —

VI

नानक दास संत पाछै परिओ, राख लेहो इह बारी

सतगुरु आइओ जी

राम जी राम राम

श्रीराम

शब्द 30 (व्याख्या)

शरणागत को सुरतरु के सम
देते मनवांछित वरदान
कर में चाबुक लिये ज्ञान की
गुडाधारे श्री भगवान (गीता)

इस लिए हम शब्द गा गा कर अपने सतगुरु की शरण लेनी चाहिए जैसा कि इस शब्द मे कह रहे है हे सतगुरु अब हम आपकी शरण मे आये है। आप हमारी सारी चिन्ताए दूर कर दीजिए और नाम योग और सुख प्रदान कीजिए।

यह केवल सतगुरु ही हमे समझाते है, मौन ज्यादा रखो अन्तर मे गुरुमन्त्र का जाप करो। सब मे रामजी को देखो इस प्रकार से मन मे किसी के प्रति द्वैत नही आयेगा

मौन रखने से अन्तर मे नाद चलेगा बुरी बात नही बोली जायेगी तो ध्यान होगा सारा संसार हमारी शोभा करेगा

परन्तु शरणागति एक की ही लेनी चाहिए मन बार २ दूसरी ओर जाय तो उस हटा २ कर अपने इष्ट देव को सामने लाना चाहिए उन्ही के द्वार रोना जाना चाहिए जा कर अरदास करो हे प्रभो। माया मे उलझ २ कर अब मै हार गया हूं मुझे इस माया से मुक्त करो तब वह अपनी कृपा दृष्टि से हमे शीतलता देगें।

आप तो सदा क्षमा कर देते हो मेरे अवगुण भी क्षमा करो। आप तो सब को आधार देते हो मुझे भी अपने आश्रय मे रखो।

अगर आप चाहो तो आप हमारी किस्मत भी बदल सकते हो। जैसे Stamp के words उल्टे होते हैं परन्तु कागज पर रखने से सीधे हो।

इसी प्रकार जो नित्य प्रति अपने इष्टदेव के चरणों में शीश झुकाता है उस के उल्टे लेख भी सीधे हो जाते हैं। बस हमें उन के सामने निमाणा बने रहना है और प्रार्थना करते रहना है कि आप अपनी कृपा से इस भवसागर से मुझे निकाल लो।

हमें सदा सतों के पीछे चलते रहना है और इसी जन्म में जीवन मुक्त होना है।

राम जी राम राम श्री राम

श्रीराम

शब्द 31

सब अवगुण मैं गुण नही कोई
क्योंकर कंत मिलावा होई
न मैं रूप न बंके नैणा
न कुल ढंग न मीठे बैणा

II

सहज सिंगार कामण कर आवे
तां सोहागण जां कंते भावे
न तिस रूप न रेखिआ काई
अंत न साहब सिमरिआ जाई

III

सुरत मत नाही चतुराई
कर कृपा प्रभु लावहु पाई
खरी सिआणी कंत न भाणी
माया लागी भरम भुलाणी

IV

हउमै जाय तां कंत समाय

तउ कामणा और नवनिधि पाई

V

अनिक जन्म बिछरत दुख पाया

कर गहि लेहो प्रीतम हर राया

भणत नानक शहो है भी होसी

जे भावे प्यारा तो रावेसी

शब्द 31 (व्याख्या)

जैसे संसार में उसी प्राणी को मान मिलता है जिस में गुण होते हैं ठीक इसी प्रकार भगवान को भी वही जीव प्राप्त कर सकता है जिस में गुण हो, लेकिन इस मार्ग पर अपने आप को मिटाना पड़ता है जैसे कि हो सतगुरु समझाते हैं। आप अपने प्रभु से ऐसे प्रार्थना करो।

हे नाथ मैं तो बिल्कुल निर्गुण हूं मैं आप को कैसे प्राप्त कर सकूं। और सच मे, हीरे मे

वह गुण नही है जो परमार्थ के रास्ते मे चाहिए वहा तो जप, तप, सयम, सेवा, साधना, धारणा ध्यान समाधि आदि २। न तो मेरा रूप सुन्दर है न मेरे नयन सुन्दर है, न मेरे मे वाणी मे मिठास है अब यहा रूप सुन्दर का अर्थ शरीर नही यहा सुन्दरता मन की है नयन किस के सुन्दर है जो केवल अपने सतगुरु को नयनों मे बसाता है दूसरो के अवगुण नही देखता ससार के अनित्य दृश्यों की ओर आकर्षित नही होता मीठे वैराग का अर्थ है कि मेरी मे वाणी भगवत् नाम अति मीठा है यह उस का उच्चारण नही करती।

मेरी साधना मे मेरे मन्त्र जाप मे भी अभी सहज अवस्था नही है और यह भी मुझ मालुम है कि अंत समय मे बुढ़ापे मे साधनी नही हो सकती।

माया के विषयो मे तो मैं बड़ी चतुर हु परन्तु इन चतुराइयों से भगवान रीझने वाले नही हैं। वहा तो अहं का सर्वथा नाश नाश करना होगा तभी ध्ये

भगवान अपनी शरण मे ले लें।

इस प्रकार विषयों में चतुराई करते २ कई जन्म बिता दिये परन्तु प्रभु प्राप्ति नही हुई हे प्रभो अब तो मै आप की शरण आई हू आप अब तो मुझे अपना कृपा भरा हाथ दे कर उभार लो। जिस की भक्ति भगवान को कबूल हो जाती है वही उसे प्राप्त कर सकता है। किस की भक्ति कबूल होती है

(1) जो अपने प्रभु के सन्मुख निर्गुण हो कर जाता है

2. जो अपनी वाणी मे केवल गुरु मन्त्र जाप करता रहता है

3 जो सदा मीठा बोलता है

4. जिसके नयन केवल प्रभु दर्शन ही चाहते है

5 जो जीवन के प्रारम्भ काल मे ही भक्ति मार्ग पर चल पड़ता है

6. जो हमेशा अरदास करता है हे प्रभो आप अपना हाथ दे कर भ उभार लो

श्रीराम

32

शब्द

किउ छुटउ कैसे तरु भवजल निधि भारी
राव राव मेरे बीठुला, मैं शरण तुम्हारी

II

गृह तज बन खंड जाइए, चुन खाइये कंदा
अजहुं विकार न छोडई, पापी मन मंदा

III

विषे विषे की बासना, तजीअ नही जाई
अनिक यत्न कर राखिए, फिर फिर लपटाई

IV

जरा जीवन यौवन गया, किछ किआ न नीका
एह जीअड़ा निरमोलको, कौडी लग मीका

V

कह कबीर मेरे माधवा तुम सर्वव्यापी
तुम सम सर नाही दयाल मो सम सर पापी

रामजीराम राम
श्रीराम

शब्द 32 व्याख्या

जब सतगुरु कृपा करते है और अपना मंत्र देते है और हम मंत्र जाप करते रहते है तो हमारे मन मे वैराग्य आने लगता है, कभी कभी तो ऐसा मन करता है कि यह घर बार सारा छोड़ कर किसी एकान्त स्थान मे जा कर भजन सिमरण करें

ऐसी ही अवस्था एक दिन कबीर जी की हुई। परन्तु उन्होने इस पर संयम किया और अपने मन को समझाया ऐ मन अगर तू घर छोड़ कर वन मे चला जाता है और वहां जा कर भी अगर तुझे वासनाए तंग करती है तो कोई लाभ नही

इस से अच्छा यही है कि तू यही टिक कर रह और अपने आप को समझा कि यह माया तो कौडी के बराबर है और भगवान का नाम हीरा है। यही पर हर साधु इस मन को संयम कर और समझा। क्योंकि संयम तो वही है

जो विषयों मे रह कर हो

अगर नदी मे गये ही नही तो तैरना कैसे आयेगा।

फिर कहते हैं हे मेरे माधव आप तो सर्वव्यापी हो। अगर वन मे हो तो यहा भी आप ही हो।

हे प्रभो मुझे ऐसी बुद्धि दो कि हर समय मै आप के सन्मुख अपने पापों का प्रायश्चित करु आप जैसा कोई दयालु नही और मेरे जैसा कोई पापी नही।

यह सब हम स्थिरता के लिए सतगुरु जी समझा रहे है कि ज्यादा तीर्थो पर भटकने की आवश्यकता नही। ईश्वर सर्वव्यापक है अगर हम सतगुरु की शरण चले जाते हैं और उन से नाम ले कर साधना मैं रत रहते हैं तो प्रभु प्राप्ति कर सकते हैं।

राम जी राम राम
श्रीराम 18.9.96

शब्द 33

पतित पावन प्रभु नाम तुम्हारे
राख लेहो मोहे निर्गुणा ओरे

II

लोभ मोह मगन अपराधी
करणा हार की सेव न साधी
पतित - -

III

तूँ दाता प्रभु अन्तरयामी
काची देह मनुख अभिमानी
पतित - .

IV

स्वाद बाद इरष मद माया
इन संग लाग रत्न जन्म गवांया

V

पतित - .

दुख भजंन जग जीवन हर राया
सगल त्याग नानक शरणाया

पतित - .

रामजी राम राम श्रीराम
22.9.96

33
शब्द व्याख्या

जब हम अपने इष्ट देव के सन्मुख प्रायश्चित कर लेते हैं तो भगवान हमें क्षमा कर देते हैं। इस लिए जैसे हमारे सतगुरु हमें समझाते हैं कि ऐसे प्रार्थना करो।

हे राम जी आप तो सदा पतितों को पवित्र करते आये हो। जब की विभीषण ने आ कर कहा?

तामस तन कछु साधन नाही

प्रीति न पद ~~सरोज~~ सरोज मन माही

तो आपने उसे तुरन्त ही लंकेश कह दिया, क्योंकि आप तो पतितों को भी पावन करते हो। इस लिए मैं भी निर्गुण हो कर आपकी शरण आया हूँ मुझे भी आप अपनी शरण में रखो।

मै मानता हूं कि मै लोभ मे और मोह मे मग्न रहता हूं और आप ही सब कर्ता धर्ता हो आप की सेवा साधना नही करता। आप फिर भी मुझे सब कुछ

देख रहे हो और आप मेरे मन की सारी बातें जानते हो। मुझे यह भी पता है कि यह पंचभौतिक शरीर नाशवान है फिर भी शरीर मेरे में अहंता ममता आ जाती है।

मैंने अपना सारा हीरे जैसा जन्म व्यर्थ वादविवाद और ईर्ष्या में ही नष्ट कर दिया अब सतगुरु की कृपा से महसूस होने लगा गया है कि अगर मैं किसी से ईर्ष्या करता हूं तो उस का तो कुछ नहीं बिगड़ता मेरा ही मन तन जलता है और जब वाद विवाद करता हूं तो व्यर्थ में ही अपनी शक्ति व्यर्थ करता हूं क्योंकि जिसने जो भी अपनी मर्जी करनी है वही करेगा, और यह भी आता है यह सब माया का परिवार है। अब मुझे होश आ गई है कि इन सब दुखों के नाश करने वाले तो आप हो। इसलिए यह सब दुनियां छोड़ कर मैं आप की शरण आ गया हूं

श्रीराम

34

शब्द

हम मूर्ख मुगध अज्ञान अविचारी

नाम तेरे की आस मन धारी

हम मूर्ख - - .

II

उक्त सयाराप किछु न जाणा।

दिनस रैणा तेरा नाम वखाणा।

हम मूर्ख - -

III

मैं निगुणा गुण नांही कोय

करन करावनहार प्रभु सोय

हम मूर्ख - - - -

IV

जप तप संयम कर्म न साधा

नाम प्रभु का मनहि आराधा

हम मूर्ख - - -

V

किछु न जाणा मत मेरी थोरी

बिनवंत नानक ओट प्रभु तोरी

रामजी राम राम

श्रीराम

25-9-96

शब्द 34 व्याख्या

संसार के नियम तथा भगवान के नियम हमेशा एक दूसरे के विपरीत होते आये हैं, संसार में अगर हम employment चाहिए तो बहुत सी योग्यताएं होनी चाहिए। और भगवान के कार्यालय में प्रवेश चाहिए तो यहां बिल्कुल अपने आप को मिटाना पड़ेगा।

यहां तो इस प्रकार अरदास करनी पड़ेगी हे प्रभो: हम तो बिल्कुल मूर्ख हैं और अनजान हैं। अज्ञानी हैं कोई विचारवान भी नहीं हैं फिर भी आप के नाम की आशा मन में बसी है। बस मेरी यही तीव्र इच्छा है कि मैं दिन रात आप का ही नाम सिमरन करूं शेष तो मुझ में कोई चतुराई नहीं है।

मैं बिल्कुल निगुणा हूं परन्तु मुझे यह विश्वास है कि इस शरीर के कर्ता धर्ता

केवल आप हैं। न तो मै आप का जप कर सकता हूं और तप भी मेरे से नही होता और साधना भी नही हो सकती, बस इतनी कृपा मेरे सतगुरु स्वामी जी ने कर दी हैं कि मन में आप की ही आराधना होती रहती है। शेष मै कुछ नही जानता बस आपकी टेक (आश्रय) ले रखा है

प्रह्लाद कौन से पैदा हुए थे रन्कार लगाते रहते थे

जल भी राम
थल " राम
घड़ी " "
पल " राम

कभी कोई शिकायत नही करी, वह गज कौन सा विद्वान था जिस को ग्राह ने जल मे पकड़ लिया था

नाही गुरा नाहिन कछु विद्या
कवन धर्म गज कीन्हा
नानक बिरद्ध राम का देखो
अभय दान तहे दीन्ह

कबीर जी कौनसे पढ़े हुए थे।

इन सब की ओर निहारते हुए मुझे भी आशा हो गई है कि आप मेरा भी उद्धार कर दोगे क्योंकि आप की पढ़ाई तो और ही ही है वह है

1 श्रद्धा
2 विश्वास
3. शरणागति
4. सपंर्क
5. साधना
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि
9. एकाग्रता
10 एकाकारिता

यह सब आप की कृपा से प्राप्त हो सकते हैं इस लिए मैं तो केवल आप की कृपा याचना ही करता रहता हूं

रामजी राम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी शरण पूरी गोपाला

शब्द 35 (शरणागति)

प्रभु लावहो अपनी चरणी 2
आप अनिक जनम शुभ शरणी
प्रभो लावहो अपनी चरणी 2

II

उधर देह अंध कूप ते
प्रभु लावहो अपनी चरणी 2
प्रभो - - -

III

ज्ञान ध्यान किछु कर्म न जाणी
नाहिन निर्मल करणी
मेरी नाहिन निर्मल करणी
प्रभो - - -

IV

साध संगत के अंचल लावहो
विखम नदी जाए तरणी 2
प्रभो - - -

V

सुख सम्पति माया रस मीठे
इह नही मन मे धरणी
मै इह नही मन मे धरणी
प्रभो - - -

हरि दरशन तृप्तनानक दास पावत

हरि नाम रंग आनंदाी २

प्रभो लावहु अपनी ---

व्याख्या शब्द 35

हमें सदा यही प्रार्थना करनी है अपने इष्टदेव के आगे कि वह हमें अपनी शरण मे ले लें. क्योंकि हम अनेको जन्मो मे भटकते हुए आये हैं बड़ी मुश्किल से यह नर तन मिला है इस मे भी अगर हमने सारा समय विषय विकारो मे खो दिया तो फिर से सारी योनियां भटकना करनी पड़गी। हे प्रभो अब तो हम अपनी शरण मे ले लो। इस अंधकार रूपी संसार के कुएं मे से हमे निकाल लो। हम मे तो कुछ भी योग्यता नही हैं आप को प्राप्त करने के लिए न ज्ञान है, न ध्यान लगाता है, न ही मेरे कर्म अच्छे हैं और मेरा व्यवहार भी सारा माया के

साथ ही होता है। अगर आप कृपा करें तो मुझे
संतो का संग दें, फिर मैं उन का संग न छोड़ू
तभी मैं इस माया रूपी नगरी से तर सकता हूं
संतो के संग से मेरी ऐसी बुद्धि बन जायेगी
कि यह संसार के रस सुख सम्पत्ति आदि मेरे
मन मे नही आयेंगे, केवल आप के दर्शनों की
तीव्र लालसा लग जायेगी। मुझे संतुष्टी केवल
आप के नाम से होगी शोक वहारथ मेरे लिए मीठा
हो जायेगा और आप के नाम के, सम्मान के जाप
के आभूषणों से मैं अपने आप को सुसज्जित
करूं तभी मैं आपको प्राप्त कर सकता हूं
आप ऐसी कृपा करना।

राम जी राम राम
श्रीराम
25.9.96

शब्द 36

हम ऐसे तूं ऐसा माधो
हम ऐसे तूं ऐसा 2

II

हम मैले तुम उजल करते
हम निर्गुणा तूं दाता माधो 2
हम मूरख तुम चतुर सयाने
सर्व कला का ~~माधो~~ ज्ञाता माधो
माधो हम ऐसे —

III

हम पापी तुम पाप खडंन
नीको ठाकुर देसा
माधो —.

IV

तुम सब साजे साज निवाजे
जीऊ पिंड दे प्राना माधो
निर्गुणा और गुणा नही कोई
तुम दान देहो मेहरवाना
माधो —.

IV

तुम करहो भला हम भला न जानै

तुम सदा सदा दयाला साधो

तुम सुखदाई पुरख विधाते

तुम राखहो अपने बाला

साधो - - .

V

तुम निधान अटल सुलतान

जीअ जंत सब जाचै

कहो नानक हम इहै हवाला

राख सतंन के पाछे

साधो हम - - .

व्याख्या शब्द 36

रामायण में जीव के लिए कहा गया है कि यह ईश्वर का अंश है

ईश्वर अंश जीव अविनाशी

चेतन अमल सहज सुखराशि

सो माया बस भयउ गुसांई

बध्यो कीर मर्कट की न्याई

यही बात श्री कृष्ण जी गीता में फरमाते हैं।

ममैवांशो जीव लोके, जीव भूता सनातन

मनाहि षष्ठानि इन्द्रियाणी प्रकृतिस्थानि कर्षयति

यही विचार इस शब्द में प्रकट किया गया है कि हे माधव हम इस संसार मे आ कर माया के पदार्थों में फंस कर मैले हो गये हैं और आप ही हमें उज्जवल कर सकते हो। हम अपने आप को भूल गये हैं कि हम तो आत्म स्वरूप हैं इस जगत नाटक मे खेलते २ अपना स्वरूप ही भूल गये हैं। फिर भी आप हमें नही भुलाते अपना रूप धारण कर के सतगुरु द्वारा हम जगाते रहते हो। माया में फंस कर हम कई प्रकार के पाप कर बैठते हैं, फिर भी आप हमें सतगुरु की शरण भेज कर उन से मुक्ति दिलाते रहते हो।

आपने ही हमारा शरीर रचा फिर उस मे

पुरा डोले, इस शरीर मे अगर आप को प्राप्त करने के गुरा नही तो। यह शरीर किसी काम का नही है। और साधर हम तो कृतघन भी है आपने हमे सब कुछ दिया। परन्तु हम तो आप की दी हुई वस्तुओं मे फस गये आप को भूल गये अब आप ही हमारी रक्षा करना। जैसे मां बाप बच्चे के अवगुरगों की ओर ध्यान नही देते आप ऐसे ही हमे क्षमा कर देना।

आप तो दयानिधान हो और आप के नियम अटल हैं आप आखण्ड ब्रहमण्ड नायक हो। हर समय आप से आप के जीव कुछ न कुछ मांगते ही रहते है। परन्तु आप मुझे यही दान देना कि मुझे सदा संतो की शररा मे राखना

संत शररा जो जन परे

सो जन उद्धररा हार

राम जी राम राम
श्री राम

शब्द 37

हउं किछु न जाणा। तेरी सार
तूं कर गति मेरी प्रभ दइआर 2

II

तुम वडदाते दे रहे, जीअ प्राण मे रव रहे
दीने सगले भोजन खान, मोहे निरगुण इक गुनन जान
हउ किछु ——

III

जाप न ताप न कर्म कीत
आवे नाही किछु रीत
मन में राखो आस एक
नाम तेरे की तरउ मैं टेक
हउ किछु ——

IV

सर्व कला प्रभ तू प्रवीण
अंत न पावहि जलहि मीन
अगम अगम ऊच ते ऊच
हम थोरे तुम बहुत मूच
हउ किछु ---

V

जिन तूं ध्याया से गनी
जिन तूं पाया से धनी
जिन तूं सेविआ सुखी से
संत शरण नानक वेर
हउ किछु नं - -

शब्द 37 (व्याख्या)

जैसे कि गीता में अर्जुन ने भगवान की
अस्तुत की

" तुम कौन आदि स्वरूप हो
यह जानना मैं चाहता
कुछ भी न मुझ को आप की
इस दिव्य करणी का पता "

ऐसे ही सतगुरु हमें समझाते हैं कि आप भी
परमात्मा की अस्तुत करो। हे प्रभो। मैं आप की
गति मति नही जान सकता आप दया करो
और मेरी गति कर दो मुझे जीवनमुक्त कर दो।

आप तो सारीसृष्टि के दाता हो। और मुझे देते ही जा रहे हो बदले मे कुछ नही लेते सब जीवों में प्राणीयो में रमण कर रहे हो। सब प्रकार के भोजन मौसमअनुसार देते हो। परन्तु मुझ मे कोई भी गुण नही कि मै आप को ~~धन्यवाद~~ प्रसन्न भी करूं

अब जब मैने सतगुरु की शरण ली तो सतगुरु ने बताया कि प्रभु को प्राप्त करने के लिए

1 जप करना चाहिए

2 तप करना चाहिए

3 शुभ कर्म करने चाहिए

4 सतगुरु से विनय पूर्वक प्रार्थना कर के विधि सीखनी चाहिए

(5) केवल आप की ही आशा रखनी है

(6) आप के नाम का आश्रय लेना है

आप का तो किसी ने भी अंत नही पाया। जैसा कि रामायण ने भी संकेत दिया है

आदि अंत कोऊ जासु न पावा
वेद पुराण उपनिषद गावा
और गीता मे भी अर्जुन के द्वारा
संकेत दिया गया
भगवन पुरातन पुरुष हो
तुम विश्व के आधार हो।
हो आदि देव तथैव ~~अगम धाम~~
अगम धाम अपरम्पार हो

आप तो सर्व कला समरथ हो। आप का अंत हम नही पा सकते जैसे मछली सागर का भेद नही पा सकती। हम बहुत ही छोटे जीव है और आप हमारे उत्पत्ति कर्ता, पालन कर्ता, संहार कर्ता हैं

परन्तु हम सतगुरु की शरण मे जाने से यह पता लग गया है कि, जो आप का ध्यान करते है वह आप की गिनती मे आ जाते हैं अर्थात उन्हे आप अपना बना लेते हो और जो आप को।

प्राप्त कर लेते है वह सदा सच्चे धन से (नामधन) से भरपूर हो जाते हैं, और जो आप की सेवा करते हैं वह सदैव सुखी हो जाते हैं, इस लिए मैं भी सदा ऐसे सतगुरु की शरण में आ गया हूं जो मुझे यह सारी विधियां बतलाये।

राम जी राम राम
श्रीराम

श्रीराम

38

शब्द

ठाकुर प्रीतम प्रीतम प्रभु मेरे
भूलह चूकह प्रभु तेरे तेरे ठाकुर - - -

II

किछहु काज न कीओ आन
सुरति मति नाही किछु ज्ञान
जाप ताप शील न धर्म
किछु न जानउ कैसा कर्म ठाकुर - - -

III

रिधि न सिद्धि न बुद्धि प्रगास
बिखे व्याध के गाव में वास
करणहार मेरे प्रभु एक
नाम तेरे की मन में टेक ठाकुर प्रीतम - -

IV

सुण सुण जीवा मन रह बिस्राम
पाप खडंन प्रभु तेरो नाम
तू अगनत जीअ का दाता

जिसहि जनावे तिन्हे तुम जाता

V

जो उपाइओ तिन तेरी आस

सगल आराधहि प्रभु गुण नाम

नानक दास सदा कुरबाणा

बेअंत साहब मेरा मेहरवान

शब्द 38 (व्याख्या)

गीता में अर्जुन श्री कृष्ण भगवान से क्षमा मांगता है ग्यारहवें अध्याय में

"सब की क्षमा मै मांगता
जो कुछ हुआ अपराध है
संसार मे तुम अतुल
अपरम्पार और अगाध हो"

यह जीव भी अर्जुन का ही प्रतीक है जो संसार में सात्विक राजसी तामसी वृतियो से युद्ध करता रहता है और पाप का भागी बन

जाता है। जब इसे सतगुरु मिलते हैं तो इसे प्रभु के आगे समर्पण करना सिखाते हैं प्रभु से क्षमा मांगना सिखाते हैं। जैसा कि इस शब्द मे महाराज हमारे से कुलवा रहे हैं आप ऐसे अपने ठाकुर जी से अरदास करो

हे मेरे ठाकुर जी आप मुझे ससांर मे सब से प्रियतम हो। आप मेरे हो मै जैसा भी हूं बस आपका ही हूँ चाहे गलतियों से भरपूर हूँ। ससार मे आकर मैने कुछ भी तो नही किया, न तो मेरी सुरति भगवान से जुड़ी, न मेरी मति भक्ति वाली हुई और न ही मुझे ब्रह्मज्ञान हुआ। न मैने नाम जप किया न तप किया न कोई धर्म वाला कार्य किया। मुझे माया ने ऐसा अपने बन्धन में फसा कर रखा कि न दान किया न तीर्थ किया न सतसंग किया न मेरी बुद्धि भगवताकार हुई न ज्ञान का अन्तर मे प्रकाश हुआ। सारा जीवन विषय विकारों मे ही बीत गया

अपने सतगुरु मिले तो उन से सुना कि आपका नाम सारे पापो को नाश कर सकता है, तब मुझे कुछ शान्ति मिली। आप तो सब जीवो के दाता हो परन्तु जिस पर आप अपनी कृपा करते हो उसे अपना आप जना देते हो। जो जो भी प्राणी आपको संसार मे भजते है सब को आशा तो तेरी ही है और सब आप की आराधना भी करते है। परन्तु मै तो आप पर सदा बलिहार जाता हूं क्योकि मुझे तो आप बेअंत प्रतीत होते हो और बहुत ही दयालु कृपालु और सदा मेहरबान लगते हो।

राम जी राम राम श्रीराम

श्रीराम

शब्द 39

हउ बलि बलि जाउ रमईआ 2
कारण कवन अबोल रमईआ 2

हउ - - - -

II

हम सर दीन, दयाल न तुम सर
अब पतिआर क्या कीजे रमईआ
बचनी तोर मोर मन माने
जन को पूर्ण दीजे रमईआ

हउ बलि - -

III

बहुत जन्म बिछुड़े थे माधो
इह जनम तुम्हारे लेखे रमईआ
कह रविदास आस लग जीवऊ
चिर भइओ दरशन देखे रमईआ

हउ बलि -

रामजीरामराम
श्रीराम
10.7.96

संसार में जिस बच्चे के माता पिता दोनो हो वही बच्चा सुखी कहलाता है भाग्यवान होता है इसी प्रकार जब हम अपने रामजी को रामैया कह कर पुकारते हैं तो मानो भगवान हमे माता पिता दोनों का प्यार देते हैं

जैसा कि इस शब्द में भक्त रविदास जी अपने राम जी से बातें कर रहे हैं, हे रामजी मैं आप पर बलिहार जाता हूं। आप मुझे अपनी छवि तो दिखाते हो, परन्तु बातें क्यों नही करते

हे प्रभो मेरे जैसा तो कोई भी दुखी नही है जो निरन्तर आप की याद मे दुखी होता है और आप तो बड़े दयालु हो, अब यह पतित क्या करे जिस का मन अब संसार मे लगता नही और आप तक पहुंचने की शक्ति नही, बस इतना सहारा अवश्य है कि ~~जो भी आप कहते हैं~~ आप की बाणी (गुरुबाणी) बोलने में और सुनने मे याद करने मे

बहुत आनन्द आता है। अब इस से आगे भी आपने ही बढ़ाना है। अब तो केवल आप की ही आशा है, आप थोड़ी देर भी भूलते हो तो लगता है बहुत समय हो गया है आप को देखे।

आपके बिना मेरा दिल नही लगता आप अपनी कृपा बनाये रखना ताकि मै इस असार संसार में रहते हुए केवल सार को ही ग्रहण करूं

रामजीराम राम

श्रीराम
10.10 96

शब्द 40

मोहे निर्गुण सन गुणो विहूणा।
दया धार अपना कर लीन्हा। 2

II
मेरा मन तन हर गोपाल सोहाइआ
कर किरपा प्रभु घर मे आइआ 2
मोहे —

III
भगत वछल भय कारन हारे
संसार सागर अब उतरे पारे
मोहे —

IV
पतित पावन प्रभु बिरद वेद लिखिआ
पारब्रह्म मै नयनो पेखिआ
मोहे —

V
साध संग प्रगट नारायणा।
नानक दास सब दुख पलायणा॥
मोहे — —

राधास्वामी श्रीराम

शब्द 40 व्याख्या

किसी अनाथ बच्चे को अगर कोई करोड़पति गोद ले ले तो वह बच्चा उसी दिन करोड़पति कहलाता है।

ठीक इसी प्रकार जिस जीव को भगवान अपना बना लेते हैं, उसे फिर अपना रूप ही बना लेते हैं। जैसा कि इस शब्द में गुरुसाहेब फरमा रहे हैं मेरे में तो कोई भी गुण नहीं है जो मैं अपने राम जी को अपना बना सकूं परन्तु उन्होंने विवेक कृपा कर के स्वयं ही मुझे अपना लिया है। अब मेरा मन केवल अपने प्रियतम की स्मृति में ही आनन्द लेता है। क्योंकि भगवान ने अपनी कृपा की है और मेरे हृदय में निवास भगवान तो बहुत ही भगतों को प्यार करते हैं और भक्त के सारे भय दूर कर देते हैं इसलिए उन्होंने मुझे अपना मन्त्र जपवा २ कर मुझे संसार

सागर से पार कर दिया है। सारे वेद शास्त्रों का सारांश यही है कि भगवान सर्वशक्तिमान भी हैं और पतितों को पावन भी वही करते हैं। परन्तु वह प्रगट कैसे हों? केवल संतों का संग करने से। क्योंकि सतगुरु ही हमें युक्ति बताते हैं

(1) मन्त्रजाप अवश्य करो।

(2) दृढ़ विश्वास रखो।

(3) अहंता नहीं आने दो

(4) कृपा मांगो। (पूर्ण गोपाल जी की)

(5) संसार को असत्य मानो।

(6) अपने आप को भगवान का अंशसमझो

(7) उद्यम करो

(8) प्रत्येक कर्म भगवान की पूजा समझो।

शब्द ५१

निरगुरा राखि लीआ संतंन का सदका
सतिगुरु ढाक लिया मोहि पापी पर्दा

II

ढाकन होर प्रभु हमोर जीअ प्रान सुख दाते
अविनाशी अविगत स्वामी
पूरन पुरख बिधाते — निरगुरा – – –

III

उसतत कहन न जाइ तुम्हारी
कउरा कहे तू कद का
नानक दास ता के बलिहारि
मिले नाम इक निमका — निगुरा राखि

व्याख्या शब्द

अगर हमोर में अपने सतगुरु के अपने प्रभु को प्रसन्न करने के लिए गुरा नहीं है तो हम

निगुरी ही समझना है, प्रभु की प्रसन्नता के लिए जप, तप, सयंम, धारणा, ध्यान, समाधि और सौर सद्गुण होने चाहिए, जब हम संतो का साथ मिलता हैं तो पापी भी पुण्यवान हो जाते है फिर उन की लाज भगवान रखते है सतगुरु हमें ज्ञान देते हैं कि परमात्मा अविनाशी है अविनाशी हैं और हमारी भाग्य रेखा बनाने वाले हैं उन की उसतत हम पूर्ण रूप से नही कर सकते क्योंकि हम उन के विषय मे कुछ भी पता नही हैं हम कई जन्मो से संसार मे आ जा रहे परन्तु भगवान का नाम वैसे ही अटल है। हम तो केवल सतगुरु का दास बनना है और सदा अरदास करते रहना है कि नाम जरूर मिले और जपें।

शब्द 42

हरि चरण शरण गोविन्द दुख भजना।
दास अपने को नाम देवहो। 2
द्रिसटि प्रभ धारहो। किरपा कर तारहु
भुजा गहि कूप ते काढ लेवहो। 2

II

काम क्रोध कर अंध माया के बंध
अनिक दोख तन छाद पूरे
प्रभ बिन आन न राखणहारा।
नाम सिमरावहु शरण सूरे

हरि चरण - - -

III

पतित उद्धारणा जीअ जंत तारणा
बेद उच्चार नही अंत पाइआ
गुणह सुखसागरा ब्रहम रतनागरा।
भगति वछल नानक गाइआ

हरि चरण

IV

काम क्रोध लोभ झूठ निन्दा।
इन ते आप छडावहु
इह भीतर ते इन को डारो
आपन निकट बुलावहो
हर चरणा —

V

अपनी विधि आप जनावहो।
हरिजन मंगल गावहो।
बिसर नाही कबहु हिय ते
इह विधि मन मे पावहो
हर चरणा -

VI

बिसर नाही कबहु हिय ते
इह विधि मन मे पावहु
गुरु पूरा भेटिओ वडभागी
जन नानक कतहु न धावहो
हर चरणा -

व्याख्या शब्द (हरि चरण शरण)

हमें नित्य प्रति भगवान से इस प्रकार प्रार्थना करनी है। हे गोविन्द, हे मेरे सतगुरु मै आपके चरणो मे आप की शरण आई हूं मुझे आप अपना नाम जपाओ, आप का नाम तो सदा दुखों को दूर करने वाला है। मेरे पर ऐसी कृपा करो कि मेरा मुख सदा आप का ही गुणगान करे, मेरी आंखें सदा आप के ही दर्शन करे ऐसे ही मन बुद्धि तथा चित भी आप मुझे इस माया के (रूपी) अंधे कूँए से निकाल लो अर्थात मेरा जीवन कमल के समान हो। अभी तो मेरे मे बहुत अवगुण है कामनाएं क्रोध आदि यह सब विकारो से भरपूर हूं आप अपना नाम स्वयं मुझे जपाओ, कि सदा मै आपकी ही शरण मे रहूं। आपका नाम तो पापियो के

भी पवित्र कर देते हैं सब जीव आप के नाम के जाप से तर जाते हैं आप के सहस्र नाम हैं वेदो ने भी नेति नेति कह कर पुकारा है परन्तु मुझे तो आप का भक्तवत्सल नाम अति प्यारा लगा है/ अपने भक्तो की रक्षा करने वाले तो केवल आप ही हो शेष सारा संसार तो अपनी रक्षा ही नही कर सकता किसी की क्या करेगा।

केवल आप की कृपा से ही हम सुरक्षित हैं

प्रयत्न + कृपा = सफलता

राम जी राम रक्षा
श्रीराम,
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पड़ी ओपाला

पतित पावन प्रभु तेरो नाऊ

पूरन कर्म लिखे गुण गाऊ

II

सतिगुर सेव सर्व फल पाये

जन्म जन्म की मैल मिटाय

III

साधू संग व होवे उद्धार

शोभा पावे प्रभु के द्वार

IV

सर्व कल्याण चरण प्रभु सेवा

धूरि वाछहि सब सुर नर देवा

V

नानक पाया नाम निधान

हरि २ जप २ उधरिया सगल जहान

शब्द व्याख्या (पतित पावन)

हमें सदा अपने मन में दृढ़ विश्वास रखना

केवल गुरु मन्त्र जप ही हम पवित्र कर सकता हैं क्योंकि माया तो हर कदम पर हम अपनी ओर खींचती हैं फिर हम दुखी हो जाते है। परन्तु यह जप भी तो पिछले कर्मो का फल हैं हर एक नहीं हर समय जाप कर सकता है। सतगुरु जी की सेवा करने से हमारे जन्म जन्मान्तरो के पापो का नाश हो जाता हैं। संतो का संग करने से ही जीव का उद्धार हो सकता हैं फिर उसे परलोक में भी शोभा मिलती हैं।

महाराज फरमाते हैं कि पहले मैंने इस नाम को अपने अन्तर मे एकत्र किया फिर सब लोगो को बताया। जिस से संसार मे कइयो का उद्धार हो गया। हमे भी ऐसी शक्ति दो।

५५ शब्द (मो को तार लै)

ससांर समुद्र तार गोबिन्द
मो को तार लै बाप बीठला

II

लोभ लहर अति नीझर बाजे
काया डूबे केशवा
मो को तार -

III

अनिल बेड़ा हउ खेव न सांकउ
तेरा पार न पाइआ बीठला
होहु दयाल सतगुरु मेल तू
मो को पार उतारे केशवा
मो को तार -

IV

नामा कहे हउ तर भी न जानउ
मो को बांह दे बांह दे बीठला

राम जी राम राम श्रीराम
28.11.96

हमें सदा अपने राम जी के आगे प्रार्थना करनी है ? हे राम जी मुझे इस संसार रूपी सागर से पार कर देना। इस सागर में लोभ की और विकारों की लहरें बहुत उछलती हैं जैसे कि नामदेव जी कह रहे हैं हे बीठला (सुन्दर रामजी) आप अपनी बाह दे कर मुझे इस संसार रूपी सागर से पार लगा देना।

इन सब विकारों की दवा केवल एक ही है ? सतगुरु की कृपा

इसलिए बोलो।

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूरी गोपाला।

रामजी राम राम श्रीराम
28.11.91

हरिजू राख लेहो पति मेरी
जम को त्रास भयो उर अंतर
शरण गही कृपानिधि तेरी
हरि जीओ

II

महा पतित मुग्ध लोभी फुनि
करत पाप अब हारा
भय मरबै को बिसरत नाही
तिहं चिंता तन जारा
हरि जीओ

III

किए उपाव मुकत के कारण
दह दिस को उठ धाया
घर ही भीतर बसै निरंजन
ता को मरम न पाइआ
हरि जीओ
नाहिन गुण नाहिन कछु जप ताप
कउन करम अब कीजे

SM

नानक हार परिओ शरणागत
अभय दान प्रभु दीजे
रामजी राम राम श्रीराम

दीनाबन्धु दीनानाथ
मेरी डोरी तेरे हाथ

इसी प्रकार हम भगवान से प्रार्थना करती हैं
हे हरि जी आप मेरी लाज रखना। क्योंकि ऐसा हमारे
वेद शास्त्रो से पता लगता है कि जो लोग
इस ससांर मे तामस हो जाते हैं गन्दे 2 काम
करते है उन्हे जमपुर मे जाना पड़ता हैं वहां
कई प्रकार की सजायें मिलती हैं इस लिए
चिन्ता करनी है हमारी ऐसे न हो।

मुक्ति के लिए ज़्यादा भटकने की

आवश्यकता नहीं है, केवल अपनी वृत्ति को अन्तर्मुख करना है। अपने आप को अपने प्रभु के सामने बिल्कुल निर्गुणी समझना है और सदा शरण में रहना है, इस प्रकार से अभय दान की प्राप्ति हो सकती है

रामजीरामराम श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर पूरी गोपाल।।"

56 शब्द (मिठबोलड़ा)

मिठबोलड़ा जी, हरि सज्जन स्वामी मोरा
हउ समलथकी जी ओह कदे न बोले कउड़ा

II

कउड़ा बोल न जाणै पूर्ण भगवाने
अउगण को न चितारे
पतित पावन हरि बिरदु सदाए
इक तिल नही भन्ने घाले

III

घट घट वासी सर्व निवासी
मेरे ही ते नेरा
नानक दास सदा शरणागत
हरि अमृत सजण मेरा

रामजीराम राम
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरो आर पूर्ण गोपाला।

(भावार्थ)

(1) अगर हमारे सतगुरु प्रीतम प्यारे हरसमय मीठा बोलते हैं तो हम भी सदा प्रेम से बोलना चाहिए नम्रता मे रहना चाहिए।

(2) वही पुरुष है जो अपने पर संयम रख सकता है, वही दूसरों को भी पवित्र कर सकता है। अपने सतगुरु की सेवा की हुई कभी भी व्यर्थ नही जाती

(3) हम सदा अपने प्रभु सतगुरु की शरण मे ही रहना चाहिए क्योंकि वही हमारे सदा अंग संग रह सकते हैं संसारी नही।

राम जी राम राम

श्री राम
29.11.96

श्रीराम

शब्द 47 (श्री कृष्णा जी की वाणी)

तेरे बंके लोइड़ दंत रसाला
सोहड़े नक जिन लगड़े वाला
कंचनं काया सोइन की दाला
किसन माला जपहु तुसी सहेलिओ
II
जम द्वार न होहु खड़ियां
सिन सुणो सहेलिओ
हंस हंसा नगा नगा, लहे मन की ज्वाला
बंके लोइड़ं दंत रसाला

रामजी राम राम श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला
29.11.96

कोऊ हरि समान नहीं राजा 2

ऐह भूपति सब दिवस चार के
झूठे करत दिवाजा।

II

तेरो जन होय सोय कत डोले
तीन भवन पर छाजा।
कोई - -

III

हाथ पसार सके को जन को
बोल सके न अदांजा।
कोऊ —

IV

चेत अचेत मूढ़ मन मेरे
बाजे अनहद बाजा।
कोऊ - -

V

कहे कबीर संशय भ्रम चूके
ध्रुव प्रह्लाद निवाजा।
कोऊ .

शब्द (भावार्थ)

1 हरि (विष्णु भगवान) परमात्मा के समान संसार में भी कोई भी राजा नहीं है क्योंकि भगवान तो सब के रचयिता है

(2) यह संसार के छोटे 2 राजा तो सब पानी के बुदबुद है, यह झूठे ही संसार को सत्य समझ कर दिखावा करते रहते है

(3) जो भगवान के भक्त है वह तो राजाओं से भी बड़े हैं क्योंकि वह तो कभी भी नही डोलते और तीनो लोको मे उन को जय 2 कार होती है

(4) भगवान के वास्तविक भक्त केवल अपने प्रभु को ही मानते है और किसी के

से कुछ नही चाहते, वह अपनी पूर्ण शक्ति से भगवान को ही प्रसन्न करते हैं जिससे आगे कोई इच्छा ही नही रहती

(5) इस मन को सदा साधते रहते हैं और फिर पूर्ण एकाग्रता के द्वारा अन्तर में अनहद नाद भी सुनते हैं

वह मन में किसी प्रकार का भी संशय नही करते। पुरातन भक्तों के इतिहास द्वारा अपनी भक्ति को पूर्ण करते हैं।

रामजी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला
1.12.96

शब्द 49

ऊच अपार बेअंत स्वामी

कौन जाणे गुण तेरे

II

गावते उधरे सुनतेभीउधरे

बिनसे पाप घनेरे

III

पशु परेत मुगध को तारे

पाहन पार उतारे

IV

नानक दास तेरी शरणाइ

सदा २ बलिहारे

भावार्थ

भगवान बहुत ही अपार है उन के गुण कोई नही जान सकता। केवल उन का नाम गाने से और सुनने से ही सब पार हो सकते है

50 शब्द (वडी तेरी वडआई।

वडी तेरी वडआई दाता

वडी तेरी वडआई

वडी तेरी —

II

इक किआ सालाहीं किरम जंत

वडी तेरी वडआई

वडी तेरी

III

तू अगम दयाल अगम है

आप लैहो मिलाई

वडी तेरी —

IV

मैं तुम बिन बेली को नहीं

तू अंत सखाई

वडी तेरी —

V

जो तेरी शरणागति तिन लैहो छडाइ

नानक बेपरवाह हैं तिस तिल न तमाई

शब्द व्याख्या।

जिन जीवों पर भगवान की पूर्ण कृपा होती है, वह अभिमान नहीं करते। हर समय हर कार्य मे अपने रामजी की ही बड़ाई समझते है, अपने आप को एक छोटा सा कृमि समझते हैं (जो कि वास्तव मे हैं सही) परमात्मा तो अगम है अपार है वह आप ही हमें अपना रूप बना सकते हैं।

हमें उन की जरूरत है, क्योंकि उन के बिना हमारा कोई भी सच्चा मित्र सम्बन्धी नहीं है शेष सारा संसार तो स्वार्थ का है

हमें दृढ़ विश्वास रखना है कि अगर हम उन की शरण मे रहेंगे तो इस असार संसार से तर जायेंगे और कृपा भगवान ही शरणागति है
रामजीरामराम श्रीराम 1.12.96

शब्द 51

पिता मेरो बड़ा धनी अगम

पिता मेरा बड़ो धनी अगम 2

उपतत कवन करीजे कर्ते पाव रहे विसमा

II

राजन में तू राजा कहिए जूझन मे जूझा

ठाकुर में ठकुराई तेरी, कौमन सिर कौमा

III

पिता - -

सुविअन मे सुविया तू कहिए

दातान सिर दाता

तेजन मे तेजस्वी कहिए

रसियन माहि रसा ।

IV

सूरन मे सूरा तूँ कहिअह जोगन मे जोगी

गृहस्थन मे तूं बड़ा गृहस्थी, जोगन मे जोगी

V

करतन में तूं कर्ता कहिअह, आचारन मे आचारी

~~साहन मे तू साचा साही वापारन मे वापारी~~

पिता –

VI

दरवारन मे तेरो दरवारा सरन पालन टीका

लाखनी केतरू गनी न जाइ गनत न लख्यउ सीका

VII

नामन मे तेरो प्रभु नामा ज्ञानन मे ज्ञानी

जुगतन मे तेरी प्रभु जुगता, इसनानन मे इसनानी

VIII

सिद्धन मे तेरी प्रभु सिद्धा, करमन सिर करमा

आगिआ महि प्रभु तेरी आज्ञा, हुकमन सिर हुकमा

X

जिउ बुलावहु तिउ बोलहि स्वामी

कुदरत कवन हमारी

साध संग नानक जस गाइओ

जो प्रभु की अति प्यारी

श्रीराम

(शब्द का भावार्थ)

(1) हम अपने राम जी की महिमा नहीं जान सकते

(2) हर एक वस्तु का सार वह है, जैसे राजा में राजा का तत्व वह है। शरीर तो राजे का तथा भिखारी का एक जैसा होता है परन्तु राजा में जो तत्व वृत्ति है वह भगवान के द्वारा दी गई है उस के अच्छे कर्मों के द्वारा ऐसी सब वस्तुओं का तत्त्व रूप राम जी है

दाताओं में सब से बड़ा दाता वह है

शूरवीरों में सब से बड़े शूरवीर वह है

महर्षियों में जो महान पूरी तपस्या ठीक है वह भगवान का रूप है

सब दरबारो मे सब से अच्छा दरबार वह है
किकारो वाले दरबार भी है जैसे क्लब आदि
परन्तु सतसंग का दरबार सब से अच्छा है
वह भगवान है

नाम बहुत सारे है परन्तु जिस नाम से
पाप क्षय होते है वह है राम का नाम
तो वह नाम भगवान है
सिद्ध बहुत सारे है परन्तु जो पूर्ण सिद्ध है
वह भगवान का रूप है
संत तो भगवान को प्यारे है ही परन्तु जो
संतो का संग करता है वह भी भगवान को
प्यारा लगता है।

रामजी राम राम — श्रीराम
6. 12. 96

इउ वारि वञ्जां घोली वञ्जा
तूं परवत मेरा ओला राम

II

हउ बलि जाई लावे 2 वारयां
जिन भ्रम परदा खोला राम

III

मिटे अंधोर तजे विकारे
ठाकुर सिउ मन माना राम

IV

प्रभ जी भाणी भई निकाणी
सफल जनम परवाणा राम

V

भई अमोली भारा तोली
मुक्ति जुगति दर खोला राम

V

कहो नानक हउ निरभय होई
सो प्रभु मेरा ओला राम

शब्द व्याख्या

(1) हे रामजी मैं आप पर सदा बलिहार जाती हूं। आपने मुझे सीधे रास्ते लगाया। आपने ही बताया कि ज्यों २ हम ज्यादा नाम जाप करेंगे, रामजी हमें अपना आश्रय देंगे पर्वत जैसा आश्रय मिलेगा (अर्थात पक्का आश्रय मिलेगा)।

(2) मैं आप पर सदा बलिहार जाती हूं कि आपने मेरे सारे भ्रम मिटा दिये, अब तो हर समय आप की ही याद मे रहना है, नाम जपना है आप के लिए ही जीना है

(3) अब मेरा सारा अज्ञानता का अंधेरा समाप्त हो गया है, जब मेरा मन आप मे रम गया है तो सारे विकार भी समाप्त हो गये हैं

(4) ज्यों २ मेरा मन रामजी की ओर खिंचने लगा। त्यों त्यों, मै संसार की मोह माया से अलग होती गई और अपने प्रियतम रामजी को पा गई, मानो मेरा जन्म सफल हो गया

(5) मुझे संसार मे रहने की युक्ति आ गई तो मेरा मोल बढ़ गया। (जिसे संसार मे कुछ भी नही चाहिए उस का मूल्य बढ़ जाता है। यह दशा केवल रामजी की कृपा से बन सकती है

(6) जब ऐसा दृढ़ आश्रय मिल जाता है तो यह जीव निर्भय हो जाता है क्योंकि हमारी वासनाए ही हमे पराधीन बनाती है

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुआ बेपरवाह
जिस को कुछ न चाहिए वही शहनशाह

रामजीराम
राम 16.12.96

शब्द 53

कबहु न बिसरे हिय मोरे ते
नानक दास यही दान मंगा

II

धीरज देव तुम्हारे रंगा
धीरज देव तुम्हारे रंगा

कबहु न - - - -

III

तू ही स्वामी अन्तरयामी
तू ही बसे साध के संगा

कबहु न - - -

IV

तिन माहि थाप निवाजे ठाकुर
नीच कीट ते करे राजंगा

कबहु न - -

रामजीराम राम
श्रीराम
16.12.96

शब्द व्याख्या

हमें सदा राम जी के चरण कमल पर प्रार्थना करनी चाहिए उन से धैर्य का दान मांगना चाहिए और धैर्य भी उन्ही को रहता है जो सदा नाम जपते रहते हैं इस लिए प्रभाव रूप से तो नाम दान ही मांगना चाहिए राम जी तो पूर्ण हैं अन्तर्यामी हैं और वह सदा संतो के हृदय मे विराजमान रहते हैं। वह जो चाहे कर सकते हैं वह चाहे तो कीड़े को राजा बना दे चाहे तो राजे को कीड़ा बना दे

मसकहि करहि विरंचि प्रभु
अजहि मसक ते हीन
अस समरथ रघुनायकहि
[illegible] (रामायण)

मानदीनाथ राय ओझा 17.12.91

हरि की गति नहीं कोऊ जाने

हरि की गति नहीं कोऊ जाने

II

जोगी जपी तपी पच हारे

अरु बहु लोग सयाने

हरि की -

III

छिन में राउ रंक को करहि

राउ रंक कर डार

रीते भरे भरे सखनावे

यह तो को व्यवहार

हरि की -

IV

अपनी माया आप पसारी

आपे देखनहार।

नाना रूप धरे बहुरंगी

सब ते रहे न्यारा

हरि की —

V

अगमत अपार अलख निरंजन
जिह सब जग भरमाइआ
सगल भरम तज नानक प्राणी
चरणा ताही चित लाइआ

शब्द व्याख्या

प्रभु जी तुम बड़े दयालु हो
किसी ने तेरा भेद न पाया है
तेरा यश गीता वेदों ने
नेति नेति गाया है

इसी विचार को इस शब्द में प्रकट किया है कि परमात्मा की गति विधि को कोई नहीं जान सकता और ऋषि मुनि तपस्वियों और सब हार गये। भगवन चाहे तो राजा को रंक (गरीब) कर देवे। वह चाहे तो फकीर को

राज सिंहासन दे दें प्रभु अपनी माया डाल देते हैं फिर आप ही इस का रूप बन जाते है, आप ही सब कुछ धारण करते हैं और आप सब से न्यारे भी रहते हैं, परन्तु हम अल्पज्ञ जीव झूठा सा परिवार बना कर उसी मे ही फंस जाते है और अपना सब कुछ लुटा देते हैं परन्तु भगवान तो साकार भी हैं और निराकार भी है उन्होंने ही सारा जगत भ्रम मे डाल रखा है यह झूठ है परन्तु सत्य भासित होता है, इसलिए मैं तेरा भार भेद भाव भ्रम मिटा के आपकी शरण आया हूँ प्रभु क्षमा कर दो और अपनी भक्ति प्रदान कर दो

राधेश्याम राधेश्याम श्रीराम
17.12.96

शब्द 55

ऐसी मेरे लाल २ ऐसी मेरे लाल

तुम बिन कौन करे

गरीब निवाज गुसइआ मेरा

माथे छत्र धरे

माथे छत्र धरे, लाल तुम बिन कौन करे

ऐसी मेरे - - -

II

जा की छोति जगत को लागे

ता पै तूँही ढरे

" " " "

लाल तुम बिन कवन करे

ऐसी - - -

III

नीचहु ऊच करे मेरा गोबिंद

काहू ते न डरै

" " " "

लाल तुम बिन कवन करे

ऐसी मेरे - - -

नामदेव कबीर त्रिलोचन

सदना सैन तरे

लाल तुम बिन कवन करे

ऐसो मेरे लाल

शब्द व्याख्या (साराश)

केवल रामजी ही ऐसे है जो नीचो को ऊंचा कर सकते है और निम्न लोगो को प्यार करते है, वह डरते नही हैं किसी से भी जैसे नामदेव कबीर त्रैलोचन, सदना आदि सब निम्न जातियो से भी प्रेम किया हम भी उन्ही का अनुकरण करना चाहिए

शब्द 56

सब गोविन्द है सब गोविन्द है
गोविन्द बिन नही कोई 2

II

ऐक अनेक व्यापक पूरक
जत देखा तत सोई 2
माया चित्र विचित्र विमोहित
विरला बूझे कोई 2
सब गोविन्द -

III

सूत एक, मणी सत सहस जैस
ओत प्रोत प्रभु सोई 2
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा
जल ते भिन्न न होई
सब गोविन्द है

IV

एह परपंच पारब्रहम की लीला
विचरत आन न होई

V

सिधिआ जुग और सुपन मनोरथ

सत पदारथ जानिआ

सुकृत मनसा, गुरु उपदेसी

जानत ही मन मानिआ

VI

कहत नामदेव हरि की रचना

हृदय देख विचारी

घट घट अन्तर सर्व निरंतर

केवल एक मुरारी

सब गोबिन्द

रामजी राम राम
श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला

तेरी आस पूर्ण गोपाला

"श्रीराम"

शब्द 57

अव्वल अलह नूर उपाइआ
कुदरत दे सब बन्दे
एक नूर ते सब जग उपजिआ
कौन भले कौन मन्दे राम जी राम राम 2+2

II

लोगा भरम न भूलहो भाई
खालिक खलक, खलक माहि खालक
पूर रहिओ सर्ब थाई राम जी राम राम 4

III

माटी एक अनेक भांति कर
साजी साजन होर
न किछ पोच माटी के भांडे
न किछ पोच कुम्हारे राम जी राम राम

IV

सब मे सचा एको सोई

तिस का किआ सकबीद होई
कुरम पढारो तो सको जानो
बन्दा कहिए सोई

राम जी राम राम 5

VII

अल्लह अलख न जाई लखिआ
गुरु गुड़ दीन्हा मीठा
कहे कबीर मेरी शंका नासी
सर्व निरंजन डीठा

राम जी राम राम

शब्द व्याख्या

हम सब मे परम पिता परमात्मा की ज्योति देखते रहते है इस लिए सब को राम जी के नाम से पुकारते है जैसे राम जी, राम राम जी राम राम। गुरु महाराज एक ही इशारा कर रहे है हम समझा रहे है

(कुछ पंक्ति)

1 सियाराममय सब जग जानी

2 सो मम ... सब ... (गीता)

3 सर्वं खलु ... (गुरुवाणी)

(4) तुम मे राम तुम मे राम — वेद वाक्य

एक ही पिता जो सब का दाता (बाइबिल)

वही सतगुरु कबीर जी कह रहे हैं कि हम सब एक ही पिता की सन्तान है और हमारा प्यारा प्रभु सब मे रम रहा है। जैसे मिट्टी के बर्तन अलग २ हैं परन्तु माटी तो सब मे एक ही होती है, जो ऐसा पहचानता है वही वास्तव में मनुष्य है, परन्तु सद्गुरु सतगुरु ही हमें मिलाप दे सकते हैं कि हम अपने निराकार प्रभु को साकार मे देख

(शब्द 58)

मिहरवान मिहरवान साहिब मेरा मिहरवान 2
जीअ सगल को देवे दान - साहब ----
तूँ काहे डोले प्राणीआ तुध राखेगा सिरजणहार
जिन पैदाइस तू कीआ सोई दे आधार

मेहरवान --

II

जिन उपाई मेदनी, सोई करदा सार
घट घट मालिक दिला दा सच्चा परवरदिगार

मेहरवान - -

III

कुदरत कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाह
कर बन्दे तू बन्दगी, जिचर घट मे साह

मेहरवान -

IV

तू समरथ अकथ अगोचर जीउ पिंड तेरी रास
रहम तेरी सुख पाया, जन नानक की अरदास

[illegible]
20.12.96

शब्द व्याख्या

ऐसी कर किरपा भगवान मेरा मन कदे भी डोले ना

यही भाव इस शब्द मे दर्शाया गया है कि जो दाता सब की प्रतिपालना करता है वह बहुत ही दयालु भी है, जिस ने तुम्हे उत्पन्न किया है वही तुम्हे आधारा भी देगा, भगवान ने सारी सृष्टि की रचना की है जैसा कि वेदवाणी कहती है। पहले भगवान एक थे उन्होने ने विचार किया "एकोऽहम् बहुस्याम"

फिर भगवान के बहुत सारे रूप होय गये इस लिए हम ऐसा भाव निरन्तर रखना चाहिए कि हम सब एक ही है जैसा कि रामायण भी इसी विचार को दर्शाती है

(शब्द चौटियाँ में हरवान

हम संसारिक प्राणी जरा सी विपरीत परिस्थिति आने पर घबरा जाते हैं। अगर हमने अपना जीवन किसी सतगुरु की देख रेख में रख लिया है तो वह हमे बाहर से भी और अन्दर से भी सम्भाले भी रहते हैं और अपना गुरु मन्त्र जपवा कर आन्तरिक शक्ति भी बढ़ाते रहते हैं। वह सिमरन पर ज्यादा बल देते हुए रोज 2 हमारी आन्तरिक शक्ति को बढ़ाते रहते हैं जिस से हमारा मन इन स्थूल वस्तुओं से ऊपर उठ जाता है। और सेवक अपने सतगुरु को समरथ जान कर अगम अपार गुणों से भरपूर देखता है तो कभी भी नहीं डोलता।

शब्द 59

रोगी का प्रभु खंडहु रोग
दुखिये का मिटावहु सोग
निर्धन को तुम देवहु धन
अनिक पाप जाये निर्मल मन

II

सफल सेवा गोपाल राय
करन करावनहार स्वामी
ता ते बिरथा कोई नाही

III

निथावें को तुम थान बिठावहु
दास अपने को भक्ति लावहु
निमाणे को तुम देतो मान
मूढ़ मुग्ध होय चतुर सुजान

IV

IV

सगल मइआनि, का मउ नास

जन अपने के हरि मन वास

V

पारब्रहम प्रभु सुख निधान

तत ज्ञान हरि अमृत नाम

कर किरपा संत टहल लाये

नानक साधु संग समाये

"शब्द व्याख्या"

"जो जो दीसै सोई सोई रोगी

रोग रहित मेरा सतगुर योगी"

जो सदा निरोग रहता है वही कामना करता है कि सब निरोग हो सुखी हो, इसी लिए सतगुरु यह आशीर्वाद दे रहे हैं कि इस मृत्यु लोक में सभी दुखी हैं किसी को अन्दर के रोग हैं

कइयों को बाहर के रोग हैं। हे राम जी आप आप सब रोगियों के रोग हर लो। सब धनवान हों सुखी हों और अपने भक्तों को आप भक्ति भी दो। जिन का मन स्थिर नहीं है उन्हें स्थिरता दो, जिन को कोई भी मान नहीं देता उन्हें आप मान देते हो। कितना भी कोई मुगध अनजान हो उन्हें आप चतुर बना देते हो। जिस के हृदय में आप बस जाते हो उस के सब भय दूर हो जाते हैं। यह जीव भय में ही आता है जन्म के समय भय सारा जीवन भय में ही रहता है और अन्त में मृत्यु के भय में ही चला जाता है। परन्तु जो भक्ति भावना में हो जाते हैं उन के सारे भय समाप्त हो जाते हैं क्योंकि उन से कोई गल्त काम ही नहीं होता।

इस लिए हमें सदा यही अरदास करनी चाहिए कि हमें सन्तों की सेवा मिले और उनके में ही समाये रहें (अर्थात सतगुरु की आज्ञा में रहें

राम जी राम राम श्रीराम
22.12.96

60 शब्द (प्रभु मेरो)

प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई
मन मोहन मेरे जीअ को प्यारो
कवन कहा गुण गाई
प्रभु मेरो —
II
खेल खिलावे लाड लडावे
सदा सदा अनदाई
प्रभु मेरो —
प्रति पाले बारिक की न्याई
जैसे मात पिताई प्रभु मेरो —

तिस बिन निमख नही रह सकूं
बिसर न कबहुं जाई
प्रभु मेरो
कहे नानक मिल संत संगत ते
मगन भये लिव लाई
प्रभु मेरो इत उत -
22.12.96
व्याख्या (सारांश)

1 मेरे राम जी सदा मेरे साथ हैं
2. वह मेरी छोटे बालक की तरह रक्षा करते हैं
3. उन के बिना मैं अब नहीं रह सकती
4. उन का संग करने से मेरे मे मस्ती आ जाती है
5. ऐसी ही अवस्था बनाये रखना
राम जी राम राम श्री राम

शब्द 61

जिस दा साहिब डाढा होय

तिस नू मार न साके कोय

" " " "

" " " "

" " " "

" " " "

जिस दा - - .

II

साहिब की सेवक रहे शरणाई

आपे बख्शे दे वडआई

जिसदा - - -

III

तिस ते ऊपर नाही कोय

कौन डरे डर किस का होय

जिसदा - .

IV

गुरमत शान्ता वसे शरीर

शब्द चीन्ह फिर लगे न पीर

जिस दा -

V

आवे न जाये न ड्रान पाय

सहजे राते सहज समाय
जिमदा

नानक गुरमुख वेखे हदूर
मेरा प्रभ सद रहया भरपूर
जिमदा - .

(1) साधक को अपने राम जी पर पूरा विश्वास होता है कि अगर वह मेरे रक्षक हैं तो उसे कोई भी कुछ नहीं कर सकता।

(2) साधक वही है जिस को ध्यान हर समय अपने राम जी की ओर ही रहता है उन्ही का नाम जाप उन्ही का कार्य सेवा संसार को महत्ता नहीं देता

(3) ऐसा साधक जब सहज अवस्था में हो जाता है तो उस को आवागमन का

चक्कर भी फिर जाती है

इस लिए रामजी सदा यही उपदेश देते है कि सदा अपना मुख इधर ही रखो क्योंकि परमात्मा तो सब जगह भरपूर है केवल हमने अपनी वृत्ति को एकाग्र सब कर उसी को देखना है

रामजी राम राम श्रीराम.
24.12.96

श्रीराम

शब्द 62

घर बाहर तेरा भरवासा।
तू जन के है संग।
कर किरपा प्रीतम प्रभु मेरे
नाम जपु हर रंग

घर बाहर - -

II

जन को प्रभु अपने का तारा
जो तू करे कोव करेवा स्वामी
सा मसलत परवाणा

घर बाहर —

III

पत परमेश्वर गति नारायणा।
धन गोपाल गुण साखी
चरण शरण नानक दास हर हर
संती रेह विधि जाती

रामजी राम राम श्रीराम 25.12.96

शब्द व्याख्या

(1) रामजी के भक्त को सदा अपने रामजी पर पक्का विश्वास होता है। वह उनसे केवल एक ही प्रार्थना करता है कि जिस परिस्थिति मे भी हो वास वह आप का ही ध्यान करे नाम जाप करे

(2) ऐसे मंत्र जाप करते २ उस की बुद्धि तथा मन परिवर्तित हो जायेगा फिर वह हर हाल मे प्रसन्न रहेगा।

(3) उस को यह मालूम हो जायेगा कि उस की लाज केवल ईश्वर ही रख सकता है और उस की गति केवल सिमरण भजन ही कर सकता है

श्रीराम

शब्द 63

कर किरपा प्रभु दीनदयाला।

तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

II

अन्तरयामी सो प्रभु पूरा।

दान देओ साधु की धूरा।

III

जल थल महिअल रहिआ भरपूरे

निकट वसे नाही प्रभु दूरे

III

जिस नू नदर करे सो ध्यावे

आठ पहर हर के गुण गावे

IV

जीअ जंत सगरे प्रतिपाले

शरण परिओ नानक हर द्वारे

रामजी रामराम श्री राम

25.12.96

(शब्द व्याख्या)

भगवान की कृपा तो सब पर है परन्तु ऐसी कृपा नहीं है ?

(1) साधक वेद और भगवान को पूरी सगोम केवल उन्ही की शरण मे रहे

(2) अपने इष्टदेव को अन्तरयामी समझे और उन से केवल संतो के संग की ही याचना करे ।

(3) अपने रामजी को सब जगह विद्यमान समझे और उन से डरे ताकि कोई अशुभ कर्म न हो ।

(4) वह केवल अपने रामजी का ही ध्यान धरता रहे और उसे विश्वास हो कि शेष सब की प्रतिपालना आपने आप ही हो जायेगी

शब्द 64

दीन दुनिया तेरी टेक
सब में रमिआ साहब एक
दीन ---

II

तेरी टेक रहे कल माही
तेरी टेक तेरे गुण गाहे
तेरी टेक न पोहे काल
तेरी टेक बिनसे जंजाल

III

तेरी टेक करउ आनन्द
तेरी टेक जपु गुरमन्त्र
तेरी टेक तरिए भवसागर
राखनहार पूरा सुखसागर

IV

तेरी टेक नाही भउ कोय
अन्तरयामी साचा सोय

~~तेरी टेक तेरा नाम तेरा~~

~~इहां उहां तू दिखाणा~~

तेरी टेक तेरा भरवासा

सगल दया करहि प्रभु गुसाईं

जय जय आनन्द करे तेरे दासा

सिमर नानक साचे गुसाईं

नामजी रामराम श्रीराम

25.12.98

शब्द व्याख्या

संसार में दो प्रकार की दुनिया है एक धन-वालों की अहंता ममता वालों की और दूसरी गरीबों की भोले भालों की, दीन लोग हमेशा भगवान का आश्रय लेते हैं और उसके फल-स्वरूप उन्हें इतने लाभ होते हैं ?

1 वह कहते हैं हे राम जी!

अगर सदा हम आप की ही कृपा मागते है

और आप का नाम जाप करते हैं तो ?

इस कलियुग मे सुखी रहेगे आप के

ही गुण गायेगे। आप की ओट ले कर

हमें काल भी नही डरा सकता। आप का

आश्रय रखेगे तो सब जजालो से भी मुक्त

हो जायेगे।

रामजीराम राम
श्रीराम
साहिब
सतनाम
श्रीराम
9.11.97

Tomorrow

January
Wednesday
1

श्रीराम

2ोद 65

अब हम चली ठाकुर पै हार 2

जब हम शरणि प्रभु की आई

राख प्रभु भावे मार

अब हम - - .

II

लोकन की चतुराई उपमा
ते वैसंतर जार
कोई भला कहो भावे बुरा कहो
हम तन दीओ है ढारि

अब हम

III

जो आवत शरणि ठाकुर प्रभु तुम्हरी
तिस राखहु किरपा धारि
जन नानक शरणि तुम्हारी हरि जीउ
राखहो लाज मुरारि

अब हम चली

रामजी राम राम
श्रीराम

INDIAN FESTIVAL 1997

LOHRI - 13TH JANUARY, MONDAY

MAKAR SANKRANTI/PONGAL/MAGHA BIHU - 14TH JANUARY, TUESDAY A major harvest festival of India. It is one of the biggest events in the states of Tamil Nadu, Karnataka and Andhra Pradesh. Bull fights and Bullock races are an important feature of the celebrations. Also celebrated in the eastern region when millions of pilgrims take a holy dip in the Ganges.

REPUBLIC DAY - 26TH JANUARY, SUNDAY The National festival of India observed throughout the country to mark the inauguration of the Republic of India on January 26, 1950. In Delhi, the celebrations include a magnificent Parade of the Armed Forces, folk dances and floats from all the different states of India.

BASANT PANCHAMI/SRI PANCHAMI - 11TH FEBRUARY, TUESDAY A welcome to the Spring season. Kite flying competitions are held specially in Northern India. Yellow Colour Clothes are worn by the male and female. The Goddess of learning. 'Saraswati' is worshipped on Sri Panchami day by students in eastern India.

*** ID-UL-FITTAR (RAMJAN ID) - 10TH FEBRUARY, MONDAY** Celebrated to mark the end of Ramzan, the Muslim month of fasting. It is an occasion for feasting and rejoicing.

MAHA SHIV RATRI - 7TH MARCH, FRIDAY Hindus perform puja of Lord Shiv by fasting on this day.

HOLI/DULHENDI 23-24TH MARCH, SUNDAY-MONDAY The most boisterous of India's festivals, observed all over India. Men, women and children throw coloured water and powder on one another. Greetings and sweets are exchanged among friends and relatives.

AMBEDKAR JAYANTI - 14TH APRIL, SUNDAY The birth anniversary of Dr. Baba Saheb Ambedkar, the founder of constitution of India.

RAMNAVAMI - 16TH APRIL, WEDNESDAY Birthday of Lord Rama is celebrated all over India. The epic Ramayana is recited in temples and homes.

*** ID-UL-ZUHA (BAKRID) - 18TH APRIL, FRIDAY** Observed by Muslims to commemorate the Prophet Ibrahim's offer to sacrifice his son.

MAHAVIR JAYANTI - 20TH APRIL, SUNDAY Celebrated by Jains to mark the birth of Lord Mahavir.

BAISAKHI - 13TH APRIL, SUNDAY Baisakhi is a very popular festival of Punjab. It is celebrated to mark the start of harvesting season. To rejoice this occasion, Bhangras and Gidha dances are performed all over the Punjab.

*** MUHARRAM - 18TH MAY, SUNDAY** Commemorates the martyrdom of Imam Hussain, the grandson of the Prophet Muhammad. Tazias, symbolic of the Martyr's tomb at Karbala, are carried in mourning processions. Muharram, as observed in Lucknow, is famous.

BUDH PURNIMA - 22ND MAY, THURSDAY This full moon day is celebrated as the day of birth, enlightenment and Mahaparinivana or Salvation of Buddha.

INDEPENDENCE DAY - 15TH AUGUST, FRIDAY The anniversary of India's independence, won on this day in 1947.

RAKSHA BANDHAN - 18TH AUGUST, MONDAY Celebrated by Hindus particularly in northern India, Sisters tie Holy Thread/Rakhi on the wrists of their brothers wishing their long life. Brothers take oath to protect their honour and help them in adversitis.

JANAMASHTMI - 25TH AUGUST, MONDAY The birth anniversary of Lord Krishna, celebrated with great enthusiasm all over India, specially at Mathura and Vrindaban.

GANDHI JAYANTI - 2ND OCTOBER, THURSDAY The birth anniversary of Mahatma Gandhi, the father of the Nation, is celebrated with reverence all over the country.

DUSSEHRA/DURGA PUJA - 11TH OCTOBER, SATURDAY Based on the epic story of Ramayana, the ten day Dussehra festival, signifying the triumph of good over evil, is celebrated all over the country. In north India, the Ramlila is staged to commemorate the heroism of Lord Rama. In Bengal, it is observed as Durga Puja and images of the warrior Goddess Durga are immersed in lakes and rivers after four days of worship.

DEEPAWALI / LAXMI PUJA - 30TH OCTOBER, THURSDAY The brightest Indian festival when every city, town and village is turned into a fairyland with millions of electric lights, candles and oil lamps illuminating homes and public buildings. A special feature of the festival is the worship of Laxmi, the Goddess of wealth and prosperity.

GURU NANAK JAYANTI - 14TH NOVEMBER, FRIDAY The birth anniversary of Gurunanak, the founder of Sikhism, is celebrated with great devotion by the Sikh community.

CHRISTMAS DAY-25TH DECEMBER, THURSDAY The birth of Jesus Christ is celebrated in India, with the traditional exchange of greetings and gifts.

BANK HOLIDAY - 1ST WORKING DAY OF APRIL

** Subject to appearance of the moon*

While great care is taken in compiling the information in this Diary the publisher cannot accept responsibility for any error

"श्रीराम"

(गर्भाव)

जब साधक राम जी के मार्ग की ओर अग्रसर होता है तो फिर वह संसार की परवाह नहीं करता उसे शक्ति भी राम जी स्वयं देते हैं वह निर्भय हो जाता है। उसे अपने इष्टदेव का बल होता है

वह पूरा समर्पण कर देता। संसार चाहे उस की उसतति करे या निंदा करे उसे कोई भी फरक नहीं पड़ता।

उसे दृढ़ विश्वास होता है कि जब वह हम राम जी की शरण में आ गया है तो उस की लाज राम जी अवश्य ही रखेंगे।

यह सब राम जी की कृपा से ही सम्भव है।

रामरामराम श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।

तेरी ओर पूरण गोपाला।

शब्द 66

स्वामी शरणि परिओ दरबारे 2

II

कोट अपराध खंडन के दाते
तुम बिन कौन उधारे 2

स्वामी शरणि - .

III

खोजत खोजत बहु परकारे
सर्ब अर्थ बिचारे 2

स्वामी शरणि - .

IV

साध संग परम गति पाइऐ
माया रच बंधि हारे 2+1

स्वामी शरणि

V

नानक अनंद करे हरि जाप 2
सगले रोग निवारे 2

स्वामी शरणि परि

राम जी राम राम

श्रीराम
8.1.97

शब्द 66 (भावार्थ)

हे राम जी अब मै आप की शरण मे आ गया हूं (जीवात्मा कह रहा है) केवल आप के सानिध्य मे ही मुझे शान्ति मिली है। अब मैंने आप का दरबार नही छोड़ना।

सारे संसार मे सब प्रकार से खोज की कि कही शान्ति सन्तोष या सुख पूर्ण रूपेण मिले, परन्तु कुछ नही मिला, संसार मे किसी को भी मै सन्तुष्ट नही कर सका।

जब आप जैसे सतं मिले तो मुझे ऐसा लगा कि जीते जी ही मुक्ति प्राप्त हो गई है क्योंकि पहले माया मे फस २ कर हार गया था (मनुष्य अन्त मे जा कर हार जाता है) जब वह देखता है कि सब के साथ इतना करते हुए भी परिणाम उस को जीरो हुआ।

अन्त मे पता लगा कि केवल गुरु मन्त्र के

Tomorrow

जाप से ही सारे रोग दूर हो सकते हैं

घर सुख वसिया, बाहर सुख पाया।
कहो नानक गुरु मन्त्र दृढ़ाइआ (गुरुवाणी)

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा (रामायण)

सततम् कीर्तयन्तो माम् (गीता)

इस लिए अब मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि मैं हर समय आप के गुरु मन्त्र का ही जाप करना है, केवल आप की ही कृपा मांगनी है और श्रीराम नाम का ही जाप करना है

राम जी राम राम

श्रीराम
8.1.97

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।।"

Tomorrow

शब्द 67

तऊ मै आइआ शरनी आइआ
भरोसे आइआ। कृपा आइआ

तऊ मै ---

II

जिउ भावै तिउ राखहु स्वामी
एह मार्ग गुरहि पइ पठाइआ

तऊ ---

III

महा दुस्तर माया जैसे पवन झुलाइआ
सुन सुन ही डराइआ करड़ो धर्म राया

तऊ ---

IV

गृह अन्ध कूपाइआ पावक सगराइआ
गही ओट सधाइआ 2

V

नानक हरि ध्याइआ 2
मै पूरा पाइआ 2

तऊ मै —

राजीरामराम

श्रीराम
9.1.97

(भावार्थ) शब्द 67

हे राम जी मैंने संसार में बहुत लोगों पर
भरोसा रखा परन्तु परिणाम 0 मिला
अब मैं आप की शरण में आ गया हूं
मुझे आप का पक्का भरोसा है कि आप मुझे
अपना नाम जपायेंगे और शरण में रखेंगे
और अपनी कृपा भी करेंगे (क्योंकि मैं
तो केवल आप की कृपा मांगती हूँ)
मुझे अब यह दृढ़ विश्वास है कि इस
दुस्तर माया से केवल आप ही मेरी रक्षा कर
सकते हो। आपने गीता में भी यही कहा है

"मम माया दुरत्या"

जब इस योगमाया से काल माया से भयभीत
हो गया और आगे धर्मराज ने भी मेरा पूरा २
हिसाब लेना है वह बड़ा सख्त है वह तो
कर्मों के हिसाब से अवश्य ही सजा देता है
इस संसार में मैंने सब और माया की अग्नि
में जलते २ ही जीव देखे हैं, परन्तु अब मैं

8 January 198
Wednesday

Tomorrow

मैंने आप का सहारा ले लिया है
इस लिए मेरा मार्ग सुगम हो गया है
अब मैंने हर समय पूर्ण का ही
ध्यान करना है और पूर्णता प्राप्त कर के
संसार की यात्रा समाप्त करनी है
पूर्ण तो केवल आप ही शेष सब
संसार अधूरा है

राम जी राम राम — श्रीराम
8·1·97

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूर्ण गोपाला"

श्रीराम

शब्द 68

तेरी किरपा तेरी किरपा तेरी किरपा

जिस जन ऊपर तेरी किरपा

तां को विघ न कोऊ आवे 2

II तेरी किरपा

तूँ बिसरहि तां सब को लागू

चित आवे तां सेवा

अवर न कोऊ दूजा सूझे

साचे अलाव अभेवा

तेरी किरपा

III

चित आवे तां सदा दइआला

लोगन किआ वेचारे

10 January 200
Friday

Tomorrow

भला बुरा कहो किसनू कहिए
सगले जीअ तुम्हारे
तेरी कृपा -

III

तेरी टेक तेरा आधारा
हाथ दे तू राखे
जिस जन ऊपर तेरी किरपा
ता के बिप न भावे
तेरी किरपा

IV

उहो सुख उहा वडआई
जो प्रभ जी मन भाणी
तूं दाना तूं सद मेहरवाना
नाम मिले रंग माणी
तेरी किरपा - :

V

तुध आगे अरदास हमारी
जीउ पिंड सब तेरा
कहो नानक सब तेरी वडआई
कोई नाम न जाने मेरा
तेरी किरपा - .

(भावार्थ)

जां पर कृपा राम की होई
तां पर कृपा करे सब कोई
(रामायण)
तुम कृपाल जां पर अनुकूला।
ताही न व्याप त्रिविध भवशूला।।
(रामायण)
इस शब्द मे इसी भाव को प्रकट
किया गया है कि जिस जीव पर राम जी

कृपा करते है उस को कोई भी विपत्ति नासित नही होती, संसार में परिस्थितियां तो सब प्रकार की आयेंगी। ऐसे जीव के यह लक्षण होंगे ?

(1) उसे अपने रामजी के सिवाय संसार में दूसरा कोई भी नही सूझेगा।

(2) वह सदा अपने चित में केवल रामजी को रखते हुए उन्ही की सेवा करेगा। उसे संसार मे कोई भी बुरा नही लगेगा।

(3) उसे यह दृढ विश्वास होगा कि उस रामजी ने अपना दृढ हाथ दे कर रखा हुआ है इसलिए उसे कोई भी विपत्ति नही आ सकती,

उस को अपने रामजी की आज्ञा में ही
सुख लगता है, वह संसार में सब से बड़ा
अपने रामजी को ही समझता है इस लिए
केवल उन्ही के नाम में ही मस्त रहता है

(5) हर समय अपने रामजी के आगे अरदास
करता है कि यह संसार का सारा माल
खजाना प्रत्येक वस्तु आप की है। यह
सब रामजी की बड़ाई है जो इस निर्गुण
जीव को बड़ाई दिला देती है।
ऐसे विचारों से जीवन हमेशा
आनन्दमय रहता है।

रामजीरामराम श्रीराम

श्रीराम

शब्द 69

मैं अधुंले की टेक तेरा नाम खुदंकारा।

मैं गरीब मैं मसकीन तेरा नाम हैं आधारा।

II

करीमां रहीमां अल्लाह तूं गनी

हाजरा हजूर दरपेश तूं मनी

III

दरिआउ तूं दिहंद तूं बिसिआर तूं धनी

देहि लेहि एक तूं दिगर को नही

IV

तूं दाना तूं बीना मैं बिचार क्या करी

नामे चे स्वामी बखशंद तूं हरि

रामजीरामराम

श्रीराम
9.1.97

"श्रीराम"

भावार्थ शब्द 69

सब संतो का आश्रय केवल राम नाम है और जो निरन्तर नाम जपता है वही संत है चाहे वह घर मे रह रहा है या महल मे जैसा कि ब्रह्मानन्द जी ने भी अपना यही विचार प्रकट किया है

ए राम तेरे नाम को
मुझ को आधार है
अन्धे को जैसे लकड़ी
तन को सहार है

वही विचार इस शब्द मे नामदेव जी प्रकट कर रहे है, अपनी भाषा मे, कहते है।

हे राम जी मुझे तो केवल आप के नाम का ही सहारा है, जब मैं आप का नाम भूल जाता हू तो ऐसे महसूस होता है कि मै अंधा हो गया हू मुझ मसार

श्रीराम
राम जी राम राम

206

सारा अच्छा नहीं लगता। आप दयालु हो कृपालु हो सर्वव्यापी हो और मुझे तो आप के नाम की कीमत मणियों से भी अधिक लगती है। आप उदार हो, अपरम्पार हो, मेरा केवल आप से ही लेन देन है, (आपने मुझे श्वास दान में दिये हैं मैं आप को श्वास ही दे सकता हूँ। जिस श्वास में मैं आप का नाम जपता हूँ वह श्वास आप को प्रदान हो जाते हैं इसलिए आप कृपा करना कि सारे श्वास आप को ही अर्पण करूं)

(ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे)
(नाम न बिसरे काहू बेरे)

आप इतने उदार हो महान हो मैं आप का विचार कैसे करूं। बस मुझे यह विश्वास है कि आप मेरे स्वामी हो इस लिए मुझे अवश्य ही माफ कर देंगे

शब्द 70

दीनदयाल भरोसे तेरे 2

सब परिवार चढ़ाइआ बेड़े 2 दीनदयाल - .

II

जां तिस भावे तां हुक्म मनावे

इस बेड़े को पार लघावे दीनदयाल - -

III

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे

ध्रुव प्रहलाद जपिओ हरि जैसे दीनदयाल -

IV

गुरु परसादि ऐसी बुद्धि समानी

चूक गई फिर आवन जानी दीनदयाल - -

V

कहे कबीर भज सारंग पानी

उरवार पार सब एको दानी दीनदयाल - -

श्रीराम
राम जी राम राम

Tomorrow

208

शब्द 70

(व्याख्या)

सौर सन्तो ने भगवान को दीनदयाल नाम से सम्बोधित किया है, क्योंकि वह अपने आप को हमेशा दीन (गरीब मसकीन) समझते हैं, जैसा कि तुलसीदास जी भी रामायण में रामजी को दीनदयाला

" भये प्रगट कृपाला दीनदयाला
कौशल्या हितकारी "

हे राम जी मुझे आप पर दृढ़ भरोसा है इस लिए यह सारा परिवार (शरीर का भी और संसार का भी) शरीर का परिवार है पांच कर्म इन्द्रिया पांच ज्ञान इन्द्रिया ग्यारहवां मन (12) बुद्धि (13) अहंकार और संसार का परिवार है जो घर में प्राणी हैं बच्चे आदि। इन सब पर आपकी दया रहा करती है यह सब शान्त रहें, आप इन दोनों परिवारों के स्वामी हो।

आगे से राम जी कहते हैं कि तुम्हें भी नाम जपना होगा जैसे ध्रुव भगत ने जपा और प्रह्लाद भगत ने भी

जैसे उन का विश्वास भक्ति दृढ़ थी ऐसे ही
रखनी पड़ेगी प्रहलाद को डराया गया परन्तु
वह बिल्कुल नही डरा

जल भी राम थल भी राम
घड़ी भी राम पल भी राम

ध्रुव भगत जैसी तपस्या करनी होगी (ख
खड़े हो कर गुरुमन्त्र जाप करना होगा। इस
प्रकार की साधना करने से, सतगुरु कृपा
करते हैं तो हमारी बुद्धि प्रभुमय हो जाती है
फिर आवागमन का चक्र कट जाता है।

अपने मन को कबीर साहब जी समझा रहे हैं
ए मन तू इस प्रकार से भजन कर कि तुमे
बस हर समय हर दिशा मे केवल अपने रामजी
ही नजर आये, जो कि तुमे देते ही देते हैं

राम जी राम राम

श्री राम
11.1.97

20-345
Week 4

श्रीराम

राम जी राम राम

20 January Monday 210

Tomorrow

शब्द 71

राखा एक हमारा स्वामी
सगल घटा का अन्तरयामी 2

II

ऊठत सुखिया बैठत सुखिया
भऊ नही लागै जां ऐसे बुझिया

राखा — —

III

सोये अचिन्ता जागा अचिन्ता
जहां कहां प्रभु तूं वरतंता

राखा — —

IV

घर सुख वसिया बाहर सुख पाया
कहु नानक गुर मन्त्र द्रिड़ाइआ

राखा एक — —

रामजी राम राम

श्रीराम
11.1.97

शब्द 71

(व्याख्या)

रामजी सब के अन्तर की जानने वाले हैं वही मेरे स्वामी हैं, वही मेरी रक्षा करते हैं और करते रहेंगे। जो ऐसे जान लेता है वह फिर किसी से भी नहीं डरता। वह सोता है तो अपने रामजी का भजन करते २ सो जाता है और उठता है तो भी गुरु मन्त्र जाप करते २ जागता है। इस प्रकार से उस के मन मे कोई चिन्ता आदि नही व्यापती, क्योंकि वह हर समय अपने राम जी को व्यापक समझता है जैसा कि रामायण ने भी यही समझाया

"प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम से प्रगट होय मैं जाना॥"

इस प्रकार से उस का अन्तरमन भी सुखी रहता है और बाहर से भी सुखी ही प्रतीत होता है, क्योंकि उस के मन मे हर समय गुरु मन्त्र ही का ही जाप होता रहता है। ऐसी कृपा हमे भी मागनी चाहिए

22 January Wednesday 212

22-343
Week 4

Today: श्रीराम
Tomorrow: रामजी रामराम

शब्द 72

अउखी घड़ी न देखण देई
अपना बिरद्ध समारे 2

II
हाथ देई राखे अपने को
सास सास प्रतिपाले
अउखी घड़ी - -

III
प्रभु सिउ लाग रह्यो मेरा चीत
आदि अंत प्रभु सदा सहाई
धन हमारा मीत
अउखी घड़ी

IV
मन बिलास भये साहब के
अचरज देख वडाई
हरि सिमर सिमर आनन्द कर नानक
प्रभ पूरी पैज रखाई
अउखी घड़ी - .

रामजीरामराम श्रीराम
11·1·97

शब्द 72

"व्याख्या"

संसार में दो प्रकार के भक्त होते है कि पहली प्रकार के तो केवल सुख मे ही प्रभु सिमरण कर सकते है क्योंकि उन की भक्ति निष्काम होती है। दूसरे प्रकार के, केवल दुख मे सिमरण करते है सुख आ जाता है तो माया में फंस कर भगवान को भूल जाते है

इस लिए इस शब्द में हमें ऐसा बताया गया है कि आप अपने राम जी से यही अरदास करो कि कोई विपत्ति न आये ताकि हम सुखो मे निविघ्न आप के ही सिमरण भजन मे सारा जीवन व्यतीत करें, ऐसे जो प्रार्थना करता है उसे राम जी अपना हाथ दे कर रक्षा करते हैं और उस की प्रतिपालना करते हैं (अर्थात अपना ध्यान सा दिलाते रहते हैं) फिर उस का चित निरन्तर अपने स्वामी से ही लगा रहता है फिर उसे दृढ़ निश्चय हो जाता है कि जिसने आदि मे जब मै मां के गर्भ मे था वहां रक्षा की है

श्रीराम

रामजीरामराम

 214

वही अन्त काल तक मेरे अंग संग रहेगे। ऐसो मेरा मीत है।

जब राम जी ऐसे ऐसे भक्तो के विचार सुनते हैं तो वह बड़े प्रसन्न होते हैं कि यह मायावी जीव सुखो मे भी मेरा नाम ध्यान सिमरण ही चाहते महाराज कहते हैं ऐसे भक्तो को भी फिर आनन्द लाभ बड़ाई प्राप्त होती है

उन का लोक भी सुखी रहता है और परलोक मे भी उन की जय जय कार होती है जैसा कि वाणी प्रमाण देती है

" लोक सुखी परलोक सुहेले
नानक हरि प्रभु आपे मेले "

त

रामजीरामराम

श्रीराम
11·1·97

73

शब्द

तती वाउ न लगदी जी
गुरो जी तेरी शरणा पयां

II

ताती वाउ न लगई
पारब्रह्म शरणाई
गुरो जी तेरी शरणा पयां
चउगिरद हमारे राम कार
दुख लगै न भाई जी
गुरो जी तेरी शरणा पयां

III

सतगुर पूरा भेटिआ
जिन बणत बणाई जी
गुरो जी तेरी शरणा पयां तती -

IV

कहो नानक किरपा भई
प्रभु भये सहाई जी
सैहाई जी गुरो जी तेरी शरणा पयां

रामजीरामराम

श्रीराम 12.1.97

26-339
Week 5

Today — श्रीराम

राम जी राम राम — Tomorrow

26 January 216
Sunday

शब्द 73

(व्याख्या)

राम जी की शरण मे रहने से तीनो ताप नही व्यापते आधिभौतिक ताप (शारीरिक ताप)
आदिदैविक ताप (दैवयोग से कष्ट)
अध्यात्मिक ताप (मानसिक रोग)

राम जी हमे सदा जगाते रहेगे कि अगर तुम शारिरिक रोग समाप्त करना चाहते हो तो भोजन के खाने से पहले गुरुमन्त्र उच्चारण करो, आदिदैविक रोगो से बचने के लिए सुख मे तपस्या करो, सवेरे उठो पहले स्नान ध्यान पूजा करो। दिन मे गुरमन्त्र जाप करते२ संसार के कर्म करो। मानसिक रोग न आये इस के लिए गुरमन्त्र का मानसिक जाप करो

जब हम सिमरण करते रहते हैं तो हमे अनुभव होता है कि हमारे इष्टदेव चारो ओर हमारी रक्षा कर रहे हैं इस लिए कोई दुख नही आ सकता।

परन्तु यह सारी शिक्षा केवल सतगुरु ही दे सकते हैं, ऐसे शुभ कर्म करने से ही प्रभु सहायता करते हैं अन्त मे सुरत शब्द का मेल भी

7

श्रीराम

राम जी राम राम

Tomorrow

27-338
Week 5

217

January
Monday
27

शब्द 74

रंगी रत्ता मेरा साहिब
रव रहिया भरपूर

II

आपे रसिया आप रस, आपे रावणहार
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतार
रंगी रत्ता - -

III

आपे माछी माछली आपे पाणी जाल
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदर लाल
रंगी रत्ता - -

IV

आपे बहु विधि रंगला
सखिये मेरा लाल
नित रवै सोहागणी
देख हमारा हाल
रंगी रत्ता .

V

प्रणवै नानक बेनती तूं सरवर तूं हंस
कौल तूं हैं कविया तूंही आपे वेख विगस
रंगी रत्ता

श्री राम
राम जी राम राम

शब्द 73
(व्याख्या)

साधक की साधना करते करते यह अन्तिम अवस्था है कि जब उसे कण कण मे अपने प्रियतम की अनुभूति होती है जैसा कि इस शब्द मे वर्णन की जा रही है ऐसी वाणी बोल बोल कर गा गा कर हमारी स्थिति भी ऐसी बन सकती है

मेरे राम जी मेरे सच्चे स्वामी है वह कण कण मे रम रहे है, संसार मे जिधर भी मै देखता हूं मुझे तो वही दिखते हैं। रस देने वाले भी वह है और रस भी वह ही है। (जब अन्तर मे आनंद आने लगता है तो बाहर सारा जगत आनन्दमय लगता है)

जैसा कि गीता के दसवें अध्याय मे भगवान कहते है कि हर एक वस्तु का सार मै हूं जैसा कि चन्द्रमा का तेज भगवतस्वरूप है। वही अवस्था सारी गुरुसाहब इस मे प्रकट कर रहे हैं

जिज्ञासु भी वह आप हैं और अन्तःकरण भी वह आप है, मछली भी वही है जाल भी वही है और पकड़ने वाला भी वह ही है। कण कण मे वह ही है

वह ही हैं वह ही हैं ऐसा अनुभव जब होता है सारा जीवन आनन्दमय हो जाता है। ऐसा सब नहीं अनुभव कर सकते केवल वही आत्मायें जो पूर्ण रूपेण ब्रह्ममय हो गई हैं वही नेपर अनुभव करती हैं। दूसरी आत्मायें भी उन की रीस करती हैं परन्तु साधना सपन्न के बिना कुछ नहीं प्राप्त कर सकते।

यह तो सत्गुरु ही पूर्ण रूपेण ऐसा कह सकते। यह संसार रूपी सागर भी तू है इस में यह हंस रूपी आत्मा भी तू है, आप ही वर्णन करने वाला है देख कर प्रसन्न होने वाला भी तू ही है अर्थात सब ईश्वरमय जगत है।

जैसा कि श्री कृष्ण जी गीता मे कहते हैं

ब्रह्म अर्पणम् ब्रह्म हवि ब्रह्म अग्नौ, ब्रह्म हुतम
ब्रह्म ऐव तेन गन्तव्यम् ब्रह्म कर्म समाधिना

सब ब्रह्म ही ब्रह्म है, ऐसा भाव हमारा निरन्तर रहना चाहिए फिर हम सब पाप पुण्यो से ऊपर हो सकते हैं

रामजी राम राम

श्रीराम
15.1.97

श्रीराम

 220

राम जी राम राम

शब्द 74

दय गुसाई मीतुला। तूं सां हमारे वास जीओ।

तुम बिन घड़ी न जीवणा ध्रिग रहणा संसार

II

जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहार जीओ।

हस्त आलम्बन दे प्रभु, गरतह उधर गोपाल

मोहि निरगुण मति थोरिआ, तूं सद ही दीनदयाल

III

किआ सुख तेरे संमला, कवन बिधि बिचार

शरणा समाई दास हित, ऊचे अगम अपार

IV

सगल पदारथ अष्ट सिद्ध, नाम महारस मांही

सुप्रसन्न भये केशवा से जन हरि गुण गांम

V

मात पिता सुत बंधुपो, तूं मेरे प्राण आधार

साध संगि नानक भजे बिख तरिआ संसार

रामजी राम राम श्रीराम
15.1.97

शब्द 74

"ध्याल्यां"

हमें अपने राम जी से सदा यही अरदास करनी है
हे मेरे करतार, गोबिंद जी, मेरे मीत जी आप सदा
हमारे अंग संग रहो, आप के बिना संसार मे जीना
धिक्कार है, एक पल भी आप को न भूलूं।
आप तो जीवात्मा को और प्राणो को सुख
देने वाले हो, हर तरह हम आप पर बलिहार जाते
आप मुझे अपने हाथो से आप अपना आश्रय दो
ताकि मै इस दुस्तर माया से उबर जाऊ
मेरे मे तो कोई भी गुण नही जिन से मैं आप को
रिझा सकूं। आप तो दीनो पर दया करने वाले हो
बस यही मेरा तरने का उपाय है। जो जो पाप अपने
मुझे अंतर के लिये उन का विचार मैं नही कर

32-333
Week 5

श्रीराम

1 February Saturday 222

राम जी राम राम

Tomorrow

सकती, आपने मुझे अपनी शरण में लिया है बस
इसी विचार से मैं हर समय मस्त रहती हूं। कहां
आप इतने ऊंचे अगम अपार कहां मैं एक निकृष्ट
माया का कीड़ा।

आप के नाम में शक्ति में अष्ट सिद्धियां नव
निधियां है परन्तु आप का नाम तो वही जप
सकता है जिस पर आप प्रसन्न होते हो

आप ही मेरे माता पिता बन्धु और मेरे प्राणों के
आधार हो। इस संसार रूपी विकट सागर को तरने
के लिए तो एक ही उपाय है संतो के संग बैठ २
कर हरि गुण गाते रहें और घर में ध्यान में बैठें

राम जी राम राम   श्रीराम

17·1·97

शब्द 75

साजनड़ा मेरा साजनड़ा

निकट खलोइआ मेरा साजनड़ा

II

जानीअड़ा हरि जानीअड़ा

नैन अलोइअड़ा हरि जानीअड़ा

III

नैन अलोइआ घट घट सोइआ

अति अम्रित प्रिअ गूड़ा

IV

नाल होवदा लै न सकंदा

सुआउ न जाणै मूड़ा

V

माइआ मद माता होछी बाता

मिलन न जाई भरम धड़ा

224

ओ३म्

राम जी राम राम

कहो नानक गुरु बिन नाही सूझे

हरि साजन सब के निकट खड़ा

व्याख्या शब्द 75

जब हम गुरुमन्त्र का जाप निरन्तर करते रहते हैं तो कुछ समय के बाद हमें अपना चिन्तन सतगुरु प्यारा हर समय अपने निकट प्रतीत होता रहता है उसी भाव को लेकर इस शब्द में प्रकट किया है।

मेरा साजन, मेरे राम जी हर समय मेरे निकट खड़े हैं मुझे याद करवाते रहते हैं, माया मे कैसे नही जाना, मेरे राम जी मुझे प्राणो से भी प्यारे हैं, मेरे नेत्रो मे तो बस वही समाये हुए हैं इस लिए

सब में मुझे वही दिखते रहते हैं, वह मुझे
बहुत ही प्यारे लगते हैं। वह हमेशा सब के
साथ हैं परन्तु प्रभु कृपा के बिना वह नहीं
अनुभव होते। इस लिए जो कृपा माँगता उसे
हर समय वह अपना दर्शन देते रहेंगे

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर मुड़ी गोपाल।

राम जी राम राम

श्रीराम
17.1.97

शब्द 76

तूँ मेरो प्यारो 2 तॉ कैसी भूखा
तूँ मन वासियां लगे न दूखा
तूँ - - - -

II

नउनिधि तेरे सगल निधान
इच्छा पूरक रावे निदान
तूँ मेरो प्यारो -

III

जो तूँ करे सोई परवारा।
साचे साहब तेरा सच फरमारा।
तूँ मेरो -

IV

जो तुध भावे तां हरि गुरा गाउं
तेरे घर सदा 2 है न्यांउ

V

साचे साहब अलाख अभेव

नानक लाया लागा सेव

व्याख्या शब्द 76

जिस साधक को अपने राम जी से प्रेम हो जाता है उसे फिर संसार की किसी प्रकार की भी तृष्णा नही रहती और जब राम जी मन में बस जाते हैं तो संसार का कोई भी दुख नही लगता अगर कोई दुख आता भी हैं तो वह केवल शरीर तक ही सीमित रहता हैं अन्दर से वह हर समय आनन्द मे रहता हैं।

राम जी की भक्ति मे नवनिधियां सिद्धियां सब प्रकार के खजाने भरपूर रहते हैं। रामजी

38-327
Week 6

श्रीराम
राम जी रामराम

Tomorrow

7 February 228
Friday

अपने भक्त (बच्चे) की सब इच्छाएं पूर्ण कर देते हैं और उस की रक्षा भी करते हैं। रामजी अपने दास को इस प्रकार की बुद्धि बना देते हैं कि उसे रामजी की हर बात मे भलाई ही भलाई प्रतीत होती हैं (यही तो विशेष कृपा है पता न होना)

रामजी के दरबार मे तो सदा न्याय ही न्याय है वह जिस पर कृपा करते हैं वही उन के गुण गा सकता है। वही सच्चे शहनशाह हैं उन का कोई भी भेद नही पा सकता बस जिस पर वह कृपा करें वही उन की सेवा कर सकता है।

रामजीरामराम (श्रीराम)
17·1·97

राम जी राम राम

शब्द 77

तूँ

तूँ साजन तूँ प्रीतम मेरा 2
चितहि न विसरे काहू बेरा 2

II

तूँ जीवन तूँ प्राण आधारा
तुम ही पेख पेख मन साधारा

III तूँ --

बेखरीद हउ दासरो तेरा
तूँ भारो ठाकुर गुणी गहेरा

IV तूँ साजन

कोटि दास जा के दरबारे
निमख निमख वसे तिन नाले

V तूँ साजन

हउ किछ नाही सब किछ तेरा

ओत पोत नानक संग ओअर)

शब्द 77 (व्याख्या)

संसार में जितने भी सम्बन्धी Blood Relations
है वह भुलाये से भी नही भूलते जैसे बाप बेटे
का सम्बन्ध है बाप को अपने बच्चे स्वयं ही
अपने आप याद आते ही रहते हैं।

परन्तु भगवान ऐसे ही अपने आप
याद नही आते। उन्हे या तो हम किसी कामना
वश याद करते हैं या दुख दूर करने हेतु याद
करते है। अगर सतगुरु हम निरन्तर याद आते
रहे तो हम भगवत स्वरूप बन सकते हैं

जो प्राणी निशदिन भजे रूप राम तहजान
हरि जन हरि अन्तर नाही नानक सांची मान

इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए
हमे इस प्रकार शब्द उच्चारण करने चाहिए
और उन का अर्थ भी समझ आना चाहिए
इस शब्द मे अरदास की गई है ।

हे रामजी आप ही मेरे सच्चे साजन हो आप
मेरे प्रीतम प्यारे हो आप मेरे पर कृपा करना
कि मै आप का सदा चिन्तन करूं। मेरे जीवन
मे जो प्राण चल रहे है उन का आधार तो
आप ही हो जब मै आप के दर्शन करता हूं तो
मुझे आश्रय मिलता है। मै तो सदा आप का
निष्काम दास बनना चाहता हूं क्योंकि आप
गहर गम्भीर मेरे ठाकुर हो। आप की तो अपार
महिमा है, आप को याद करने वाले तो करोड़ो है

और जो आप का सिमरण करते हो आप उन के सदा अंग संग रहते हो। बस मुझे तो आप ऐसी बुद्धि दो कि मुझ में अहमता ममता बिलकुल न रहे। यह सब कुछ तो आप का है, मै इसे अपना समझता हूं यही मेरे दुख का कारण है। यह सब संसार आपसे ही ओत प्रोत है।

ऐसी मेरी बुद्धि मे योग कर दो।

रामजीराम राम

श्रीराम

19.1.97

शब्द 78

मन तन तेरा धन भी तेरा

तूं ठाकुर स्वामी प्रभु मेरा मन तन - -

II

जीओ पिंड सब रास तुम्हारी

तेरा जोर गोपाला जीओ

मनतन - :

सदा सदा तूं है सुखदाई
निव निव लागा तेरी पाई
कार कमावां जे तुध भावां
जां तूं देह दयाला जीओ
मन तन - .

III

प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा
जो तूं देह सोई सुख सहणा
जिथे रखे बैकुंठ तिथाई
तूं सभना के प्रतिपाला जीओ
मन तन

IV

सिमर सिमर सिमर सुख पाइआ
आठ पहर तेरे गुण गाइआ
सगल मनोरथ पूरण होए
कदे न होए दुखाला जीओ
मन तन —

राम जी राम राम
श्री राम

234

शब्द 78

व्याख्या।

वास्तव में संसार सारा ईश्वर ने बनाया है इस लिए यह सब कुछ उन्ही का है, परन्तु अज्ञानता वश हम हर एक वस्तु को अपना बना बैठते हैं यही हमारे दुख का कारण है। इस लिए हम अपने महाराज की वाणी नित्य प्रति गायन करनी चाहिए जिससे हम सब कुछ मेरे राम जी का है ऐसा बुद्धि योग बन जाये।

हे राम जी यह मन तन तथा धन सब तो आप का है, जब चाहो आप इसे वापिस ले सकते हो क्योंकि आप ही इस के मालिक हो। यह शरीर सारी का इस मे जो जीवात्मा आपने रखी है, यह सब आप की है मुझ तो केवल आप का ही ज़ोर है।

मुझे ऐसा दृढ़ विश्वास है कि आप तो सदा अपने दासों को सुख ही देते हो, मैं आप को हर समय झुक झुक कर प्रणाम करता रहूँ (जितना मैं आप के आगे झुकूंगा उतनी ही आप का हाथ मेरे सिर पर आयेगा तो मुझे आराम मिलेगा। आपकी सेवा तो नहीं कर सकता

है जिस पर आप कृपा करते हो। मैने तो सब कुछ आपसे ही प्राप्त करना है। आप तो मेरे स्वामी हो जो आप मुझे दोगे मुझ सहर्ष स्वीकार है मुझे तो सदा आप सुख ही देते हो।

मेरे लिए तो वही स्वर्ग है जहां हमेशा आपका नाम सिमरण भजन कीर्तन है। आप ही तो सब की प्रतिपालना करते हो

जब से मैने आप का सिमरण भजन करना शुरू किया है तब से मै तो सुखी सुखी हो गई हूं। आठपहर मुझे तो बस आप की याद आती रहती है इस लिए मेरे मन मे किसी प्रकार की इच्छा शेष नही है और मुझे तो अब कोई भी दुख नही रहा

आपने कितनी कृपा कर दी है। बस ऐसी कृपा हमेशा बनाये रखना।

राधास्वामी

श्रीराम
19. 1- 97

Today रामजी रामराम

श्रीराम Tomorrow

15 February 236
Saturday

शब्द 79

तू मेरा पिता तू है मेरा माता
तू मेरा बन्धप तू मेरा भ्राता
तू मेरा राखा सभनी थाई
तो भऊ केहा काड़ा जीओ

तू मेरा —.

II
तुम्हरी कृपा ते तुम पछाणा
तू मेरी ओट तू है मेरा माणा
तुम बिन दूजा अवर न कोई
सभ तेरा खेल अखाड़ा जीओ

तू मेरा —.

III
जीअ जंत सभ तुध उपाई
जित जित भाणा तित 2 लाये
सभ किछ कीता तेरा होवे

नाही किछु असाढा जीओ

IV

नाम ध्याय सदा सुख पाया।

हरि गुण गाय मेरा मन सीतलाया।

गुरु पूरे वजी वधाई

नानक जिता बिखाड़ा जीओ

शब्द व्याख्या 79

इस संसार में जितने भी रिश्ते नाते हैं वह अपना समय पा कर छूट जाते हैं, क्योंकि यह मृत्यु लोक है। परन्तु राम जी का नाता हमारा कई जन्मो का है, हम माया के वश हो जाते है इस लिए असत्य को ज़्यादा पकड़ लेते हैं और सत्य को छोड़ देते हैं

जो पड़ता सो थिर कर माने, जो होवन सो दूर परे

छोड़ जाय तिस सूझ करे, सो सहाई तिस परहरे

(गुरुवाणी)

इस लिए ऐसे शब्द बोल कर हमे अपने राम जी से सम्बन्ध

Today: राम जी राम राम

श्रीराम

Tomorrow

17 February Monday 238

बनाये रखना है

हे राम जी आप ही मेरे वास्तविक माता पिता हो आप ही मेरे सगे सम्बन्धी हो, आप ही मेरे सब जगह रक्षक हो इस लिए मुझे कोई चिन्ता नही कोई उलझन नही किसी के लिए अगर चिन्ता आ भी जाती है तो मैं उस के लिए "कर कृपा" का मन्त्र उच्चारण कर देती हूं उस पर कृपा हो जाती है और मेरे समय का सदपयोग भी हो जाता है।

जिस पर आप अपनी कृपा करते हो वही आपको पहचान सकता है, मैंने आप को पहचान लिया है इस लिए हर समय मैं तो केवल आप की कृपा मांगती हूं और आप की ओर (आश्रय लेती हूं) मेरा तो मान भी आप हो मुझे संसार का मान नही चाहिए। आप के बिना सारा संसार शून्य है, यह संसार तो एक अखाड़े की तरह है जिस में सब प्राणी माया से जूझ रहे हैं।

यह सब रिश्ते नाते आपने ही बनाये हैं पिछले कर्मों के अनुसार यह हमारे सुख दुख के कारण बनते हैं जितनी देर का सम्बन्ध इन का हमारे साथ होता है रहते हैं फिर छोड़ कर चले जाते हैं।

आप मेरी ऐसी बुद्धि बनाये रखना कि यह सब आप की
आज्ञा मे हो रहा है, यह सब मेरा नही है आप का ही है
बस एक बात मे समझ मे निरन्तर रहनी चाहिए कि
सच्चा सुख तो आप के चरणों मे है। और परमशान्ति
केवल आप का कीर्तन करने मे आप का नाम जपने मे
और सतसंग मे है। पूर्ण सतगुरु मिलने से ही मै ठीक
रास्ते पर चल सकती हूँ। तभी मेरा जीवन धन्य हो
सकता है

"भूले मार्ग जिनहि बताइआ
ऐसा गुरु वडभागी पाइआ"

धन्य धन्य कहे सब कोय
मुख उजल हरि दरगह सोय

ऐसा जीवन हो जाये आप की कृपा से

राम जी राम राम

श्री राम
21.9.97

19 February Wednesday 240

50-315
Week 6

Today
राम जी राम राम

श्रीराम
Tomorrow

शब्द 80

कर किरपा करहु प्रभु दात।
तुम्हरी उसतत करहु दिन रात 2

II

तूं मेरा पिता तूं है मेरा मात।
तूं मेरे जीअ प्रान सुखदाता।
तूं मेरा ठाकुर हउ दास तेरा
तुम बिन अवर नही को मेरा

III

कर —

हम तेरे जंत्र तूं बजावनहार।
हम तेरे भिखारी दान दे दातार।
तेउ प्रसाद रंग रस मारो
घट घट अंतर तुमहि समारो

V

तुम्हरी कृपा ते जपिए नांउ
साध संग तुम्हरे गुण गांउ
तुम्हरी दइआ ते होय दरद बिनास
तुम्हरी किरपा ते कमल बिगास

कर किरपा –

V

हउं बलिहारि जांउ गुरुदेव
सफल दरशन जां की निर्मल सेव
दया करहु ठाकुर प्रभ मेरे
गुण गावै नानक नित तेरे

रामजीरामराम

श्रीराम
22·1·97

हमें हमेशा अपने राम जी से यही मांगना है कि
सदा हम उन्ही की भक्ति और उन्ही की कृपा मांगे
और दिन रात अपना ध्यान उन्ही के चरणों में रखें
क्योंकि हमारे सच्चे माता पिता भाई बन्धु तो वह ही
हैं क्योंकि वह हमें सीधा रास्ता बताते हैं संसार सारा तो
माया के रास्ते पर जा रहा है जिस का अन्त अति दुखदाई
है। जैसा कि गीता के अठारहवें अध्याय में भगवान
समझाते हैं कि संसार का मार्ग पहले थोड़ा सा मीठा लगता
है परन्तु इस का अन्त बहुत ही कड़वा निकलता है
परन्तु राम जी का रास्ता पहले थोड़ा सा फीका लगता
है परन्तु जब इस में मन लग जाये तो अन्त में यह अमृत
समान हो जाता है। इस लिए आरम्भ से ही हम सारे रिश्ते
नाते अन्दर से उन्ही के साथ जोड़ते हैं।

क्योंकि उन का नाम तो जीवात्मा को बल देता है
और वह सदा अपने सेवक के लिए सुखदाता है

हम अपने आप को उन का यन्त्र बन कर रहना
है जैसे २ वह अन्दर से हमें आज्ञा दे वैसे २ ही करना

नित्य प्रति अपने मन में यह भाव जागरित
करना है कि हम केवल आपकी कृपा से ही यह नाम
का ऐश्वर्य निरन्तर हो कर भोगता है।

हमने उन की कृपा पर दृढ़ विश्वास रखना है
कृपा मांगते रहना है क्योंकि उन की कृपा से ही
हम उन का नाम हृदय में बसा सकते हैं उन्हीं की
दया से सब प्रकार के दुःखों का नाश हो जाता है
ऐसा हमें दृढ़ विश्वास होना चाहिए

सदा सदा यही वरदान मांगना है कि यह
मनुष्य जन्म तो हमें केवल प्रभु के गुण गाने
के लिए मिला है। बस यही कृपा मांगनी है कि
गुरु मन्त्र सदा हमारे अन्दर चलता रहे जिससे
सब के हमारा मन शान्त रह सकता है

राम जीरामराम श्रीराम
22.1.97

राम जी राम राम
श्री राम

शब्द 81

प्रभु कीजे किरपा निधान राम
हम हरि गुण गावेंगे
हम हरि गुण गावेंगे 2
प्रभु कीजे किरपा निधान राम
हम हरि गुण गावहेंगे
हउ तुम्हरी करो नित आस
प्रभु मोहे कब गल लाहवेंगे

II

हम बारिक मुग्ध अजान
पिता समझावेंगे
सुत खिन्न 2 भूल बिगाड़
जगत पित भावेंगे

जो हरि स्वामी तुम देवहो
सोई हम पाहवेगों
मोहे दूजी नाही ठउर
जिस पै हम जाहवेगों

IV

जो हरि भावहि भगत
तिना हरि भावहेगों
ज्योति ज्योति मिलाए
ज्योति रै रल जाहवेंगे

V

हरि आपे होय दयाल
आप लिव लाहवेगों
जन नानक शरणि दुआर
हरि लाज रखावेगों

राम जीराम राम
श्रीराम

व्याख्या शब्द 81

संसार मे सब से कठिन है भजन करना हर समय हरि के गुणानुवाद गाते रहना। जिन पर भगवान स्वयं कृपा करते हैं उन्ही का ध्यान निरन्तर अपने प्रभु की ओर रहता है इस लिए ऐसे २ शब्द रोज़ हमें बोलने चाहिए अरदास करनी चाहिए।

हे राम जी आपने कृपा के खजाने हो उस मे से थोड़ी सी कृपा मुझ पर भी कर दो कि मेरा मन हर समय आप का ही चिन्तन करता रहे। मैं बहुत ही छोटा सा अनजान बालक हूं मुझे जप तप सयंम धर्म इन का कुछ भी ज्ञान नही है, आप मुझे अन्दर से ही समझाते रहना आप तो सारे जगत के पिता हैं मेरे सारे अवगुणों को क्षमा कर देना। जो आप मुझे देंगे वही मैं स्वीकार करूंगी क्योंकि मेरी आशा तो केवल आप तक है। परन्तु मुझे यह अवश्य पता है कि जिन को भक्ति प्रेम श्रद्धा प्यार है वही आप को भा जाते हैं और एक बार आपने अपना लिया तो सब जाते समय आपने स्वयं ही सम्भालना है आपने अवश्य ही अपनी कृपा करनी है। क्योंकि मैं

जो ... [illegible]

जब आपने अपनी पूर्ण कृपा कर दी तो अब
से आपने मेरे मन को अपनी ओर खींच लेना है
पूर्ण लगन अपनी लगा देनी है फिर तो मेरा
मन स्वतः ही आप की ओर खिंचेगा।

इस प्रकार की अवस्था जब हो जायेगी
तो वही पूर्ण शरणागति होगी फिर आपने ही
सारी लाज रखनी है। आपकी कृपा से सब
सब हो सकता है इस लिए मैं तो निरन्तर
आपकी ही कृपा मांगती हूं

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूर्ण गोपाला।

राम जी राम राम

श्रीराम
22.1.97

शब्द 82

डोरी हाथ तुम्हारे प्रभु जी
डोरी हाथ तुम्हारे
हम बारिक तुम्हरे धारे
डोरी हाथ तुम्हारे प्रभु जी - -

II

सोई कराए जो तुध भावै
मोहि सयाणप कछु न आवै
हम बारिक तउ शरणाई
प्रभु आपे पैज रखाई
डोरी हाथ-

III

मेरा मात पिता हर राइआ
कर किरपा प्रतिपालन लागा

करी तेरा कराइआ

ੴ

जीअ जंत तेरे धारे

प्रभु जी डोरी हाथ तुम्हारे

जि करावे सो करणा

नानक दास तेरी शरणा

डोरी हाथ तुम्हारे प्रभ जी

डोरी हाथ तुम्हारे

रामजीरामराम

श्रीराम
22.1.97

250

राम जी राम राम
श्रीराम

शब्द 83

रामईआ हउ बारिक तेरा
काहे न खंडस अवगुण मेरा

II

सुत अपराध करत है जेते
जननी चित न राखस तेते

रामइआ - -

III

जे अति क्रोप करे कर धाइआ
ता भी चित न राखस माइआ

रामइआ - -

IV

चिंत भवनि मन परिओ हमारा
नाम बिना कैसे उतरस पारा

रामइआ - -

देह विमल मति सदा शरीरा

सहज सहज गुण रवै कबीरा

रामइआ हउ बारिक तेरा

राम जी राम राम

श्रीराम

22.1.97

"शब्द व्याख्या" 83

संसार में जिस बच्चे पर माँ और बाप दोनो का साया सिर पर होता है वही बच्चा भाग्यवान होता है। ठीक इसी प्रकार आत्मा के लिए भी दोनो का होना आवश्यक है इस लिए कबीर जी ने राम + मइआ = रामइआ सम्बोधन कर दिया। विशेष बात यह ध्यान रखनी है कि हम अपने राम जी के सन्मुख होकर सा बच्चा बन रहना है और अपने अवगुण क्षमा करवाने हैं। जैसे माँ अपने बच्चों के अपराध माफ कर देती है ऐसे ही हे मेरे रामजी मेरे सब अवगुण क्षमा कर देना। कई प्रकार बच्चा ह... अति

राम जी राम राम
श्रीराम

क्रोध मे आकर घर से भागने की चेष्टा भी करता है
फिर, तब भी मां उसे मना कर वापिस ले आती है
सी प्रकार हम भी माया के पदार्थ पर कर भगवान से
र हो जाते हैं। फिर भी वह सतगुरु रूप मे आकर हम
लाते रहते हैं

यही तेरा अवसर यही तेरी बार
सतगुरु कहत पुकार पुकार

ऐसे रोज रोज समझा 2 कर वह हमे एक चिन्ता
लगा देते हैं। हे प्राणी हे सेवक तू शेष चिन्ताओं
को बस एक चिन्ता मन मे लगा ले मेरा कितना
समय नाम से व्यर्थ गया क्योंकि मेरे सतगुरु जी की
आज्ञा है

"सास सास सिमरो गोबिन्द मन अन्तर की उतरे
उठते बैठते सोवत जागत इह मन तुझे चितार चिन्ता

इस प्रकार से यह चिन्ता लगाने से शेष सांसारिक
चिन्तायें सब दूर हो जाती हैं।

राम जी राम राम श्रीराम
22.1.97

शब्द 84

तूं ही तूं ही तूं ही तूं ही
रसना जपती तूं ही तूं ही

II

मात गरभ तुमही प्रतिपालक
मृत मंडल इक तूं ही
तूं ही तूं ही --

III

तुमहि पिता। तुमहि फुनि माता।
तुमहि मीत हित भ्राता।
तूं ही तूं ही —

IV

तुम परवार तुमहि आधारा।
तुमहि जीअ प्राण दाता।

V

तुमहि खजीना तुमहि जरीना।
तुमहि माणिक लाला

64-301
Week 10

Today
राम जी राम राम
श्रीराम
Tomorrow

5 March Wednesday 254

तुमहि पारजात गुरु ते पाए
तऊ नानक भये निहाला।

तूं ही तूं ही -

राम जी राम राम

श्रीराम
22.1.97

व्याख्या शब्द 84

"मेरा मुझ मे कुछ नही जो कुछ है सो तोर
तेरा तुझ को सौपता क्या लागे मोर"

जो किछ किया सो तू किया, मैं कुछ कीहा नाहि
मैंने भी तो नभी किया जो तू बैठा घट माहि
वही भाव इस शब्द मे प्रकट है ऐसे २ शब्द
बोलने से हमारी अहंता और ममता कट जाती है जो
कि सारे दुखो का कारण है।
तू ही तू ही का अर्थ है मैं कुछ नही यह सब कुछ
प्रभु का है, जैसे राम जी ने मेरी रक्षा माता के ~~...~~
उस गर्भ मे की ठीक इसी प्रकार आप मेरी देख भाल
बाहरी संसार मे भी कर रहे हो
जैसी अन्तर जठराग्नि तैसी बाहर माया
यह कर्त खेल रचाइआ
परन्तु हम मुख्य रिश्ता नाता अपने राम जी से रखना
सच्चे माता पिता बन्धु भाई तो वही है जो हम इस मा
हां कर नाम की प्रीति जोड़ते है। प्राणो के आधार तो
है क्योकि प्राण तो उही की शक्ति से चलते है। नही सब

शब्द 85

हम चाकर गोबिन्द के ठाकुर मेरा भारा

" " " " " " "

ठाकुर मेरा भारा 2

करन करावन सगल बिधि

सो सतगुरु हमारा 2

हम चाकर — .

II

जां का ठाकुर तूं ही प्रभु

तां के वड भागा 2

सोई सुहेला सदा सुखी

सभ भ्रम भउ भागा 2

III हम चाकर — —

दूजा नाही अउर को

ता का भउ करिए 2

गुरु सेवा महल पाइए
जग दुस्तर तरिए 2

हम चाकर -

IV

हिसरि तेरी सुख पाइए
मन मांहि निधाना 2
जां को तुम किरपाल भये
सेवक से परवाना 2

हम चाकर -

V

अमृत रस हरि कीरतनो
कोई विरला पीवे 2
वजहु नानक मिले एकनाम
हृदय जप जप जीवे 2

हम चाकर -

राम जी राम राम
श्रीराम
Tomorrow

मीरा ने कहा - म्हने चाकर राखो जी

जो एक बार अपने ठाकुर जी की राम जी की चाकरी मे लग जाता है उस के लिए दूसरी सब नौकरियां शून्य हो जाती हैं। इस लिए अब हमने निश्चय कर लिया है कि हम तो अपने गहर गंभीर सतगुरु गोविन्द जी के चाकर हैं वह सब कुछ कर सकते हैं।

जिसने अपना स्वामी अपने राम जी को बना लिया उस के तो बड़े उत्तम भाग्य हैं, वह सदा सुखी रहेगा क्योंकि उसे अपने राम जी मे कभी संशय नही आयेगा वह हर समय इसी विचार को पुष्टि देगा कि मेरे रामजी जो भी कर रहे हैं अच्छा ही कर रहे हैं जो करेंगे अच्छा ही करेंगे क्योंकि मैं उन की शरण में हूं। सदा मन मे एक का ही ध्यान करना है उना नही है, सब मे वही बैठे है. (ऐसा तब प्रतीत होता है जब हम पूर्ण नाम से लबालब भर जाते है। यह सब सतगुरु की सेवा से ही प्राप्त हो सकता है। सब से बड़ी सेवा गुरुमन्त्र जाप है। वैसे तो तीन सेवा हमारे जीवन मे क्रमशः चलती रहनी चाहिए

तन पवित्र सेवा किये, ~~मन~~ धन पवित्र किये ~~ध्यान~~ दान
~~मन~~ मन पवित्र हरि भजन किये, होत त्रिविध कल्याण

सो तीनों सेवा जरूरी हैं इस से भवसागर से तर जाते हैं
एक बार सतसंग करते २ अपने सतगुरु की दृष्टि मिल जाय तो सारा दिन हमारा नाम मे चलता रहता है आन्तरिक सुख प्राप्त होता है इस लिए जब भी हम सतसंग मे बैठे हम अपने रामजी की ओर ही देखते रहना चाहिए इस से एक तरह की कृपादृष्टि भी हम पर वारा कर देते
यह कीर्तन रूपी अमृत रस तो कोई भाग्य वाला ही सुखदाई अन्तरमुख द्वारा बोल २ कर जाता है
हृदय मे केवल एक ही इष्टदेव का ध्यान रखते नाम जाप निरन्तर करना चाहिए तभी हमारा जीवन जीने का उद्देश्य है नही तो इस जीवन का कोई भी लाभ नही

खिंगा २ खाया खिंगा २ सोया
खिंगा कापड़ अंग हडाया
नाम न जानेया अपने प्रभु का
मूर्ख अहिला जन्म गवाया

ऐसे २ विचार सदा Revise करने से मन प्रभु की ओर झुकता है तो एक दिन उन्ही का रूप बन जाता

श्री रामराम श्रीराम २२.१.९७

शब्द 86

कम करावण आइआ अपने संतां दे
संतां के कारण आप खलोइआ
काम करावन आइआ अपने संतां दे

II

धरति सुहावी ताल सुहावा
विच अमृत जल छाइआ राम अपने संतां दे
कम - - -

III

अमृत जल छाइआ पूर्ण साज कराइआ
सगल मनोरथ पूरे अपने संतां दे
कम - - -

IV

जय जय कार भइआ जग अंदर लाथे
लाथे सगल विसूरे अपने संतां दे

V

पूरन पुरख अच्युत अविनाशी जस
वेद पुराणी गाइआ अपने संतां दे

कम करावन आइआ ---

अपना विरद्ध रखिआ परमेश्वर
जन नानक नाम धिआइआ अपने मालिक

मार्च १९९६ 86

रामजी, हमेशा हमें नाम की महिमा बताते हुए
हमें सजग करते रहते हैं कि अगर हम अपनी वृत्ति
ज्यादा से ज्यादा गुरुमन्त्र की ओर जोड़ेंगे तो हमारी
संत वृत्ति बन जायेगी। और भगवान को संत ही
अच्छे लगते हैं दुष्टों को तो संहार भगवान स्वयं
करते हैं

जुग जुग भक्त उपाइआ पैज रखदा आइआ
हरनाखस दुष्ट हरि मारिआ प्रहलाद तराइआ
राम राज

गीता में भी भगवान ने कहा'

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च
दुष्कृताम धर्म संस्थापन अर्थाय
सम्भवामि युगे २

जो निरन्तर अपने प्रभु की याद में रहते हैं उन
के सारे कार्य रामजी स्वयं कर देते हैं।

हमारे श्वासों के तार चलते रहते हैं एक श्वास ऊपर आता है एक नीचे जाता है जो इन श्वासों से श्रीराम नाम का जाप करता रहता है उस का मन की धरती सुन्दर हो जाती है अन्दर अमृत जाता रहता है। इस प्रकार निरन्तर नाम सिमरण से शेष सारे कार्य अपने आप पूर्ण होते जाते हैं। अन्तर के भी चक्र पूर्ण होते जाते हैं आखिर मे हमारी वृति दशम द्वार मे प्रवेश कर जाती है तो यह संसार हमें एक खेल तमाशा सा लगता है।

उस महापुरुष की सदा जयकार होती रहती है उसे सब आदर देते हैं उन की संसार मे पूजा होती है और सब दुख दूर हो जाते हैं।

ऐसा नाम वेदो पुराणों मे गाया गया है और अनेक से सुनाया भी गया है कि ईश्वर अच्युत है अविनाशी है पूर्ण परमात्मा है।

जब प्रभु पूरी कृपा करते हैं तभी हमारा मन इस तरफ मुड़ता है फिर भगवान अपना विरद रखते हुए अपनी ओर हमे खींच लेते हैं

शब्द 87

राखो राखो कृपाधार, तेरी शरण तेरे द्वार ॥२॥

II

जिस तूं राखे तिस कउन मारे
सब तुमहि अंतर बाल समारे
राखो - - -

III

कोटि उपाव चितवत है प्राणी
सो होवे जो करे चोज विडाणी
राखो - - -

IV

जिन सेविआ निरभउ सुख दाता
तिन भउ दूर किआ एक पराता
राखो -

V

जो तूँ करे सोई फुनि होय
मारे न राखे दूजा कोय राखो —

VI

किआ तूँ सोचहि माणस वाणा
अन्तरयामी पुरख सुजान
एक टेक एको आधार
सब किछ जाणे सिरजणहार राखो -

जिस ऊपर नदर करे करतार
तिस जन के सब काज सवार
तिस को राखा एको सोय
जन नानक अपड न साके कोय

राखो राखो निरधार

इस शब्द में रामजी हमें दृढ़ निश्चय करवा रहे हैं कि जिस को भगवान अपनी शरण दे देते हैं उस की रक्षा का सारा भार आप अपने ऊपर ले लेते हैं बस हमने उन की शरण में रहना है और ऐसे अरदास करनी है हे रामजी आप हमें अपनी शरण में रखो हम आप के दरबार में नित्य प्रति आयें। हमें ऐसा दृढ़ निश्चय है जिस की रक्षा आप करेंगे उसे कोई भी भय नहीं हो सकता उसे कोई नहीं मार सकता (विकार उसे मार नहीं सकते वह उन पर कन्ट्रोल कर लेता है) हम कितने उपाय सोचते हैं परन्तु होता वही है जो मेरे राम जी को अच्छा लगता है उसी में मेरी भलाई होती। परन्तु जो सदा राम जी की सेवा में रहते हैं उन्हें तो किसी प्रकार का भी भय नहीं लगता। [illegible]

रहते है। उन्हें दृढ़ निश्चय होता है कि जो मेरे रा[illegible] जी करेंगे ठीक ही करेंगे। वह फिर किसी प्र[illegible] की भी सोच नहीं करता बस उन्ही की सोच करता है उन्ही को याद करता है उन्ही का ध्यान करता है उन्ही का आश्रय लेता है उन्ही की कृपा मांगता है और मन मे दृढ़ निश्चय रखता है कि जिस पर उन की कृपा हो गई उस तक किसी की भी पहुँच ना हो सकती। वह भवसागर से जीत कर जाता है

लोक सुखी परलोक सुहेले
नानक हरि प्रभु आपे मेले

रामजी राम राम

श्रीराम
23 1.97

राम जी राम राम
श्री राम
Tomorrow

266

शब्द 88

जा का मीत साजन है समिआ
तिस जन को कहु का की कमिआ 2

II

जा की प्रीत गोविन्द संग लागी
दुख दर्द भ्रम ता का भागी

जा का - -

III

जा को रस हरि रस है आइओ
सो अनरस नाही लपटाइओ

जा का -

IV

जा का कहिआ दरगह चले
सो किस को नदर लै आवे तले

जा का -

V

जा का सभ किछ ता का होय
नानक ता को सदा सुख होय

जा का मीत - -

मार्गीय शब्द 88

जिस का मित्र बन्धु सखा स्वामी रामजी बन जाते है उसे संसार मे किसी प्रकार की भी कमी नही आती है

"प्रभु के सिमरण ऋद्धि सिद्धि नवनिधि"

परन्तु उन को अपना बनाने के लिए सब यत्न करने पड़ते है

एको जप एको सलाह
एको सिमर एक मन आह

क्या लक्षण है कि हमारे वह सब किछ बन गये है। उस जीव को फिर संसारिक रसो मे रस नही आता उसे बस उन्ही की बात उन्ही का ध्यान, भजन शब्द नाम जाप अच्छा लगता है। वह मन मे दृढ निश्चय रखता है कि रामजी ने तो मुझे परलोक तक नही छोड़ना यह कच्चे रिश्ते तो सब यही रह जाते है। फिर २ रामजी हमे याद करवाते रहते है कि यह सब संसार जिस का है २ उन्ही का बन जा फिर देख सारा संसार तेरा हो जायेगा

रामजी राम राम श्रीराम 23.1.97

शब्द 89

मेरे रामराय तूँ संता का [illegible] तेरे
तेरे सेवक को भउ किछु नाही
जम नही आवे नेरे
मेरे रामराय — —

II

जिस के सिर ऊपर तू स्वामी
सो दुख कैसा पावै
बोल न जाणै माया मद माता
मरणा चीत न आवै मेरे रामराय

III

जो तेरे रंग राते स्वामी
तिन का जनम मरण दुख नासा
तेरी बख्श न मेटै कोई
सतगुर का दिलासा मेरे रामराय --

IV

नाम धियाइन सुख फल पाइन
आठ पहर आराधहि
तेरी शरण तेरै भरवासै. पंच [illegible] लै साधे

मेरे रामराय तू वता दा - .

गिआन धिआन किछ करम न जाणा।
सार न जाणा तेरी
सभ ते वडा सतगुरु नानक
जिन कलि राखी मेरी
मेरे राम राय - .

शब्द व्याख्या 89

राम जी के सेवक को किसी प्रकार का भी भय नही लगता क्योकि वह हमेशा अपने प्रभु की याद मे रहता है।

जिस का नाम दशम द्वार तक पहुंच गया है उसे संसार का कोई भी दुख दुखित नही कर सकता। और जो माया मे मस्त है उन्हे नाम कभी याद ही नही आता।

जो निरन्तर नाम मे ही मस्त रहते है उन का आवागमन भी मिट जाता है यह निश्चय तो सतगुरु स्वयं करवाते है

जो सदा सच्चे नाम मे लीन रहते है जो

राम जी राम राम
श्रीराम
Tomorrow

कि अन्तर का सुख है आठ पहर अपने चिन्तन में ही मग्न रहते हैं इतना कुछ कर के भी अपने में अहमता नही आने देते और कहते हैं

हे प्रभो मुझ मे तो न ज्ञान है न ध्यान है न मेरे कर्म शुभ है पर मुझे दृढ़ निश्चय है कि रामजी ने मुझे अपना लिया है वह अवश्य ही दोनो लोको मे मेरी लाज रखेंगे।

लोक सुखी परलोक सुहेले
नानक हर प्रभ आपे मेले

रामजीरामराम
श्रीराम
23.1.97

शब्द 90

गुरु पूरे मेरी राख लई 2

अमृत नाम हृदय में दीना 2

जन्म जन्म की मैल गई 2

गुरु पूरे - -

II

निवरे दूत दुष्ट बैराई 2

गुरु पूरे का जपिआ जाप 2

कहा करे कोई बेचारा 2 गुरु पूरे - -

प्रभु मेरे का वड परताप 2

III

गुरु पूरे - -

सिमर सिमर सिमर सुख पाइआ

चरण कमल राख मन माही 2

तां की शरण परिओ नानक दास 2

जा ते ऊपर को नाही 2 गुरु पूरे - -

राम जा राम राम

272 श्रीराम

शब्द 90 (मार्गीय)

राम नाम जप हृदय माही
नानक पति सेती घर जाही

जो भी जीव इस मृत्यु लोक मे आया है उसने अवश्य ही वापिस जाना है, जिन्होने सतगुरु की शरण ली है उन से नाम दान लिया है, और सदैव अपनी तव्वजो विषयो से हटा कर नाम मे जोड़ते रहते है वह तो हंसते २ इस शरीर को छोड़ कर अपने सतगुरु मे मिल जाते हैं अर्थात उन की पति सतगुरु आप रखते है।

इस लिए हमे गुरु मन्त्र मे पूर्ण विश्वास होना चाहिए हर समय गुरु मन्त्र का जाप अन्तर मे चलते रहना चाहिए तभी सतगुरु रामजी प्रसन्न होते हैं। यही नाम ही अमृत है।

इस का निरन्तर जाप करने से हमारी जन्मो जन्मान्तरो की विषयो की मल उतर जाती है। यह सब विषय विकार धीरे कम होते २ समाप्त भी हो जाते हैं। संसार मे कोई भी हमारा कुछ भी बिगाड़ नही सकता क्योंकि रामजी आप ही अन्तर मे बैठ कर जाप करते रहते हैं।

फिर रोज के सतसंग मे नाम की महिमा बताते हुए हमे संसार मे निर्भय कर देते हैं [illegible]

शब्द ९१

फिर घर बैसहो हरिजन प्यारे
सतगुरु तुम्हरे काज सवांरे २+१+१
फिर घर ---

II

दुष्ट दूत परमेश्वर मारे २+१
जन की पैज राखी करतारे फिर घर बैसहो.

III

बादशाह शाह सब वस कर दीन्हे
अमृत नाम महारस पीने २ सतगुरु तुम्हरे -

IV

निर्भय होय भजो भगवाने
साध संगत मिल कीन्हो दाने २
सतगुरु तुम्हरे --

V

शरण परे प्रभु अन्तरयामी
नानक ओट पकरी प्रभु स्वामी २
सतगुरु तुम्हरे -

रामजीराम राम श्रीराम
२४।. ९७

शब्द 91 (व्याख्या)

गीता में अर्जुन भगवान को कहते हैं

हे कृष्णा यह चंचल हठी व बलवान दृढ़ है
मन साधना दुष्कर दिखे, जैसे हवा का बांधना
भगवान बताते हैं
अभ्यास और वैराग्य से यथार्थ होती

यही विचार यहां सतगुरु प्रकट कर रहे हैं और हमें साधना आज्ञा दे रहे हैं कि ऐ गुरमुख तू अपने मन को शब्द के साथ जोड़ इस नाम में स्थिर कर दे मन में कोई भी विचार न आने दे और जो तुम्हें गुरमन्त्र मिला है उस को निरन्तर जाप कर, तेरे जीवन का परम लक्ष्य तो यही है। जब तो हमारी आज्ञा का पालना पूरी तरह॥ करेगा तो शेष सारे कार्य आप ही तेरे पूरे होते जायेंगे,

कोई भी बाधा, बाहर की या अन्तर की रामजी अपने आप दूर कर देंगे और संसार में तेरी लाज रखेंगे, जितने भी तेरे आगे पीछे सामाजिक प्राणी हैं सब तेरे वश में हो जायेंगे, क्योंकि जो अमृत तेरे अन्दर नाम का चल रहा है वह तुम्हें मस्ती देगा, मस्तराम को सब आदर देते हैं। फिर तूं कभी भी किसी से नहीं डरेगा।

निर्भय पद को प्राप्त कर लेगा। संतों के पास बैठेगा उन से शिक्षा प्राप्त करेगा, और उसे लाभ होगा तो, फिर दूसरों को भी इस लाभ से लाभान्वित करेगा। जैसे अगर तुमने "कर कृपा" गुरुमन्त्र का जाप किया तुम्हें आनन्द आया, या संसार की भी कोई इच्छा पूरी हो गई तो आपने दूसरे को भी बताया। इस प्रकार आपने दान भी किया

"आप जपो अवरह नाम जपावो
कहता सुनता रहता गति पावहो"

इस प्रकार निरन्तर अपने सतगुरु की शरण में रहने से हमारी सारी अन्तर बाहर की स्थिति सब जान लेते हैं और अपने आप वह दयालु हमारे अन्तर बाहर की उन्नति करते रहते हैं। जिससे हम अन्त में भवसागर से पार हो जाते हैं

रामजीरामराम श्रीराम
24.1.91

 276

Week 13 राम राम रामराम
श्री राम
Tomorrow

शब्द 92

जो मांगे ठाकुर अपने ते, सोई 2 देवे 2

II

नानक दास मुख ते जो बोले, इहा उहां सच होवै

जो मांगे - .

III

चतुर दिशा कीन्हो बल अपना

सिर ऊपर कर धारेहो

कृपा कटाक्ष अवलोकन कीन्हो

दास का दुख बिदारिओ

जो मांगे - .

IV

हरि जन राखे गुरु गोविन्द, राखे गुरु गोविन्द

कंठ लाये अवगुण सब मेटे, दयाल पुरख बखंद

जो मांगे - .

रामजी रामराम

श्रीराम

शब्द 92 व्याख्या

गीता मे भगवान देव अर्जुन के द्वारा सम्बोधित करते हुए कहते हैं

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु

हे अर्जुन तू मेरा हो जा फिर देख कैसा मैं तुझे संसार मे आनन्दपूर्वक रखूंगा। परन्तु जीव इस मोह माया मे इतना फंसा हुआ है कि वह इस नश्वर वस्तुओ को ही अपना समझता है

वही भाव सतगुरु यहाँ प्रकट कर रहे है पहले तू अपने ठाकुर जी को अपना बना। सबसे ज्यादा महत्ता तू उन को दे। हर समय उन्ही का ही चिन्तन कर। शेष सब पदार्थो को तू उन से गौण कर के मान

फिर देख, जो तेरे मन मे कोई फुरना भी आये तो अपने आप ही पूरी हो जायेगा। किसी के लिए भी अगर प्रार्थना करेगा तो न उस की भी मनोकामना पूरी हो जायेगी।

फिर उस गज का उदाहरण दे कर समझाते

गज और ग्राह लड़े जल भीतर
लड़त 2 गज हारिओ।

जो नर सूंड रही जल ऊपर तब हरि नाम पुकारिओ
गज ने पहले सब का आश्रय लिया परन्तु किसी ने भी उस की मदद नहीं की। अगर थोड़ी की भी तो उसे बचा नहीं सके। तब अंत भगवान से करुणा पुकार की तब एक दम से भगवान दौड़े और ग्राह के मुख में अपना चक्र चलाया। तो बन्धन से छूट गया। ऐसे ही हमें पुकार भी करनी है तो सदैव अपने राम जी से करनी है उन्हें ही अपना स्वत्व समझना है।

हमें गुरुसाहब फिर सान्तवना देते हैं कि जो भी जीव केवल अपने राम जी की कृपा मांगते हैं उन के नाम में दृढ़ विश्वास रखते हैं उन्हें हरि के जन कहा जाता है ऐसे हरि के दासों की लाज अवश्य प्रभु रखते हैं और उन के अवगुण सब दूर कर के उन्हें अपने हृदय से लगा लेते हैं अर्थात उन्हें प्यार करते हैं।

इस लिए हर समय हमें अपने राम जी को अपना बनाना है "सब से प्यारा सब से न्यारा"—
प्रभु जी नाम तुम्हारा"
राम उपासक जे जग माही। एही सम प्रिय तिन के कछु नाही

शब्द 93

ठाकुर होय आप दइआल २
भई कल्याण आनन्द रूप होई है
उभरे बाल गोपाल
ठाकुर होय आप..

II

दुई कर जोड़ करी बेनती
ठाकुर अपना धिआइआ
हाथ दे राखे परमेश्वर
सगला दुरत मिटाइआ
ठाकुर होय आप..

III

मिल वर नारी मगल गाइआ
ठाकुर का जयकार
कहो नानक तिस गुरु बलिहारी
जिनि सब का कीआ उद्धार
ठाकुर होय आप.

रामजीरामराम
श्रीराम
23.1.97

31 March Monday 280

राम जी राम राम श्रीराम

Tomorrow

व्याख्या शब्द 93

सब से पहले तो हम अपने सतगुरु पर बलिहारि जाते हैं जिन्होंने ने हमें मगल गाना सिखाया। रामायण कहती है भगवान का नाम मगल करने वाला है और सब अमगल दूर करने वाला है

"मगल भवन अमगल हारी
द्रवहु सो दशरथ अजर बिहारी"

जब हमारी बुद्धि मन चित सब मिल कर संतो के साथ बैठ कर खूब कीरतन करते हैं तो हमारे जीवन का उद्धार होता है। फिर ठाकुर जी हम पर दया करते हैं। उन की कृपा से घर मे सब बाल गोपाल प्रसन्न रहते हैं। जब अपने राम जी के आगे सब मिल कर हाथ जोड़ कर अरदास करते हैं तो भगवान का कृपा भरा हाथ हमारे सिर पर आशीर्वाद के रूप मे स्वयं ही आ जाता है। फिर जीवन मे सब प्रकार का कल्याण ही लगाता है जो अपने इष्ट देव के जयकारे लगाता है उस का जीवन सभी जय२ कार करते हैं। जयकारे लगाओ

कृष्ण कन्हैया की जय नन्द किशोर की जय
मुरली वजैया " " राम बिहारी की जय
सावन चोर की जय

जयकारा ए शेरांवाली दा
बोल साचे दरबार की जय

II

जयकारा ए वीर बजरंगी
हर हर महादेव

III

जयकारा ए सतगुरुदेव महाराज दा
जय जय गुरुदेव

IV

जो बोले सो अभय
बोल सनातन धर्म की जय

V

जो बोले सो निहाल
सत स्री अकाल

जिस का हम जोर से जयकारा लगाते हैं उन
शक्ति हमारे मे प्रवेश करती है

[illegible] सीताराम [illegible]

राम जी राम राम
श्रीराम
Tomorrow

282

शब्द 94

सतगुरु होय दयाल 2 सतगुरु होय दइआल
तो श्रद्धा पूरिए
सतगुरु होय दयाल 2 सतगुरु होय दइआल
तो कबहु न झूरिए
सतगुरु होय दइआल, सतगुरु होय दयाल
तो दुख न जाणीए
सतगुरु होय दयाल, सतगुरु होय दइआल
तो हरि रंग माणीए
सतगुरु होय दयाल, सतगुरु होय दइआल
तो जम का डर केहा
सतगुरु होय दयाल, सतगुरु होय दइआल
तो सद ही सुख देहा
सतगुरु होय दइआल, सतगुरु होय दइआल
तो नवनिधि पाइए
सतगुरु होय दयाल, सतगुरु होय दयाल
तो सच समाइए

केवल सतगुरु की कृपा चाहिए — राम जी राम राम श्रीराम

शब्द 95

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर, गुरु बिना मैं नाही होर

गुरु की टेक रहहु दिन रात, गुरु की कोई न मेटै दात
गुरु गुरु 2 कर मन मोर---

गुरु परमेश्वर एको जान, जो तिस भावै सो परवान
गुरु गुरु गुरु कर मन मोर ---

गुरु चरणी जा का मन लागै, दुख दर्द भ्रम तां का भागै
गुरु गुरु गुरु कर मन मोर---

गुरु की सेवा पावे मान, गुरु ऊपर सदा कुरबान
गुरु गुरु गुरु कर मन मोर

गुरु का दर्शन देख निहाल, गुरु के सेवक की पूरी घाल

गुरु के सेवक को दुख न व्यापै, गुरु का सेवक दह दिस जापै
गुरु ---
गुरु गुरु गुरु - --

गुरु की महिमा कथन न जाई पारब्रह्म गुरु रहिया समाई
गुरु गुरु गुरु --

कहो नानक जा के पूरन भाग गुरु चरणी तां का मन लाग॥

Amarnath श्रीराम

रामजीरामराम
श्रीराम

गुरु महिमा

गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिन्द, गुरु मेरा पारब्रह्म गुरु भगवंत
गुरु मेरा देव अलख अभेव, सरब पूज चरण गुरु देव
गुरु मेरी –

II
गुरु बिन अवर नाही मैं थाउ, अनदिन जपउ गुरु गुरु नाउ
गुरु मेरा ज्ञान गुरु हृदय ध्यान, गुरु गोपाल पुरख भगवान
गुरु मेरी – –

III
गुरु की शरण रहउ कर जोर, गुरु बिना मैं नाही होर
गुरु बोहिथ तारे भवपार, गुरु सेवा जम ते छुटकार
गुरु मेरी –

IV
अंधकार में गुरु मन्त्र उजारा, गुरु के संग सगल निस्तारा
गुरु पूरा पाइए वडभागी, गुरु की सेवा दुख न लागी

V
गुरु का शब्द न मेटै कोय, गुरु नानक २ हरि सोय

रामजीरामराम
श्रीराम
24.1.97

"शब्द 97"

मेरा प्यारा प्रीतम सतगुरु रखवाला।
हउ बारिक दीन करहु प्रतिपाला।।
मेरा प्यारा ।

II

मधुसूदन मेरे मन तन प्राना।
हउ हरि बिन दूजा अवर न जाना।
कोई सजन संत मिले वडभागी
मैं हरि प्रभ प्यारा दस जीओ।

मेरा प्यारा ।

III

हउ मन तन खोजी भाल भालाई
क्यों प्यारा प्रीतम मिले मेरी माई
मिल सत संगत खोज दसाई
विच संगत हरि प्रभ वसे जीओ। मेरा प्यारा

IV

मेरा मात पिता गुरु सतगुरु पूरा।
गुरु जल मिल कमल विगसे जीओ।

मैं बिन गुरु देखे नींद न आवे, मेरे मन तन वेदन
हरि हरि दया करो गुरु मेलहु, जन नानक ग्यान विरह
[illegible]

राम जी और राम राम
श्री राम

286

Tomorrow

21-6-98

हरि चरण कमल की टेक
सतगुरु दित्ति तुल के वलराम जीओ
II हरि चरण --
हरि अमृत भरे भंडार
सब किछ है घर तिस के वलराम जीओ
हरि चरण ---
III
बाबुल मेरा वड समरथा
करण कारण प्रभु हारा
जिस सिमरत दुख कोई न लागे
भवजल पार उतारा 2
हरि चरण कमल --
IV
आदि जुगादि भगतन का राखा
उसतति कर कर जीवां
नानक नाम महारस मीठा
अनदिन मन तन पीवां
हरि चरण --

शब्द 99

सतगुरु अपने सुणी अरदास
कारज आया सगला रास 2

II

मन तन अंतर प्रभु धिआइआ
गुरु पूरे डर सगल चुकाइआ
सब ते वड समरथ गुरुदेव
सभ सुख पाये गुरु की सेव

III सतगुरु - -

जां का कीआ सभ किछ होई
तिस का अमर न मेटे कोय
पारब्रहम परमेश्वर अनूप
सफल मूरत गुरु तिस का रूप सतगुरु

IV

जां के अंतर बसे हरि नाम
जो जो पेखे सब ब्रहम ज्ञान
बीस बिसवे जां के मन प्रगास
तिस जन के पारब्रहम का निवास

V

तिस गुरु को करी सद नमस्कार

राम जी राम राम
श्रीराम
Tomorrow

तिस गुरु को जाऊं सद बलिहार
सतगुरु के चरणा धोई २ पीवां
गुरु नानक जप जप सद जीवां

रामजीरामराम श्रीराम
२५.१.९७

(भावार्थ)

अपने सतगुरु का मन्त्र जाप कर के कोई भी कार्य करो अवश्य ही सफलता मिलेगी अगर हम उस मन्त्र का वैसे भी निष्काम भाव मे जाप करते रहते हैं तो। हम पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि भगवान पूर्ण है, सतगुरु साक्षात भगवान का ही स्वरूप है। जो हर समय गुरु मन्त्र का जाप करता रहता है उसे सब जगह प्रभु ही प्रभु नजर आता है। जिस का विश्वास शत प्रतिशत होता है उसी मे प्रभु प्रकट होते हैं ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास बढ़ाने वाले सतगुरु ही हैं उन के चरणा धो २ कर पीने चाहिए अर्थात उन का नाम जप २ कर जीवन व्यतीत करना है

शब्द/00

आवहो जी सजणा। हउ देखां दरशन तेरा

देखा दरशन तेरा हउ देखां दरशन तेरा।

I आवहो जी --

घर आपनड़े खड़ी तका मै मन चाउ घनेरा

मै मन चाउ घनेरा। मै मन चाउ घनेरा।

आवहो ---

III

चाउ घनेरा। सुन प्रभु मेरा मै तेरा भरवासा

दरशन देख भई निहकेवल जनम मरण दुख।।

आवहो जी सजणा। ---

IV

सगली जोति जाता तूं सोई. मिलिआ भाइ सुभाइ

नानक साजन को बलि जाइए. साचा मिले घर आये।

आवहो जी सजणा। ---

राम जी राम राम

श्रीराम
24.1.97

शब्द 101

हम घर साजन आए, हम घर साजन आए

साचे मेल मिलाए साचे मेल मिलाए

II

सहज मिलाए हरि मन भाए, पचँ मिले सुख पाइआ

साई वसत परापत होई, जिस सेती मन लाइआ

III

अनदिन मेल भइआ मन मानिआ, घरमंदर सोहाए

पंच शब्द धुनि अनहद बाजे, हम घर साजन आए

भावार्थ

जब सतगुरु आत्मा और परमात्मा के बीच बिचौला बन जाते है तो, अन्तर मे प्रभु प्रगट हो जाते है फिर जीव की सहज अवस्था हो जाती है, अन्दर मन मन्दिर शोभायमान हो जाता है, अपने प्रियतम प्रभु प्यारे अन्तर प्रगट होने से कई प्रकार के अन्तर में अनुभव होते है सतगुरु की कृपा से

शब्द 102

संत रहत सुनो रे भाई, उहां की महिमा कथन न जाई
II
आठ पहर निकट कर जो माने, प्रभु का कीआ मीठा मान
एक नाम संतन आधार, होय रहे सब की पग छार
III
वरतरा जां के केवल नाम, अनद रूप कीरतन बिस्रा।
मित्र शत्रु जां के एक समाने, प्रभ अपने बिन अवर न जानो।
IV
कोट कोट अघ काटन हारा, दुख दूर करन जीअ दातारा।
सूरबीर वचन के बली, कउला बपी संती छली
V
तां का संग बाछहि सुर देव, अमोघ दर्श सफल तां की सेव
कर जोड़ नानक करे अरदास, मोहे संत टहल दीजो गुणतास

रामजी राम राम

श्रीराम
25.1.77

292

राम जौ राम राम
श्रीराम

Tomorrow

2166 102

व्याख्या

मनुष्य तीन विशेषताओ से पहचाना जाता है
उस की रहणी बहणी कहणी, वह कैसे रहता है वह
कैसा बोलता है वह कैसा बैठता है।

इस शब्द मे संतो की रहणी बताई गई है
(1) संतो की महिमा कही नही जा सकती
जो ऐसे संत होते है।
(1) जो हर समय अपने रामजी को निकटतम
समझते है और जो जैसे भी परिस्थिति भगवान
उन्हे देते है उसे वह ठीक ही समझते है गिला
शिकवा नही करते
(2) उन का व्यवहार केवल नाम है, सदा कीरतन भजन
सिमरण मे ही ज़्यादा समय व्यतीत करते है
शत्रु मित्र उन्हे बराबर लगते है
(3)
अपने वचन के पक्के होते हैं डरते नही किसी से
भी ऐसे सन्तो के दर्शन मात्र मे करोड़ो पापनाश
हो जाते है
(4) मसागत करते है जैसे संतो की सेवा ...

शब्द 103

सतं जना मिल हरि जस गाइओ

कोटि जन्म के दुख गवाइओ

जो चाहत सोई मन पाइओ

कर किरपा हरि नाम दिवाइओ

सर्व सुख हरि नाम वडाई

गुरु परसाद नानक मति पाई

राम श्री राम राम श्रीराम
25-1-17

भावार्थ

जब सारी संगत अपने सतगुरु के साथ बैठ कर कीरतन शब्द आदि बोलते हैं तो कई जन्मो के पापो का नाश हो जाता है मनवांछित वरदान मिलता है सब प्रकार के सुख मिलते मति शुद्ध हो जाती है

294

श्री राम
राम जी राम राम

शब्द 104 (समर्पण)

हम ते कछु न होय स्वामी
जिउ राखो तिउ रहिए 2

हरि हरि हरि मुख कहिए माधो
हरी हरी हरि मुख कहिए
" " " " "
हम ते कछु न होय-

III
क्या किछ करे कि करहो हारा
क्या इस हाथ विचारे 2
जित तुम लावहु तित ही लागा
पूरन खसम हमारे 2

IV
हम ते कछु - -
करहो किरपा सर्व के दाते
एक रूप लिव लावहो 2
नानक की बेनती हरि पाहि
अपना नाम जपाओ 2
हम ते किछु न होय - .

राम जी राम राम
श्री राम

शब्द 104 (व्याख्या)

हमें अपने राम जी के चरणों मे अपने आपको
पूर्ण समर्पित कर देना है। हे राम जी आप मुझे
जैसे रखेंगे हम उसी मे आप का धन्यवाद करते हैं
बस आप हमारे पर इतनी कृपा अवश्य रखना कि
हमारा मुख हर समय आप का नाम ही सिमरता रहे
हम तो स्वयं कुछ भी नही कर सकते
क्योंकि हम तो आप के हाथ की कठपुतली है
जैसे आप हमे नचाते हो हम नाचते हैं आप तो हमारे
पूर्ण स्वामी हो।

बस आप विशेष कृपा करना कि हमारा ध्यान
आप में ही निरन्तर रहे (शेष संसार सारा झूठा है)
बस एक ही बेनती है आप के मन्त्र का जाप
हमेशा अन्तर मे चलता रहे।

लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा
मन मेरा राम नाम संगि लागा

रामजीरामराम

श्रीराम
27.1-97

16 April Wednesday 296

२१८८/105

से सजोग करो मेरे प्यारे
जित रसना हरि नाम उच्चारे
से सजोग/- -

II

सुण बेनती प्रभ दीनदयाला।
साध गावहि गुण सदा रसाला।

III

जीवन रूप सिमरण प्रभु तेरा।
जिस किरपा करे बसे तिस नेरा।

IV

जन की भूख तेरा नाम आहार
तूँ दाता प्रभ देवनहार

V

राम रमत संतन सुख माना।
नानक देवनहार सुजाना।

से सजोग -

रामजीरामराम
श्रीराम
२७.१.९७

रामायण कहती है

राम कृपा नाशहीं सब रोगा
जो एही भाँति बनै संयोगा

अर्थात अगर ऐसा संयोग बन जाय ? भक्ति का (सत्संग) सत्संग का तो वहां से हम मर्ज मिलेगा मिट जाय करेगा तो सारे रोग नाश हो जायेंगे। इस के लिए हमें अरदास करनी होगी।

हे रामजी ऐसा संयोग करो कि मेरा रसना हर समय आप का नाम ही जपती रहे। हे दीनो पर दया करने वाले बस मेरी एक ही प्रार्थना है कि जैसे संत जन रस ले २ कर गुणानुवाद गाते रहते हैं ऐसे मुझे भी रसवाली भक्ति दो। मेरी जीवन सिमरण सेवा सत्संग से लबालब भरी रहे यह तो केवल आपकी कृपा से हो सकता है जो आप की कृपा मांगते हैं उस के आप हमेशा पास रहते हो।

मैं तो केवल आप का ही अंश हूं आपका नाम ही मेरा आधार है आप तो दाता हैं बस मुझे यही देना राम मे रमण करने के जिन्हे सुख लगता हैं वही पूर्ण संत है देने वाला भी तो सुजान है

शब्द 106

प्यारे राम राम बोल राम राम 2
त्यागो मन के सगल काम
प्यारे राम राम.

II

जिस बोलत मुख पवित्र होय
जिस सिमरत निर्मल है सोय
जिस आराधे जम किछु न कहे
जिस की सेवा सब किछ लहे
प्यारे राम राम.

III

जिस के धोर धरणी आकाश
घट घट जिसका है प्रगास
जिस सिमरत पतित पुनीत होय
अन्तकाल फिर फिर न रोय
राम राम -

IV

सगल धर्म मे उतम धर्म
कर्म करतूत के ऊपर कर्म
जिस को चाहें सुरनर देव
संत सभा की लागहु द सेव

आदि पुरख जिस कीआ दान
तिस को मिलिआ हरि निधान
तिस की गति मति कही न जाइ
नानक जन हरि हरि ध्याइ

प्यारे राम राम बोल -

व्याख्या 21-8-06

हमें अपने मन को सदा जगाते रहना चाहिए, क्योंकि गीता मे श्री कृष्णा जी कहते हैं कि जब हम प्रभु चिन्तन मे होते हैं तो हम इस तरफ जाग रहे होते हैं, जब हमारे अन्दर सांसारिक तरंगे कल्पनाएं आने लगती हैं तो हम उधर भगवान की ओर से सो जाते हैं इधर जाग जाते हैं परन्तु रामायण गीता गुरुवाणी बार२ हमें यही सचेत करते हैं कि हम नाम सिमरण मे ही जागना है, यही हमारे जीवन का परम लक्ष्य है।

इसलिए यहां मन को सम्बोधन कर के जगाया जा रहा है हे मेरे प्यारे मन तूं हर समय राम नाम का जाप कर और शेष सब तरंगे त्याग दे। अब मन को रामनाम जाप के लाभ बताते हैं राम नाम का जाप करने से मन पवित्र होता है और अन्तर मन मे सिमरण करने से अन्तर मन की शुद्धि होती है

अगर हम निरन्तर जाप करते रहेंगे तो अन्त
काल मे हमारा ध्यान रामजी मे ही रहेगा तो यमो से
बच जायेगे, और इस लोक मे नाम जाप से सब कुछ
शुद्ध हो जायेगा।

राम नाम अभिमत कर दाता।
लोक सुख, परलोक पितु माता (रामायण)

नाल नारायण मेरे
यमदूत न आवे नेरे (गुरुवाणी)

वह राम कौन सा है। सर्वव्यापक राम है घट घट मे
रही है उसी की शक्ति पर धरती और आकाश खड़े हैं
उस के नाम का सिमरण करने से कितना भी पापी हो
धीरे २ पवित्र हो जाता है और अन्त समय तक उसकी
सारी संसारिक आसक्ति भी खत्म हो जाती है इस लिए
अन्त मे जीव दुखी नही होता। सब से उत्तम धर्म यही
है (क्योंकि नाम सिमरण तो हम हर समय हर स्थान पर
कर सकते है) पूजा तो केवल मन्दिर आदि मे ही
हो सकती है। यह केवल हम संतो की सेवा से ही
प्राप्त हो सकती है (अर्थात उन का संग करने से)

यह भी जिसको स्वयं भगवान कृपा करे आप ही अपने जीव को जगा दे और सतगुरु मिला दे। क्योंकि भगवान की गति मति हम कभी नही जान सकते। भगवान स्वयं गीता मे कहते हैं
"मम माया दुरत्या"

रामजीराम राम श्रीराम
27.1.97

शब्द 107
हरी को नाम सदा सुखदाई
जा को सिमर अजामिल उधरिओ
गनिका हू गति पाई
हरि को नाम -
II
पचाली को राज सभा मे
राम नाम सुधि आई
ता को दुख हरिओ करुणामय
अपनी पैज बढ़ाई
जिह नर जस किरपा निधि गाइओ
ता को भइओ सहाई
कहो नानक मै इही भरोसे गही आन शरणाई

22 April Tuesday 302 — ਕ੍ਰੀਰਾਮ Tomorrow

21/6/08

ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो 2
सगल सृष्टि को धणी कहीजे
जन को अंग निरारो
ठाकुर ऐसो --

II
पतित पवित्र लिए कर अपने
सगल करत नमस्कारो
ठाकुर --

III
बरन जात कोऊ पूछे नाही
बाछहि चरण रवारो
ठाकुर --

IV
साध संग नानक बुधि पाई
हरि कीरतन आधारो
ठाकुर -

V
नामदेव कबीर त्रिलोचन कबीर दासरो
मुक्त भइओ चमिआरो
ठाकुर ऐसो

रामजीरामराम
ਕ੍ਰੀਰਾਮ
27.1.97

सत्य 108 शब्द व्याख्या

सतनाम की महिमा बताते हुए सतगुरु हमे जागृत करते है। हे मेरे ठाकुर हे मेरे राम जी आप का नाम जो भी अन्तर में धारण कर लेता है वह संसार मे सम्बन्ध प्राप्त करते हुए भी अपने आप को उस से अलिप्त रख सकता है

" हसंदया खेलदंया पहनदया
विचो रहिए मुक्त "

कितना भी पतित जीव हो नाम जाप से पवित्र हो जाता है और जगत मे पूज्यनीय हो जाता है। आप तो इतने उदार हो कि अपने शरणागत की जात पात भी नही मानते। यह सब केवल संतो के संग से हो सकता है वहां से हमे सम बुद्धि प्राप्त होती है जैसे भगवान ऊंच नीच नही मानते वैसे ही हमारे मे प्रेम समता दया आदि गुण आने लग जाते हैं

भगवान ने तो सारे सब को मान दिया है नामदेव (छीपा) त्रिलोचन (किसान) कबीर (जुलाहा) रविदास (चमियार) हम हर समय अपने रामजी के ध्यान मे रहना है

रामजीराम राम ओ३म्
23.4.97

श्रीराम

Tomorrow

21-8-09

दरशन मांगउ, मांगउ दर्शन मांगउ देह प्यारे
तुम्हरी सेवा कौन कौन न तारे 2

II

जिस नीच को कोई न जाने
नाम जपत ओह चहुं कुंट माने

दर्शन - -

III

जां के निकट न आवे कोई
पगला सृष्टि वांके चरण मलि धोई

दर्शन - -

IV

जो प्राणी काहू न आवत काम
संत प्रसाद तां को जपिए नाम

दर्शन -

V

साध संग मन सोवत जागे
तब प्रभु नानक मीठे लागे

दर्शन - -

रामजी राम राम

श्रीराम
28-1-97

शब्द 110

मन मेरो गज जीहा मेरी काती
मप मप काटो जम की फांसी

II

कहा करउ जाति कह करउ पाती
राम का नाम जपउ दिन राती
मन -

III

रांगन रांगो सीवन सीवो
राम नाम बिन घडी न जीवउ
मन -

IV

भगति करउ हरि के गुन गावउ
आठ पहर अपना खसम धिआवउ
मन -

V

सुइने की सुई रुपे का धागा
नामे का चितु हरि सिउ लागा
मन -

रामजीरामराम
श्रीराम
28.1.97

306 श्रीराम

Tomorrow

शब्द III

मन मेरे गहो हरि नाम का ओला।
तुझे न लागे ताता झोला। 2

II

अनिक यत्न नही होत छुटारा।
बहुत सयाराप आगल भारा।
हरि की सेवा निरमल हेत
दरगह पावहि शोभा सेत मन मेरे -

III

जिउ बोहिथ भै सागर मांहि
अन्धकार दीपक दीपाही
अगनि शीत का लाहस दुख
नाम जपत मन होवत सुख मन मेरे -

IV

उतर जाय तेरे मन की प्यास
पूरी होवे सगली आस
डोले नाही हमरा चीत
अमृत नाम जप गुरमुख मीत

शब्द ॥१॥

नाम अजावद सोई जन पावे
कर किरपा जिस आप दिवावे
हरि हरि नाम जां के हृदय वसे
दुख दर्द तहं नानक नसै

मन मेरे –

(भावार्थ)

अपने मन को सदा जागृत करते रहना है, हे मन यदि तूने रामनाम धन बहुत सारा कमा लिया तो तू सदा शान्त रहेगा, संसार की चतुराइयों से तो मन मे भार बढ़ जाता है। जितना ज़्यादा ध्यान रामजी की ओर करेगा उतना ही सम रहेगा कोई भी आशा रहेगी ही नही परन्तु यह केवल रामजी की कृपा से प्राप्त हो सकता है इस लिए पहले उन की कृपा याचना करो।

कर किरपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

रामजीरामराम श्रीराम

ओर लेहो हरि नाम रे मन, ओर लेहो हरि नाम।
जा के सिमरन दुरमत नासे, पावे पद निर्वाण
ओर लेहो - -

II

बड़भागी ते जन को जानो जो हरि के गुण गावे
जन्म जन्म के पाप खोय के, पुन बैकुंठ सिधावे
ओर लेहो -

III

अजामिल को अन्त काल में, नारायण सुधि आई
जां को गति को योगीश्वर बाछत, सो गति छिन में पाई
ओर लेहो - -

IV

नाहिन गुण नाहीन कछु विद्या
धर्म कवन गज कीन्हा
नानक विरद राम का देखो
अभय दान वह दीन्हा

ओर लेहो

श्रीराम राम श्रीराम

113

शब्द

(यह शब्द बोलने से मन में स्थिरता आती है)

काहे मन तूं डोलता, हरि मनसा पूरणहार 2
हरि मनसा पूरणहार 2
काहे मन तू - - -

II

सतगुरु पुरख धिआइ तूं सभ दुख विसारणहार

III काहे मन - - -

हरि नामा आराध मन, सभ किलविख जाये विकार

IV काहे मन - -

जिन को पूरन लिखिआ तिन रंग लगा निरंकार
ओन्ही छडया माया सुआवड़ा धन संचिआ नाम अपार

काहे मन - .

V

अठे पहर इक तै लिवै मनन हुकम अपार
जन नानक मंगे दान इकेह देह मन प्यार

काहे मन - - .

राम जी राम राम
श्रीराम
Tomorrow

30 April 310
Wednesday

शब्द 114

हरि सिमरत तेरी जाय बलाय
सर्व कल्याण वसे मन आय

II
हरि सिमरत --

जप मन मेरे एको नाम
जीअ तेरे के आवे काम

III
हरि सिमरत -

रैण दिवस गुण गाओ अनंता
गुरु पूरे का निर्मल मंता

IV
हरि सिमरत -

छोड उपाव एक टेक राख
महा पदारथ अमृत रस चाख

V

बिखम सागर सोई जन तरे
नानक जा को नदर करे

रामजीरामराम श्रीराम
29.1.97

राम जी राम राम

श्री राम

Tomorrow

Week 18 तेरी ओट पूर्ण गोपाला

311 May Thursday 1

115

शब्द

लाख खुशियां पातशाहियां जे सतगुरु नदर करे
निमख एक हरि नाम दे, मेरा मन तन शीतल होए
जिस को पूरब लिखिआ तिन सतगुरु चरण गहे

II

सभे थोक परापते जे आवे इक हथ
जनम पदारथ सफल है, जो सच्चा शब्द कथ
गुरु ते महल परापते जिस होवे लिखिआ मथ

III

मेरे मन एकस सिउ चित लाए
एकस बिन सब धंध है सब मिथिआ मोह माए

IV

सफल मूरत सफला घड़ी जित सच्चे नाल पिआर
दुख संताप न लगई जिस हरि का नाम आधार
बांह पकड़ गुरु काढिआ सोई उतरिआ पार

V

थान सुहावा पवित्र है जिथे संत सभा
ढोई तिस ही नू मिले जिन पूरा गुरु लभा
नानक बधा घर जहां जिथे मिरत न जनम जरा

शब्द 116

कीरत प्रभु की गाओ मेरी रसना।
कीरत प्रभु की गाओ। 2

II

अनिक बार कर संतन वन्दन
उहां चरना गोबिन्द जी के बसन।
कीरत प्रभु की गाओ।

III

अनिक भांति कर द्वार न पाऊ
होय कृपाल तॉ हरि2 ... दपावड
कीरत प्रभु की

IV

कोट करम कर देह न सोधा
साध सगंत मेंहि मन परबोधा
कीरत ~ ~
तृष्णा न बूझी बहु रंग माया
नाम लेत सर्व सुख पाया
कीरत प्रभु की.

परब्रह्म जब भये दइआल।
कहो नानक तब छुटे जंजाल।
रामजी
जयराम

117

शब्द

राम नाम गुण गाय लै मीता
हरि सिमरत तेरी लाज रहे
हरि सिमरत जम कछु न कहे
II
तेरे काजि न ग्रह राज माल
तेरे काज न बिखै जंजाल
इष्ट मीत जाण सब छलै
हरि हरि नाम संग तेरे चलै राम नाम --
III
बिन हरि सगल निरारथ काम
सुइना रूपा माटी जान दाम
गुरु का शब्द जाप मन सुखा
इहां उहां तेरो उजल मुखा
IV
कर कर थाके वडे वडेरे
किनही न कीए काज माया पूरे
हरि हरि नाम जपे जन कोय
ता की आसा पूरन होय

हरि भगतन को नाम अधार
संतो जीता जनम अपार
हरी संत करे सोई परवाण।।
नानक दास ता के कुरबाण।।

भावार्थ

संसार की नश्वरता को सन्मुख रखते हुए अपने मन को सदा बारम्बार ऐसा कह समझाते रहना चाहिए कि तूने हर समय संसार मे राम नाम जाप ही करना है। यह बाहर का खेल तमाशा अन्दर नही जाना चाहिए। तभी तेरी मृत्यु सवंरजायगी और आगे वाला जन्म अच्छे घर मे मनुष्य जन्म मिलेगा।।

इस प्रकार से हम अपना जीवन सफल कर सकते हैं

राम जी राम राम श्रीराम
30.1.97

118

शब्द

जाचक नाम जाचें जाचें 2
सरब आधार सर्ब के नायक
सुख समुद्र के दाते 2
जाचक नाम —

II

केती केती मांगन मागे
भावनिआ सो पाइए 2

III

सफल सफल सफल दरस रे
परस परस गुण गाइए 2
जाचक नाम —

IV

नानक तत तत सो मिलिए
हीरे हीर बिधाइए बिधाइए जाचक नाम

भावार्थ

राम जी तो सर्व सुखो के दाता है वही सब के आधार है। सारा संसार उन से मांगता ही रहता है परन्तु जो उन्हे भा जाते है वह उन को अपना लेते हैं फिर उन्हे सदा के लिए अपनी शरण मे रखते है

6 May Tuesday 316

Week 19 राम श्रीराम राम

श्रीराम

Tomorrow

119

शब्द

करहु किरपा गोपाल गोविन्दे
अपना नाम जपावहु 2
हर हरि हरि गुन गावहो 2

II

काढ लिए प्रभु आन विखै ते
साध संगि मन लावहु 2

III

भ्रम भउ मोह कटिओ गुरबचनी
अपना दरस दिखावहु 2

IV

सब की रेन होय मन मेरा
अहंबुद्धि तजावहु 2

V

अपनी भक्ति दे दइआला
वडभागी नानक हर पावहु 2

श्रीराम राम

श्रीराम

(भावार्थ)

केवल पूर्ण प्रभु की कृपा से ही हमारा मन माया से हट कर भगवान के चरणों मे लग सकता है इस लिए कृपा तो अवश्य मांगनी पड़ेगी

फिर जब अन्तर मे नाम चलने लगेगा तो सारे गुण गर्व और मोह दूर हो जायेंगे तभी हम अपने रामजी का साक्षात्कार कर सकते है

फिर हमारा मन निरहंकार हो जायेगा यही वास्तविक भक्ति है। वही भाग्यवान है जिस के जीवन मे कुछ परिवर्तन आ गया है। उस का next जन्म इस से भी अच्छा होगा। इस प्रकार कई जन्मो के बाद परमपद की प्राप्ति हो जायेगी

रामजी राम राम श्री राम
30.1.97

राम राम राम राम
श्रीराम
श्रीराम
Tomorrow

120
शब्द

उचरहु राम नाम लखवारी
अमृत रस पीवहु प्रभ प्यारी

II

हरि सिमरत तेरे मिटे कलेश
चरण कमल मन माहि प्रवेश
उचरहु राम नाम

III

सुख सहज रस महा आनन्द
जप जप जीवे परमानन्द
उचरहु राम नाम

IV

काम क्रोध लोभ मद खोए
साध के संग किलविख सब धोए
उचरहु —

V

कर किरपा प्रभ दीनदयाला
नानक दीजे साध रवाला
उचरहु राम

राम जी राम राम
श्रीराम
30.1.97

May
Friday
9

श्रीराम

२१०८ 121

राम रंग कदे उतर न जाये
गुरु पूरा जिस देइ बुझार

II

हरि रंग राता सो मन साचा
लाल रंग पूरन पुरख बिधाता
राम रंग

III

सतहं संग बैठ गुण गाय
ता का रंग न उतरे जाय
राम रंग -

IV

बिन हरि सिमरन सुख नहीं पाया
आन रंग फीके सब माया
राम रंग

V

गुरु रंगे से भये निहाल
कहो नानक गुरु भये हैं दयाल
राम रंग -

रामजी राम राम श्रीराम

श्रीराम

Tomorrow

122

शब्द

भाई रे राम कहो चित लाय
हर जस वाखर लै चलो, शाहो देवे पतयाय
भाई रे

II

वणज करो वणजारियो, वखर लेहो समाल
तैसी वस्तु विसाहिये, जैसी निबहे नाल
अगो साहु सुजान है लैसी वस्तु समाल
भाई रे -

III

जिना रास न सच है किउ तिना सुख होय
खोटे वणज वणजिये, तन मन खोटा होय
फाही फाथे मिरग जिउ दुख घणो नित रोय
भाई रे

IV

खोटे पोते न पवहि तिन हरि गुर दरस न होय
खोटे कर्म कमावणा आई गया पति खोय
नानक मन समझाइए गुर के शब्द सालाह
राम नाम रंग रतिआ भार न भ्रम तिनाह
जप लाहा अगला, निरभउ हरि मन माह

श्रीरामशरण श्रीराम

शब्द

हम धनवंत भागठ सच नाइ
हरि गुण गावह सहज सुभाइ
पीउ दादे का खोल डिठा खजाना
तां मेरे मन भइआ निधाना
हम धनवंता - .

II

रतन लाल जा का कछु न मोल
भरे भंडार अखुट अतोल
खावें खरचें रल मिल भाई
तोट न आवै वधदो जाई
हम धनवंता - .

III

कहो नानक जिस मस्तक लेख लिखाइ
सो एत खजाने रख्या रलाई

(भावार्थ)

राम नाम धन ही सच्चा धन है जब सहज अवस्था मे अन्दर नाम चलता है तो अन्दर मे कई तरह के नजारे दिखते है यह जितना जपो औरो को भी बताओ उतना ही बढ़ता है। जिसके भाग्य मे यह लिखा है वही इस मे साझीदार हो सकता है

रामजी राम राम श्रीराम

322 श्रीराम

Tomorrow

शब्द 124

जो सुख प्रभु गोविन्द की सेवा
सो सुख राज न लहिए
इसरा धन माधो गोबिन्द धरणीधर
एह सार धन कहिए
जो सुख - ..

II

अग्नि न दहै पवन नही मगनै
तस्कर नेड़ न आवे
राम नाम धन कर संचौनी
सो धन कत ही न जावे
जो सुख -

III

इस धन कारण शिव सनकादिक
खोजत भये उदासी
मन मुकन्द जीहा नारायण
परे न जम की फांसी
जो सुख -

IV

निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी
तासु सुमत मन लागा
जलत अंभ थंभ मन धावत

कहे कबीर मदन के माते
हृदय देख विचारी
तुम घर लाख कोट अश्व हाथी
हम घर एक मुरारी

(भावार्थ)

जब सतगुरु अपनी कृपा से अपने कमाये हुए धन में से अपने शिष्य को गुरुमन्त्र दान देते हैं, तो शिष्य वह आनन्द प्राप्त करता है जो संसार के महाराजाओं को भी प्राप्त नहीं है। यह सच्चा धन कोई भी हमारे से ले नहीं सकता। यह नाम ही हमारे चंचल मन को स्थिर कर देता है। फिर हमें संसार की कोई इच्छा नहीं रहती। वही तो शहनशाह हैं जिसको कोई भी इच्छा नहीं है। यह प्राप्त होती है गुरुमन्त्र जाप से

चाह गई चिन्ता मिटी मनुआ बेपरवाह
जिस को कुछ नहीं चाहिए
वही शहनशाह

[illegible]

श्री राम
31.1.97

शब्द

यह धन मेरो हरि को नाऊँ
गांठ न बांधऊँ बेचन खाऊँ
यह धन --

II

नाऊँ मेरी खेती नाऊँ मेरी बाड़ी
भगति करऊँ जन शरण तुम्हारी
नाऊँ मेरी माया नाऊँ मेरी पूंजी
तुम्हहि छाड़ जानऊँ नहीं दूजी
यह धन -

III

नाऊँ मेरो बान्धव नाऊँ मेरे भाई
नाम मेरे संग होत होय सहाई
माया मे जिसे रहे उदास
कहे कबीर हऊँ ता को दास

(भावार्थ)

हमारी भक्ति हमेशा निष्काम होनी चाहिए इस मे माया का कोई भी हाथ नही होना चाहिए जिन पर प्रभु जी की कृपा हो जाती है वह इस निष्काम सेवा मार्ग मे किसी को भी नही समझते इस माया मे रह कर ... बड़ी जीव धन्य है

126

शब्द

झिम झिम बरसे अमृत धारा 2
मन पीवे सुन शब्द विचारा।
झिम 2 - - —

II

सब किछ घर महि बाहर नाही
बाहर टोले सो भरम भुलाही 2
गुरु परसाद जिन अतंर पाइआ
सो अतंर बाहर सुहेला जीओ
झिम - - -

III

अनद विनोद करे दिन राती
सदा सदा हरि केला जीओ।
जनम जनम का बिछुड़या मिलिआ
साध कृपा ते सूका हरिआ
सुमति पाए नाम ध्याये
गुरुमुख होय मेला जीओ
झिम - .

IV

जल तरंग जिउ जलहि समाइआ
तिउ ज्योति संग ज्योति मिलाइआ
कहो नानक भ्रम कटे किवाड़ा, बहुड़ न होइए जाउला जीओ

326 श्रीराम

(मार्गीय) 126
शब्द

हमारे अन्तर में बहुत कुछ है, इस लिए हम अपने रामजी की कृपा मांगते हैं। उन की कृपा से हमारा मन स्थिर हो जायेगा। नाम की सहज अवस्था हो जायेगी। दुरमति सारी दूर हो जायेगी तो जीते जी ही हमारा आत्मा परमात्मा में मिल जायेगी। ऐसा अनुभव होगा कि हमारे अन्दर अमृत की वृष्टि हो रही है। बाहर के सारे विचार उस को छू भी नहीं सकेंगे

गुरुपरसादि जिन अंतर पाइआ

यह सब सतगुरु की कृपा से ही होगा
इस लिए कृपा मांगो
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला"

रामजीरामराम श्रीराम
2. 2. 97

शब्द

मेरा वैध गुरु गोविन्दा 2
हरे हरि नाम अऊषद मुख देवे
काटे जम के फन्दा मेरा वैध गुरु गोविन्दा

II

जन्म जन्म के दुख निवारे
सूका मन साधारे
दरशन भेटत होत निहाला
हरि का नाम उच्चारे मेरा वैध - - .

III

समरथ पुरख पूर्ण विधाते
आपे करणहारा
अपना दास हरि आप उबारिआ
जन नानक प्राण आधारा मेरा - - .

(भावार्थ)

जिनको पूर्ण सतगुरु मिल गये हैं, वह निरन्तर अपने शिष्यों को नाम की महिमा 2 सुनाकर उन्हें नाम जाप में लगाते रहते हैं जिस के फलस्वरूप अन्दर के बाहर के सारे रोग नाश हो जाते हैं राधे राधे राम राम जी

श्रीराम

Tomorrow

शब्द 128

दुख भंजन तेरो नाम जी 2
आठ पहर आराधिए पूर्ण सतगुरु ज्ञान

दुख भंजन - -

II

जित घर वसे पारब्रह्म सोई सुहावा थाऊ
जम ककर नेड़ न आवई
रसना हरि गुण गाओ

III दुख भंजन -

सेवा सुरति न जाणीए न जापै आराध
ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाध

दुख भंजन - .

IV

भये कृपाल गुसइयां नठे सोग संताप
ताती वाऊ न लगई, सतगुरु राखे आप

V दुख भंजन

गुरु नारायण दयु गुरु, गुरु सच्चा सिरजणहार
गुरु तुठे सभ किछ पाइआ, जन नानक सद बलिहार

दुख भंजन -

गजीरामराम
श्रीराम
2 2. 97

शब्द 129

प्रभु जीओ तूं मेरो सुखदाता। 2
कर किरपा प्रभु दीनदयाला।
गुण गावऊ रंग राता
प्रभु जीओ --

II

प्रभ की शरण सगल भै लाथे
दुख विनसे सुख पाइआ
दइआल होआ पारब्रहम स्वामी
पूरा सतगुरु धिआइआ।
प्रभु जी --

III

सतगुरु नाम निधान द्रिड़ाइआ
चिन्ता सगल विनासी
कर किरपा अपनो कर लीन्हा।
मन वसिया अविनाशी
प्रभु जीओ —

IV

तां को विघ्न न कोऊ लागे
जो सतगुरु अपने राखे
चरण कमल बसे रिद अंतर
अमृत हरि रस चाखे
प्रभु जीओ।

कर सेवा, सेवक, प्रभु अपने
जिन मन की इच्छ पुजाई
नानक दास तां के बलिहारे
जिन पूरी पैज रखाई

प्रभु जीओ -.

(भावार्थ)

राम जी ही हमारे स्वामी हैं दाता हैं हमे उन्ही के नाम मे रत जाना हैं उन की शरण मे जाने से सारे दुख दूर हो जाते हैं। गुरु मन्त्र जाप करने से सारी चिन्ताए मिट जाती हैं। मन मे केवल वही रह जाते है। उन की सेवा करने से मन की सारी कामनाए पूर्ण हो जाती है। और वह अपने भक्त की पूरी पूरी लाज रखते है। हम बस उन्ही के ध्यान मे रहना है।

राम जी राम राम

श्रीराम
2.2.97

130

शब्द

शान्ति भई गुरु गोबिन्द पाई 2
ताप पाप बिनसे मेरे भाई

II

राम नाम नित रसन बखान।
बिनसे रोग भई कल्याण।

III

पारब्रह्म गुण अगम बिचार
साधू संगम है निस्तार

IV

निर्मल गुण गावहो नित नीत
गई व्याधि उबरे जन मीत

V

मन बच क्रम प्रभु अपना ध्याई
नानक दास तेरी शरणाई

शान्ति भई

राम जी राम राम

श्रीराम
2. 2-97

332 श्रीराम

131

शब्द

मेरा सतगुरु रखवाला होआ २

II

धार कृपा प्रभु हाथ दे राखिआ
मेरा गोबिन्द नवा नरोआ
मेरा --.

III

ताप गइआ प्रभु आप मिटाइआ
जन की लाज रखाई
साध संगत ते सब फल पाए
सतगुरु के बलि जाई मेरा -.

IV

हलतपलत प्रभु दोय सवारे
हमरा गुण अवगुण न बिचारिआ मेरा-

V

अटल वचन नानक गुरु तेरा
सफल कर मस्तक धारिआ
मेरा -

र.न जीरामराम श्रीराम
2291

शब्द 132

मिल मेरे गोविन्द अपना नाम देवहो
नाम बिना ध्रग ध्रग असनेह 2

II

नाम बिना जो पहरै खाइ
ज्यों कूकर जूठन मैं जाई
नाम बिना जेता व्यवहार
ज्यों मिृतक मृतक सीगार — मिल मेरे —

III

नाम विसार करे रस भोगा
सुख सुपने नही तन मे रोगा
नाम त्याग करे अनकाज
बिनस जाई झूठे सब पाज — मिल मेरे — —

IV

नाम सों मन प्रीति न लावै
कोट करम करते नरक जावै
हरि का नाम जिन मन न आराधा
चोर की न्याई जमपुर बाधा

लाख आडम्बर बहुत बिसथारा।
नाम बिना झूठे पासारा।
हरि का नाम सोई जन लेइ
कर किरपा नानक जिस देइ
मिल मेर -

(भावार्थ)

अगर हम गुरु मन्त्र जाप नही करते तो हमारी शारीरिक क्रियाएं सब निष्फल है हम अपने राम जी से केवल नाम की ही मांग करनी चाहिए और व्यवहार में भी नाम की महत्ता रखनी है

जैसे कोई भी खाने वाली वस्तु हम ग्रहण करते हैं (खाने लगते हैं तो पहले कर कृपा का मन्त्र बोल कर लेना है) इससे वह खाद्य पदार्थ अमृत बन जाता है। जिससे रोग नही आते आयु बढ़ती है।

रामजी राम राम श्रीराम
2.2.97

शब्द 134

कवन गुन प्रानपति मिलउं मेरी माई 2

II

रूप हीन बुधि बल हीनी
मोहे परदेसन दूर ते आई
कवन गुन -

III

नाहिन दरब न जोबन माती
मोहे अनाथ की करो समाई
कवन -

IV

खोजत खोजत भई बैरागन
प्रभु दरशन को हउ फिरत तिसाई
कवन गुन -

V

दीनदयाल कृपाल प्रभु नानक
साध संग मेरी जलन बुझाई
कवन गुन -

भावार्थ

यह जनमों से बिछुड़ी आत्मा केवल सतगुरु के मिलने से ही अपने प्रियतम परमात्मा के साथ मिल सकती है।

शब्द 135

मन राम नामा बेधिअले
जैसे कनक कला चित्त मांडिअले

II

आनीले कागद काटिले गुडी
आकास मधे भरमीअले
पंच जना सिउ बात बतउआ
चित्त सो डोरी राखिअले
मन राम नाम —.

III

आनीले कुंभ भराइअले उदक
राज कुआर पुरंदरीए
हसत विनोद बिचार करत हैं
चित्त सो गागर राखीअले
मन राम नाम.

IV

मंदरं एक द्वार दस जां के
गऊ चरावन छाडिअले
पंच कोस पर गऊ चरावत
चित्त सो बछरा राखिअले
मन —.

V

कहत नामदेव सुनो त्रिलोचन
बालक पालन पउढीअले। अन्तर बाहर काज बिरू...
चित सो बालक राखिअले

शब्द 136

गुरु पारस हम लोह
मिल कचंन होइआ राम 2
ज्योति ज्योति मिलाइ
काइआ गढ़ सोहिआ राम 2

II

काइआ गढ़ सोहिआ
मेरे प्रभ मोहिआ
क्यो सास गिरास विसारिए 2
अदृष्ट अगोचर पकड़िया गुरशब्दी
सतगुरु के वलिहारिए 2
गुरु पारस

III

सतगुरु आगे शीश भेट देउ
जो सतगुरु साचे भावे 2
आपे दइआ करहु प्रभु दाता
नानक अंकं समावै 2

गुरु पारस - .

राम जी राम राम
श्रीराम
6-2-17

338

28 May Wednesday

राम जी राम राम

श्रीराम

Tomorrow

137

शब्द

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी
तुम सिउ जोर अवर संग तोरी

II

जउ तुम गिरवर तो हम मोरा
जो तुम चन्दु तो हम भए हैं चकोरा
माधवे, तुम नही तोरहु तो हम नही तोरहि
तुम सिउ तोर कवन सिउ जोरहि

III

जो तुम दीवरा तउ हम बाती
जउ तुम तीर्थ तउ हम जाती
जहं जह जाउ तहा तेरी सेवा
तुम सो ठाकुर अवर न देवा

IV

तुम्हरे भजन कटे जम फासा
भगति हेत गावे रविदासा

श्रीराम
6.2.97

रामजीरामराम

Today
राम जी राम राम
149-216
Week 22
339
श्रीराम
Tomorrow
138

May
Thursday
29

शब्द

ऐसी प्रीति करो मन मेरे
आठ पहर प्रभु जानहो नेरे 2

II
मन माहि सिचहु हरि हरि नाम
अनदिन कीरतन हरि गुण गाम
ऐसी - -

III
कहो नानक जा के निरमल भाग
गुरु चरणी तो का मन लाग
ऐसी प्रीति .

रामजी राम राम श्रीराम
6.2.97

शब्द 139

चरण कमल की आस प्यारे
जम ककर नस गए विचारे
II
तू चित आवे तेरी मइआ
सिमरत नाम सगल रोग गइआ
III
अनिक दुख देवहि अवरा कउ
पहुच न साकहि जन तेरे को।

IV
दर्शन तेरे की प्यास मन लागी
सहज आनन्द बसे बैरागी
V
नानक की अरदास सुणीजे
केवल नाम हृदय मे दीजे

रामजी रामराम
श्रीराम

T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S
20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

153-215
Week 22

Today
सत्य श्रीअकाल

Tomorrow
श्रीअकाल

30 May Friday

340

140
शब्द

घोली जी मैं घोली घोली घोल घुमाई लालनो

" " " " " " " "

II

सुण शब्द तुम्हारा मेरा मन भीना।
मेरा मन भीना। गुरु मन दीना।
मेरा मन भीना। जिऊ जल मीना।
लागा रंग मुरारा रंग मुरारा।
घोल घुमाई लालना घोली - - - -

III

कीमत कही न जाई ठाकुर
तेरा महल अपार। महल अपार।
घोल घुमाई लालना। घोली - - -

IV

सगल गुणा के दाते स्वामी
सुणहु बिनउ इक दीना। 2
घोल घुमाई लालना - - —

V

देहु दरस नानक बलिहारि
इह जीअड़ा बलि 2 कीन्हा — घोल घुमाई

2106 141

हउ वारि वारि जाऊ गुरु गोपाला 2
मोहि निरगुण तुम पूरन दाते
दीनानाथ दयाल
हउ वारि वारि —

II

ऊठत बैठत सोवत जागत
जीओ प्राण धन माल
हउ वारि 2 —

III

दरस पिआस बहुत मन मेरै
नानक दरस निहाल
हउ वारि 2 —

रामजीरामराम   श्रीराम
6291

शब्द।।।2

कोई आरा के मिलावे, मेरा प्रीतम प्यारा 2

हऊ तिस पै आप वेचाई 2 कोई ----

II

दरशन हरि देखरा के ताई 2
किरपा करे ता सतगुरु मेले
हरि 2 नाम दधाई मेरा प्रीतम ----

III

जे सुख देह तां तुम्हि अराधी
दुखि भी तुम्हे धिआई
जे भुख दे तां इत ही राजा
दुख विच सुख मनाई कोई अरा --

IV

तन मन काटि काटि सब अरपी
विच अग्नि आप जलाई
पाखा फेरी पाणी ढोवां
जो देवे सो खाई
नानक गरीब ढह पाइआ द्वारे
हरि मेल लेहो वडआई कोई अरा के --

राम जी राम राम

श्रीराम

343

June
Monday
2

शब्द 143

श्री गुरु देवरा जाई व्यारिया 2

सोहना देखणा जाई मन मोहना देवरा जाई

श्री गुरु देवरा जाई –

II

मावड़ माची मोहें वाले, श्री " " "

सगुड सागर होवे बहुरवारा, गुरु सिव घलघे गुरु पैजाई

श्री गुरु देवरा – –

III

जिउ पाराणी जल श्री बिन है मरता

त्यों गुरु सिख गुरु बिन मर जाई

श्री गुरु देवरा –

IV

जिउ धरती सोभ करे जल बरसे

तिउ गुरु सिख गुरु मिल बिगसाई

सेवक का होय सेवक वरता

करि करि बिनउ बुलाई

V

नानक की बेनती हरि पैं

गुरु मिल गुरु सुख पाई

श्री गुरु देवरा –

रामजी राम राम

श्रीराम

7.2.97

344

Today: राम जी राम राम

Tomorrow: श्रीराम

शब्द 1414

मन मेरे, मन मेरे, हरि के चरण रखीजै
दरश प्यास मेरा मन माहिओ
हर पाव लगाई मिलीजे
मन मेरे --

II

खोजत खोजत मारग पाइओ
साधू सेव करीजे
मन मेरे --

III

धार अनुग्रह स्वामी मेरे
नाम महारस पीजे
मन मेरे --

IV

त्राहि त्राहि कर शरणी आइओ
जलतउ कृपा कीजे
मन मेरे --

IV

कर गहि लेहो दास अपने को
नानक अपनो कीजे
मन मेरे -

राम जी राम राम

श्रीराम
7.2.97

शब्द 145

दरशन दीजै खोल किवाड़, खोल किवाड़ 2
हरि दरशन दीजे खोल किवाड़

II

दरमादे ठाढ़े दरबार, तुम बिन सुरति करे को मेरी
करे को मेरी, करे को मेरी

दर्शन - - -

III

तुम धन धनी उदार त्यागी
श्रवनन सुनिअत सुयश तुम्हार

दर्शन दीजो .

IV

मांगउ काहि रंक सब देखउ
तुमहि ते मेरो निस्तार

दर्शन दीजे —

V

जयदेउ नामा विप्र सुदामा
तिन को क्रिपा भई है अपार
कहे कबीर तुम समरथ दाता
चार पदारथ देत न बार

दर्शन दीजे — .

रामजीरामराम

श्रीराम
7.2.97

5 June Thursday

156-209 Week 23

Today: रामजीराम राम
Tomorrow: श्रीराम

शब्द 146

दुई दुई लोचन पेखा, हउ हरि बिन अवर न देखा

II
नैन रहे रंग लाई, अब बेगल कहणा न जाई

III
हउ हरि --

हमरा भरम गइआ भउ भागा
जब राम नाम चित लागा॥

IV
बाजीगर डंक बजाई, सब खलक तमाशे आई
बाजीगर स्वांग सकेला, अपने रंग रहे अकेला

V
कथनी कही भरम न जाई
सब कथ कथ रही लुकाई

VI
जा को गुरमुख आप बुझाई
ता के हृदय रहिआ समाई

VII
गुर किंचित किरपा कीनी
सब तन मन देह हर लीनी
कहे कबीर रंग राता
मिलिओ जगजीवन दाता॥

रामजीराम राम
श्रीराम
7.8.97

J S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M
U N 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28

शब्द 147

दरशन देखि जीवां 2 प्रभु तेरा
पूरा कर्म होवे प्रभु मेरा 2

II

एह बेनंती सुण प्रभु मेरे
देहि नाम कर अपने चेरे

III

अपणी शरण राखु प्रभ दाते
गुर प्रसादि किने विरले जाते

IV

सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता
चरण कमल वसहि मेरै चीता

V

नानक एक करै अरदास
विसरु नाही पूरण गुणतास

(भावार्थ)

हमारे जीवन का लक्ष्य केवल सतगुरु के भगवान के दर्शन की लालसा होनी चाहिए उस के लिए नित्य प्रति अपने सतगुरु से अरदास करनी चाहिए, वह हमें नाम दान दे और उस नाम जाप से हम अपने अन्तर में अपने प्रभु को प्यार कर सकें

राम जी राम राम श्रीराम

348

राम जी राम राम
श्री राम

Today
Tomorrow

शब्द 148

धन सु वेला जित हर दर्शन करना
हउ बलिहारि सतगुरु चरणा

II

जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे
मन जीवै प्रभ नाम चितेरे

III

सच मंत्र तुम्हारा अमृत बाणी
शीतल पुरख द्रिष्टि सुजाणी

IV

सच हुक्म तुम्हारा तख्त निवासी
आये न जाये मेरा प्रभ अविनाशी

V

तुम मेहरवान दास हम दीना
नानक साहब भरपूर लीना

(भावार्थ)

हो ए वही समय धन्य समझना चाहिए जिस समय हम अपने रामजी का दर्शन मिलता है। क्योंकि उन्ही के द्वारा हमारा मंत्र चलता है हम शीतलता मिलती है हम उन पर बलिहार जाते हैं उन की आज्ञा सदा अटल होती वह वडे ही मेहरवान हैं और हम उन के दास हैं उ-होंने हम

शब्द 149

गोविन्द गोविन्द गोविन्द मई
जब ते भेटे साधू दइआला
तब ते दुरमति दूर गई
गोविन्द - - -

II

पूरन पूर रहयो सपूरंन
शीतल शांति दइआल दई
गोविन्द - -

III

काम क्रोध तृष्णा अहंकारा
तन ते होय सगल खई
गोविन्द - -

IV

सत संतोष दया धर्म शुचि
संतन ते इह मंत लई
गोविन्द - .

V

कहो नानक जिन मनहु पछानिआ
तिन को सगली सोझ पई
गोविन्द - .

सतगुरु के मिलने से गोविन्द के दरशन हो जाय सब
जगह प्रभु ही प्रभु दिखने लगा विकार सब नाश हो जाय
गुण सब प्राप्त हो जाय। जिन को मन से पहचान लिया

शब्द 150

आओ जी तू आओ हमारे, हरि जस स्रवणी सुनावना।
तुध आवत मेरा मन तन हरिआ, हरिजस तुमसंग गावणा

II

संत किरपा ते हृदय वासे, दूजा भाव मिटावना।
भगति दया ते बुद्धि परगासे, दुरमति दूख तजावणा

आओ जी - -

III

दर्शन भेटत होत पुनीता पुनरपि गर्भ न पावणा
नउनिधि रिद्धि सिद्धि पाई, जो तुम्हरे मन भावना।

IV आओ जी ——

संत बिना मैं थाउ न कोई अवर न सूझै जावणा
मोहि निरगुण को कोई न राखे संता संग समावणा।

V

कहो नानक गुरु चलत दिखाइआ
मन मधे हर हर रावना

आओजी .

हम केवल अपने (भाविक) राम जी को ही निमंत्रण देना है
उन के आने से मन तन दोनो शीतल हो जाते है उन्हीं की
कृपा से हृदय मे नाम बस जाता है बुद्धि भी प्रकाशित हो
जाती है। उन के दर्शन मात्र से रिद्धिया सिद्धियां आ जाती है
इसलिए सदा संतो का संग करके कीर्तन गाना

शब्द 151

मैं बउरी मेरा राम भतारि 2
रचि रचि तां को करूं सिंगार मैं बउरी —

II

भले निंदउ भले निंदउ, भले निंदउ लोगा
तन मन राम प्यारे जोगा मैं बउरी —

III

वाद विवाद काहू सिउ न कीजै
रसना राम रसाइणु पीजै मैं बउरी — —

IV

अब जीअ जानि ऐसी बनि आई
मिलहु गोपाल निसान बजाई

V

उसतति निंदा करै नरु कोई
नामे श्रीरंग भेटल सोई

(भावार्थ)

जब आत्मा रूपी स्त्री परमात्मा रूपी परमात्मा को प्राप्त कर लेती है तो वह संसार की निंदा आदि से भयभीत नहीं होती वह वादविवाद नहीं करती बस अपने रामजी के ध्यान में ही रहती है और गुरु गोविंद जाप को अपना लक्ष्य मानती है इस प्रकार

352

Today: राम जी राम राम

Tomorrow: श्री राम

216C 152

पूरी आसा जीओ मेरी मनसा।
मनसा मेरे राम पूरी आसा 2

II

मोहे निर्गुण जी मैं सब गुण तेरे
सब गुण तेरे, ठाकुर मेरे
मै कित मुख तुध सालाही
पूरी आसा –

III

गुण अवगुण मेरा किछु न विचारिआ
बख्श लेहो खिन माही
पूरी – –

IV

नउ निधि पाई वजी वधाई
वाजे अनहद तूरे
पूरी – –

V

कहो नानक जी मैं वर घर पाइआ
मेरे लाथे सगल बिसूरे
पूरी – –

रामजी राम राम

श्री राम
14.2.97

शब्द 153

गाओ गाओ री दुलहनि मंगलाचारा
मेरे गृह आए राजा राम भतारा। 2

II

तन रैनी मन पुनरधि करिहउं
पांचउ तत बाराती
राम राय सिउ भांवर लैहउं
आतम तिह रंग राती
गाओ गाओ -

III

नाभि कमल में बेदी रचिअले
ब्रहम ज्ञान उचारा।
राम राई सि सो दूलह पाइओ
अस बडभागा हमारा।
गाओ - -

IV

सुरनर मुनि जन कौतुक आए
कोट तेतीस उजाना।
कहे कबीर मोहे ब्याह चले हैं
पुरख एके भगवाना
गाओ -

राम जी सति राम
श्रीराम

शब्द 154

साहनु देओ वधाईआं जी, मेरे घर राम आए
मेरे राम आए सतगुरु आए
साहनु ---

II

कर किरपा अपने घर आइआ
तां मिल सखिया काज रचाइआ
खेल देख मन अनद भइआ
शहो विहावरा आइआ --
साहनु --

III

गावहु गावहु कामणी
बिबेक बिचार कामणी
हमरे घर आइआ आइआ
जगजीवन भर्तार आइआ
साहनु -

IV

गुरुद्वारे हमरा व्याह होइआ
जां शहो मिलिआ तां जाणीआ
तिहु लोका मे शब्द रविआ है
आपगइआ मन मानिआ

V

आपणा कारज आप सवारे

होरत काज न होई
जित कारज सत संतोष दइआ धर्म है
गुरमुख बूझे कोई
ਧ
नानक भगता का फिर एको सोई
जिनकू नदर करे सा सोहागन होई

(भावार्थ)

इस शब्द में, आत्मा तथा परमात्मा के मिलन का विचार है, जब हमने केवल अपने पूर्ण प्रभु से किरपा मांगी तो उन्होने किरपा कर दी, तब हमारी बुद्धि विवेक और विचार के ज्ञान गाने लगी और सेजाप करने लगी इस प्रकार से वह सर्वशक्तिमान प्रभु हमारे अन्दर आ गए। गुरु के द्वार पर यह सारा कार्य हुआ। अब तो रोम रोम मे उन्ही की आवाज आती है सिमरण चलता है यह सारा कार्य प्रभु आप ही करते है कि हमारे मन मे सत संतोष दया और धर्म आ जाते है यह केवल गुरमुख ही जान सकते है

355

राम जी राम राम

श्रीराम

शब्द 155 (लावां)

हरि पहलड़ी लांव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि- राम जीओ
बाणी ब्रहमा वेद धर्म द्रिड़हो, हरि पाप तजाइआ ,, ,,
धर्म द्रिड़हो हरिनाम ध्यावहो सिमृति नाम द्रिड़ाइआ
सतिगुरु पूरा आराधो सब किलविख पाप गवाइआ
सहज आनन्द होआ वडभागी, मन हरि हरि मीठा लाइआ,
जन नानक कहे लावपहले आनन्द काज रचाइआ॥

II

हरि दूजड़ी लांव सतगुरु पुरख मिलाइआ बलिराम जीओ
निरभउ भै मन होय, हउमै मैल गवाइआ बलिराम जीओ
निरमल भउ पाइआ हरिगुण गाइआ, हरि वेखे राम हदूरे
हरि आतम राम पसारिआ स्वामी, सर्व रहिया भरपूरे
अंतर बाहर हरि प्रभ ऐको मिल हरिजन मंगल गाए
जन नानक दूजी लांव चलाई, अनहद शब्द वजाए

III

हरि तीजड़ी लांव मन चाउ भइआ बैरागीआ बलिराम जीओ
संत जना हरि मेल हर पाइआ, वडभागीआ बलिराम जीओ
निरमल हरि पाइआ हरि गुण गाइआ, मुख बोली हर बाणी

संता जना वड भागी पाइआ, हरि कथिए अकथ कहाणी
हृदय हरि हरि हरि धुनि उपजी, हरि जपिए मस्तक भाग जीओ
जन नानक बोले तीजी लावै, हरि उपजिआ मन वैराग जीओ

IV

हरि चौथी लावै मन सहज भइआ, हरि पाइआ वडिभाग जीओ
गुरमुख मिलिआ सुभाइ, हरि मन तन मीठा लाइआ
मन चिंदिआ फल पाइआ स्वामी मेरे प्रभ भाया अनदिन हरि लिव लाई
हरि नाम वजी वधाई
हरि प्रभ ठाकुर काज रचाइआ, मन हृदय नाम निवासी
जन नानक बोले चौथी लावै हरि पाइआ प्रभ अविनाशी

(1) जब सतगुरु मिल जाते हैं वह हम नाम देते हैं। हम नाम दृढ़ करते रहते हैं तो हमारी आत्मा की पहली लांव भगवान के साथ हो जाती है
(2) जब हम अपने आप को निर्भय समझते हैं। सब जगह मेरा प्रभु प्यार दिखाई देता है तो दूसरी लांव शुरू हो जाती है
(3) जब हमारे मन की अवस्था में चाव आ जाता है अन्दर के ... तो तीसरी लांव

और वैराग्य आ जाता है तो तीसरी लांव रामजी के साथ हो जाती है।

जब हमारा मन सहज अवस्था मे आ जाता है, बस अपने गुरुमन्त्र मे मिठास आने लगती है उसी की धुनि मे आनन्द आता है, मन की सारी इच्छाएं पूरी हो जाती है, जब अन्तर मे सतगुरु के नूरी दर्शन होने आरम्भ हो जाते हैं तो हमारी परमात्मा के साथ चौथी लांव हो जाती है फिर तो सारा जीवन आनन्दमय हो जाता है। फिर सब मे राम ही राम दिखने लगता है तब हम कह उठते हैं?

राम श्रीराम राम
श्रीराम

श्रीराम
15·2·97

शब्द 156

भूले मार्ग जिनहि बताइआ
ऐसा गुरु वडभागी पाइआ

II

सिमर मना राम नाम चितारे
बस रहे हृदय गुरु चरण प्यारे

III

काम क्रोध लोभ मोह मन लीना
बन्धन काट मुक्त गुरु कीन्हा

IV

दुख सुख करत जन्म फुनि मूआ
चरण कमल गुरु आश्रम दीआ

V

अगनि सागर बूडत संसार।
नानक बाँह पकड़ सतगुर निस्तारा।

भावार्थ

केवल सतगुरु ही हमे अपना ज्ञान दे कर
इस संसार रूपी सागर से पार करा सकते हैं
सारे बन्धन काट कर हमे स्वतन्त्र कर देते हैं

359

शब्द 157

चरण कमल संग लागी डोरी २
सुख सागर कर परमगति मोरी २

II

आचंल गहाइओ जन अपने कउ
मन बीधो बीधो प्रेम की खोरी

चरण –

III

जस गावत भक्ति रस उपजिओ
माया की जाली सब तोड़ी

चरण –

IV

पूरन पूर रहियो किरपानिधि
आन न पेखउ पेखउ होरी होरी

चरण –

V

नानक मेल लेहो दास अपना
प्रीति न कबहु न कबहु थोरी

चरण कमल

रामजीरामराम श्रीराम
15 2 97

शब्द 158

माई चरण गुरु मीठे मीठे
माई चरण गुरु मीठे

II

बडे भाग देवै परमेश्वर
कोट फला दरशन गुरु डीठे — माई चरण—

III

गुण गावत अच्युत अविनाशी
काम क्रोध विनसे मद ढीठे — माई —

IV

थिर भये साच रंग राते
जन्म मरण बाहुर नही पीठे — माई —

V

विन हरि भजन रंग रस जेते
सत दयाल जाने सब झूठे — माई —

VI

नाम रतन पाइओ जन नानक
नाम विहूणा चले सब मूठे — माई —

— श्रीरामराम

श्रीराम ..

361

राम जी राम राम रा
श्रीराम

शब्द 159

माई प्रभु के चरण निहारो
करो अनुग्रह स्वामी मेरे
मन ते कबहु न डारउ   माई प्रभु —.

II

साधू धूर लाई मुख मस्तक
काम क्रोध निवारो   माई - - .

III

सब ते नीच आतम कर मानो
मन मे इह सुख धारहो   माई - .

IV

गुण गावत अच्युत अविनाशी
कलमल सगरे मारो माई - - .

V

नाम निधान नानक दान पावउ
कंठ लाय उर धारहु माई - - .

राम जी राम राम

श्रीराम
15.2.97

रा

२१०६ १६०

हरि हरि नाम अपार अमोली २
रंग रत्ती मेरे तन की चोली
हरि २ नाम —

II

प्रान पिआरो मनहि आधारो
चित चितउ जैसे पान तंबोली

III

सहज समाइओ गुरहि बताइओ
रंग रती मेरे तन की चोली

IV

प्रिअ मुख लागो जो वडभागो
सोहाग हमारो कतहु न डोली

V

रूप न धूप न गंध न दीपा
ओत पोत अंग अंग संग मौली

VI

कहो नानक प्रिअ रवी सोहागन
अति नीकी मेरी बनी खटोली
हर —

श्रीरामराम

श्रीराम
15 2 97

शब्द 161

जिम जिम बरसे अमृत धारा
मन पीवे सुन शब्द बिचारा

इउ आइआ दूरो चल के
मैं तकी तउ शरणाई जीओ
मैं आसा रखी चित में
मेरा सभो दुख गवाये जीओ

II

जो दीसे गुरसिखड़ा
तिस निव निव लागा पाये जीओ
आखां बिरथा जीअ की
गुर सजणा देहि मिलाई जीओ

III

सोई दस उपदेसड़ा
मन अनत न काहू जाए जीओ
इह मन तैकूं डेवसां
मोहे मार्ग देहो बताए जीओ

IV

इत मार्ग जो चले भाइअड़े
गुरु कहे सो कार कमाए जीओ
त्यागे मन की मतड़ी
विसारे दूजा भाउ जीओ

V

इउं पावहि हर दरसावड़ा
न लगे तती वाउ जीओ
हउ आपहु बोल न जाणदा
मै कहिआ सब हुकमाउ जीओ

VI

हरि भगति खजाना बखशिआ
गुरु नानक कीआ पसाउ जीओ
मै बहुड़ न तृसना भुखड़ी
हउ रज्जा तृप अघाए जीओ

जो दीसे —

रामजी रामराम श्री राम
15·2·97

365

राम ना राम रोक

श्रीराम

शब्द 162

हरि हरि तेरा नाम है जी तेरा नाम है

दुख मेटन हारा

गुरु सेवा ते पाइए गुरु सुख निस्तारा

II

हरि कीआ कथा कहाणीआं

गुरु मीत सुनाइआ

बलिहारि गुरु आपणे

गुरु को बलि जाइओं

हर —

III

आई मिल गुरसिख आ मिल

तूं गुरु के प्यार

IV

हरि के गुणा हरि भावदे

से गुरु ते पाए

जिन गुरु का भाणा मनिआ

तिन घुम २ जाए

IV

जिन सतगुरु प्यारा देखिआ

जिन गुरु की कीती चाकरी
तिन सद बलिहारि
जो हरि हरि नाम ध्यायदे
ते जन परवाणा
तिन बिटहु नानक वारीआ
सदा सदा कुरबाणा

हरि हरि —

रामजीरामराम श्रीराम
15.2.97

शब्द 163 (वाणी कबीरजी)

कबीर रोड़ा होय रो बाट का
तज मन का अभिमान
ऐसा कोई दास होइ
ताहि मिले भगवान

कबीर रोड़ा हुआ तो क्या भईआ
जो पंथी को दुख दे
ऐसा तेरा दास है जिउ धरणी महि रव-
कबीर खेह भई तो क्या भइआ
जो उड उड लागे अंग

हरि जन ऐसा चाहिए ज्यों पानी सरभंग
कबीर पानी भइआ तो क्या भइआ
सीरा ताता होय
हरिजन ऐसा चाहिए जैसा हरि ही होय

व्याख्या

खुदा को है पाना, खुदी को मिटाना
खुदी को कर बुलन्द इतना कि
खुदा तुझ से पूछे तेरी क्या चाहिए

वही विचार कबीर जी इस शब्द मे प्रस्तुत कर रहे हैं कि हरि का दास बिल्कुल हरि जैसा ही होना चाहिए जैसा कि संसार सारा रच कर भी भगवान अलिप्त रहते हैं सब मे समाये हैं फिर भी सब से अलग हैं ऐसे ही हमे भी कमल के समान संसार मे रहना चाहिए। माया मे रहते हुए भी माया हमे छूने न पाये यह केवल प्रभु कृपा से ही सम्भव हो सकता है इस लिए हमे कृपा याचना ही करते रहना है कर किरपा प्रभु - - - -

नारायण राम राम श्रीराम

शब्द 164

एकादशी निकट पेखो हरि राम
इंद्री वस कर सुणो हरि नाम

II

सत संतोख सर्व जीअ ॥४॥३॥
इन विधि व्रत संपूरन ॥५॥३॥

III

धावत मन राखे इक ठाई
मन तन सुध जपत हरि नाई

IV

सभ मैं पूर रहे पारब्रहम
नानक हरि कीरतन कर अटल एह धर्म

व्याख्या

केवल खाना न खाने से व्रत नहीं होता ज्ञानि
का व्रत तो ऐसा है ?

(1) 10 इन्द्रियां ग्यारहवां मन दोनो को एकाग्र
कर के जब हम अन्तर की धुनि सुनते हैं
या जाप करते हैं उतना समय हमारा व्रत
होता है

369

राम श्री राम राम
श्री राम

(2) सत संतोष रखना सब के प्रति
दया भावना होना यह वास्तविक व्रत है
(3) मन को समर्पण करना और मन तथा
तन से जाप करना यह व्रत है
(4) सब मे अपने पारब्रह्म परमेश्वर की
झलक देखना और सारा समय अपना
मन कीरतन मे लगाना यही सच्ची
एकादशी है
अगर व्रत रख कर मन मे विकार आ
रहे हैं तो उस व्रत का कोई लाभ नही
वह पाखण्ड है
इस लिए हमें कर्मकाण्ड से बचना
चाहिए

राम श्री राम राम

श्री राम
24297

शब्द 165

नारायरा नारायरा। नारायरा।

प्रानी नारायरा। सुधि ले 2

II

छिन छिन अउध घटै निस बासुर

बृथा जात है देह

प्राणी नारायरा। -

III

तरनापो बिखियन सिउ खोइओ

बालपन अग्यान।

बिरध भइओ अजहू नही समझै

कउन कुमति उरझान।

IV

मानस जनम दीओ जिह ठाकुर

सो तै किउ बिसराइओ

मुकत होत नर जा के सिमरन

निमख न ता को गाइओ

V

माइआ को मद कहा करता है

संग न काहू जाई

[illegible]

राम जी राम राम
श्री राम

शब्द 164

चरण कमल तेरे धोई धोई पीवा।
मेरे सतगुरु दीनदयाला। 2

II

पारब्रह्म परमेश्वर सतगुरु आपे करणहारा।
चरण धूल तेरी सेवक मांगे तेरे दर्शन को बलिहारा।

चरण कमल -

III

मेरे रामराई जिउ राखहि तिउ रहिए
तुध भावे ता नाम जपावे
सुख तेरा दिता लहिए

चरण कमल -

IV

मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा
जिस तू आप करावें
तहां बैकुण्ठ जहां कीरतन तेरा
तू आपे श्रद्धा लावें

चरण कमल

V

सिमर सिमर सिमर नाम जीवां
मन तन होय निहाला

कुरबाण जाई उस वेला सुहावी
जित तुम्हरे द्वारै आइआ
नानक को प्रभु भये कृपाला
सतगुरु पूरा पाइआ

चरण कमल

व्याख्या

सतगुरु के चरण कमल क्या हैं? उन का दिया हुआ गुरमन्त्र जब हम गुरमन्त्र का जाप करते हैं तो उन के चरण धोते हैं। सतगुरु स्वयं पारब्रह्म परमेश्वर हैं इस लिए उन के दर्शन करने मात्र से वह हमारे कर्ता धर्ता आप ही बन जाते हैं। जब हम निरन्तर उन के दिये हुए मन्त्र का जाप करते हैं तो हमारे में वह शक्ति आ जाती है कि हर अवस्था में उन की आज्ञा में रहना आ जाता है। हमें ब्रह्म सुख प्रतीत होता है। हम समझ आ जाती है कि वास्तविक स्वर्ग तो वही है जहां उन के नाम का कीर्तन पाठ आदि होता है इस प्रकार पाठ करते 2 हमें भोगों में रह कर भी मुक्त अवस्था प्राप्त हो जाती है। हमारा मन तन तभी प्रसन्न मुद्रा में रहता है जब हम उन का नाम जाप ज्यादा से ज्यादा करते हैं। प्रभु कृपा करते हैं तभी पूरा

राम राम राम राम

श्री राम

Tomorrow

373

शब्द 165

चांदना चांदन आंगन प्रभु जीओ अन्दर चांदना

II

आराधना आराधन नीका, हरि २ नाम आराधना

III

त्यागना त्यागन नीका, काम क्रोध लोभ त्यागना

IV

मांगना मांगन नीका, हरि जस गुरु ते मांगना

V

जागना जागन नीका हरि कीरतन मे जागना

VI

इह विधि तिसे पराप्ते, जां के मस्तक भागना

V

कहो नानक तिस सब किछ नीका जो प्रभु की शरणागना

व्याख्या

संसार में बहुत २ सुन्दर २ पदार्थ हैं परन्तु मन में प्रभु क्या है ?

गुरु मन्त्र का जाप करने से जीवन सुन्दर हो जाता है

काम क्रोध लोभ त्यागने से " " " "

कीरतन मे जागना ही उत्तम है, जब हम कीरतन करते हैं तो सभारी विषयों की ओर से सो जाते है इस प्रकार से हमारे मन को शक्ति प्राप्त होती है परन्तु यह सब उन्ही को प्राप्त होता है जिन के भाग्य मे होता है हर एक नही प्राप्त कर सकता। जो शरण मे आ जाता है उसका जीवन अपने आप ही सुन्दर हो जाता है क्योंकि उस के जीवन की देख भाल प्रभु स्वयं आप करते हैं जैसे मां अपने छोटे बच्चे की देखभाल करती है

इस लिए हमें सदा रामजी की शरण मे ही रहना है जो वह कहें वही करना है और वह तो एक ही बात कहते हैं

" गुरा इक देहि बुझाई
सभना जीआ का इको दाता
सो मै विसर न जाई "

सबजीरामराम

श्रीराम
25-2-97

21 July Monday 375

Week 30 राम जी राम राम

श्रीराम

Tomorrow

शब्द 166

राख पिता प्रभु मेरे 2
मोहि निरगुण सब गुण तेरे

II राख पिता - - - -

पंच विवादी एक गरीबा राखो राखनहारे
खेद करहि और बहुत सतावे आइओ शरण तुहारे

राख पिता प्रभु - -

III

कर कर हारिओ अनिक बहुभांति, छोड़हि कतहु नाही
एक बात सुन ताकी ओटा, साध संग मिट जांही

राख पिता - - -

IV

कर किरपा संत मिले, मोहि तिन ते धीरज पाइआ
संती मंत्र दीओ मोहि निरभऊ, गुर का शब्द कमाइआ

V राख पिता - -

जीत लिए ओह महा विवादी, सहज सुहेली बाणी
कहो नानक मन भइआ परगासा, पाया पद निरबाणी

राम जी राम राम श्रीराम
25297

व्याख्या

हे मन सदा निर्गुण बन कर, अपने रामजी से यही कहना है कि आप हमारे सच्चे पिता हैं, इस लिए आप इन विकारों से आप ही रक्षा कर सकते हैं। यह मुझे बहुत दुखी करते हैं अब मै आपकी शरण मे हूं। मैने तो बहुत यत्न किया परन्तु यह तो बारी २ से आकर मुझे तंग करते हैं "काम क्रोध लोभ मोह अहंकार ईर्षा द्वेष"। फिर मुझे शास्त्रो से पता लगा कि सन्तो के संग से यह छूट सकते हैं फिर मैने रामजी की कृपा मांगी क्योंकि?

बिन सतसंग विवेक न होई
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई

फिर मुझे पूर्ण सन्त मिले, उन्होने मुझे कृपा करके ही गुरु मन्त्र दिआ। जब मैने खूब गुरु मन्त्र का जाप किया तो धीरे २ यह विकार कम होने लगे। और जीते जी ही मुझे निर्वाण पद की प्राप्ति हो गई। यह सब रामजी की कृपा का ही प्रताप है।

रामजी राम राम

श्रीराम
25 2 97

शब्द 167

रे मन ऐसो कर सत्यासा 2
बनसे सदन सबै कर समझो
मनहि मांहि उदासा। रे मन - - -

II

जत की जटा जोग के मंजन
नेम के नावन बढाओ।
ज्ञान गुरु आतम उपदेसहु
नाम विभूति लगाओ रे मन - - -

IV

अल्प आहार सुलप सी निद्रा
दया छमा तन प्रीति
सील सतोख सद निरबाहिबो
हैवे त्रिगुणा आतीत रे मन -.

V

काम क्रोध अहंकार लोभ हठ
मोह न मन सिउ लावे
तब ही आतम तत को दरसे
परम पुरख कहि पावे रे मन —

सियाराम सीताराम

शब्द 168

किआ मागउ किछु थिर न रहाई
देखत नैन चलिओ जगु जाई 2

II
लंका सी कोट समुंद सी खाई
तिस रावण घर खबर न काई

III
इक लाख पूत सवा लाख नाती
तिस रावण घर दीआ न बाती

किआ मागउ.

किआ - - - .

IV
चंद सूरज जा के तपत रसोई
बैसंतर जा के कपड़े धोई

किआ - - -

V
गुरमत रामै नाम बसाई
स्थिर रहे न कतहु जाई

किआ मागउ -

VI
कहत कबीर सुनो री लोई
राम नाम बिन मुकति न होई

किआ मागउ.

रामजी राम राम

श्रीराम
3. 3. 57

शब्द 169

राम रस पीआ रे पीआ राम रस पीआ रे पीआ 2

II

बिसर गये रस और राम रस पीआ रे पीआ 2

III

रे मन तेरो कोई नही खिंच लेइ जिन भार
बिरख बसेरो पंख को, तैसो इह संसार

राम रस - -

IV

अउर मुए क्या रोइये, जउ आपि थिर न रहाई
जो उपजै सो बिनसि है, दुख कर रोवै बलाई

राम रस —

V

जह की उपजी तह रची, पीवत मरदन लाग
कहि कबीर चित चेतिआ राम सिमर बैराग

राम रस..

भावार्थ

जिन को प्रभु नाम का रस आ जाता है उसे संसार के सारे रस भूल जाते है। वह अपने मन को वैराग्य में ही लगाता है कि जैसे एक पंछी वृक्ष पर आकर बैठता है और उड़ जाता है ऐसे ही हे मन!

तूने भी इस संसार से चल पड़ना है। दूसरों के मरने पर तू क्यों रोता है जबकि तूने भी ऐसे ही एक दिन चल बसना है। कबीर जी कहते हैं जो उत्पन्न होगा वह अवश्य ही नाश भी होगा रोज हम देखते हैं। कबीर जी कहते हैं मैं तो कभी नहीं रोऊंगा हां रोऊंगा तो अपने प्रीतम के विरह मे रोऊंगा। चित को हमेशा चेतन अवस्था मे रखो और वैराग्य रखो राम नाम का सिमरन करते रहो।

हम भी सदा अपना जीवन नाम मे ही व्यतीत करना है। वैराग्य आदि तो अपने आप हो जाता है। प्रभु प्राप्ति की चार सीढ़ियां हैं

(1) भक्ति
(2) ज्ञान
(3) वैराग्य
(4) मोक्ष

इस लिए हम सबको ऐसे सम्बोधन करते हैं

रामजीरामराम

श्रीराम
3. 3. 97

शब्द 170

राम सिमर राम सिमर यही तेरो काज है
यही तेरो काज है, सतगुरु को तेरी लाज है
राम सिमर - .

II

माइआ को संग त्यागि प्रभु जू की शरण लाग
जगत सुख मान मिथ्या, झूठो सब साज है
राम सिमर - .

III

सुपने जिउं धन पहचान काहे ऊपर करत मान
बारु की भीत जैसे बसुधा को राज है
राम सिमर -

IV

नानक जन कहत बात, बिनस जाएगो तेरो गात
छिन छिन कर के गइयो काल, तैसे आज जात है
राम सिमर -

रामजी रामराम

श्रीराम
3.3.97

शब्द 171

मन राम सिमर, मन राम सिमर, मन राम सिमर पछताएगा
मन राम सिमर पछताएगा।

II

पापी जीअड़ा लोभ करत है
आज काल उठ जाएगा।।
मन राम ----

III

लालच लागे जनम गवाइआ
माइआ भरम भुलाएगा।।
मन राम ----

IV

धन जोबन का गरब न कीजे
कागद ज्यों गल जाएगा।।
मन राम सिमर ---

V

जउ जम आए केस गहि पटके
ता दिन किछु न बसाएगा।।
मन राम —

VI

सिमरन भजन दइआ नही कीनी
तउ मुख चोटा खाएगा
मन राम -

VII

धरमराई जब लेखा मागे
क्या मुख ले के जाएगा।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो
साध संगत तर जाएगा।।

शब्द 172

एका टेक मेरे मन चीत
जिस किछ करना सो हमरा मीत 2

II

मीत करे सोई हम माना
मीत के करतब कुशल समाना
एका ---

III

मीत हमारा बेपरवाह
गुरु किरपा ते मोहे असनाह
एका ---

IV

मीत हमारा अन्तरयामी
समरथ पुरख पारब्रहम स्वामी
एका --

V

हम दासे तुम ठाकुर मेरे
मान महत ठाकुर प्रभु तेरे
एका ---

(भावार्थ)

जब हमने अपने सतगुरु को ठाकुर जी को अपना बना लिया है तो दृढ़ विश्वास रखना है कि वह जो कुछ भी करते हैं उस में हमारी भलाई अवश्य ही है

शब्द 173

उलाहनो मै काहू न दीओ
मन मीठ तुहारो कीओ

II

आगिआ मान जान सुखं पाइआ
सुन सुन नाम तुहारो जीओ

III

इहां उहां प्रभु तुमही तुमही
एह मंत्र गुरु ते द्रिड़ईओ

IV

जब ते जान लई ए बाता
तब कुशल खेम सब थीओ

V

साधसंग नानक परगासिओ
आन नही रे बीओ

उलाहनो मै —

"गावरि"

राम जीरामराम
श्रीराम

Tomorrow

२०८।७५

एका टेक मेरे मन चीत
जिस किछ करणा सो हमरा मीत

II

मीत करै सोई हम माना
मीत करै सोई हम माना
मीत के करतब कुशल समाना

III

मीत हमारा वेपरवाह
गुर किरपा ते मोहे असनाह

IV

मीत हमारा अन्तरयामी
समरथ पुरख पारब्रह्म स्वामी

V

हम दासे तुम ठाकुर मेरे
मान महत नानक प्रभु तेरे

रामजीरामराम

श्रीराम
15.3.97

शब्द 175

होली कीनी संत सेव
रंग लागा अति लाल देव
II
गुरु सेवउ कर नमस्कार
आज हमारे मंगलाचार
आज हमारे महा आनन्द
चिंत लथी मेरे गोविंद
III
आज हमारे गृह बसंत
गुन गाये प्रभ तुम बेअंत
IV
मन तन मउलिउ अति अनूप
सूके नाही छाव धूप
V
सगली रुती हरिआ होय
सद बसंत मिले गुरदेव
बिरख जमिओ है पारजात, फूल लगे फल रतन भांत
तृप्त अघाए हर गुणा गाए, जन नानक हर हर हर ध्याये

शब्द 178

दिन राती आराधो प्यारे २
निमख न कीजे ढीला २
मोहन प्रान मान रगीला २

II

जिस सिमरत मन होत आनन्दा
उतरे मनो जगीला
मोहन प्रान मान --

III

संत सेवा कर भावनी लाइए
तिआगि मान हठीला
मोहन प्रान --

IV

वास रहिओ हिए के संगे
पेखि मोहिओ मन लीला
मोहन प्रान --

V

मिलबे की महिमा बरन न साकउ
नानक परै परीला
मोहन -

भावार्थ

हम दिन रात गुरु मन्त्र जाप करना चाहिए जिससे हमारे अन्तर की मैल सब धुल जाती है और आनन्द मिलता है

शब्द 177

सतां टेक तुम्हारी मेरे राम राई
सतां टेक तुम्हारी
जो तुध भावे सोई परवाणु
मन तन तूही आधारी
सतां टेक तुम्हारी - .

II

तेरा भाणा तूहै मनाइहि, जिसनु होहि दइआला।
साई भगति जो तुध भावै, तू सरब जीआ प्रतिपाला।
सतां टेक - .

III

तूं दइआल कृपाल किरपानिधि, मनसा पूरन हारा।
भगत तेरे सभ प्राणपति प्रीतम, तूं भगतन का प्यारा
सतां - .

IV

तूं अथाह अपार अति ऊंचा। कोई अवर न तेरी भांते
इह अरदास हमारी स्वामी, विसर नाही सुख दाते
सतां --

V

दिन रैणा सास सास गुण गावा, जे स्वामी तुध भावां
नाम तेरा सुख नानक मांगे साहब तुठे पावां
सतां टेक - .

रामजी राम राम
श्री राम

राम जी राम राम

श्रीराम

389

शब्द 178

आपहि मेल लहे हरि आपहि मेल लहे
जब ते शरण तुम्हारी आये
सगले दोख गए, मेरे सगले दोख गए

II

तज अभिमान और चिंत बिरानी
साधह शरण परे 2
आपे मेल लहे

III

जप जप नाम तुम्हारा प्रीतम
तन ते रोग खवे आपे मेल लहे

IV

महा मुग्ध अजान अज्ञानी
राखे धार दरे 2 आपे मेल लहे

V

कहो नानक गुरु पूरा भेटिओ
आवन जान रहे आपे मेल -

राम जी राम राम

श्रीराम
.. 3.97

शब्द 179

रतियां रतिया रतियां साईं नाल मैं रत.

रते नी सेई जेहड़े मुख न मोड़न
जिनि सिञाता साई
साई नाल मैं रतिया

II

झड़ झड़ पैंदे कच्चे बिरही
जिना कार न आई
साई नाल मैं रतिआ

III

धणी विहूणा पाट पटम्बर जाई से तनी जाले
साई नाल मैं रतिआ

IV

धूड़ी विच लुडंदड़ी सोहां
नानक तैं शहो नालि
साई नाल मैं रतिआ

रामजीरामराम
श्रीराम
26.3.97

391

सम्मजोरामराम
श्रीराम

शब्द 180

पूता माता की आसीस 2
निमख न विसरे तुम को हरि हरि
सदा भजो जगदीशा पूता
माता की आसीस

जिस सिमरत सभ किलबिख नासे
पितरी होय उधारो
सो हरि हरि तुम सद ही जापो
जा का अंत न पारो
पूता माता की —

III
सतगुरु तुम को होय दइआला
संत संग तेरी प्रीत
कापड़ पत परमेसर राखै
भोजन कीरतन नीत
पूता माता की —

IV
अमृत पीवहु सदा चिर जीओ
सिमरत अनत अनन्ता
रंग तमाशा पूर्ण आसा
कभी न व्यापै चिन्ता

239-126
Week 35

Tomorrow

392

August
Wednesday
27

गवर तुम्हारा इह मन होव
हरि चरणा होय कउला
नानक दास उन संगी लपटाइआ
जिऊ बूंद चात्रिक मौला

पूता माता की आसीस

रामजी राम राम

श्रीराम
26.3.97

28 August Thursday

393

240-125
Week 35

राम जी राम राम
श्रीराम
Tomorrow

शब्द 181

आवै साहिब चित मैनू तेरिआ भगतां डिठिआ.
मन की कटिए मैलु साध संग वुठिआ 2
आवै साहिब चित —

II

जनम मरण भउ कटिए
गुरु का शब्द जाप 2
बन्धन खोलन संत जन
दूत सब जायें छप 2
आवै साहिब चित

III

तिस सिउ लाइन रंग
जिसदा सब धारिआ 2
ऊचों ऊचा पान 2
हरि अगम अपारिआ 2

IV

आवै साहिब चित

रैण दिनस कर जोड़
सास सास धिआइए 2
जां आप होय दइआल
[illegible]

शब्द 182

जीवनो मै जीवन पाइआ गुरमुख भाये भाय राम
हरि नामो हरि नाम देवै मेरे प्राण वसाए राम

॥

हरि हरि नाम मेरे प्राण वसाय
सब संसा दूख गवाइआ
अदिसट अगोचर गुरु शब्द धिआइआ
पवित्र परम पद पाइआ राम

॥॥

अनहद धुनि वाजहि नित वाजे
गाई सतगुर बाणी राम
नानक दात करी प्रभ दाते
जोति जोति समाणी राम

जीवनो मै जीवन -

रामजी राम राम

श्रीराम
2-3-91

श्री राम

21/8/83

मेरे साहिबा २ तेरे चोज विडाणा।

जी तेरे चोज विडाणा
जल थल महिअल भरपूर लीणा आपे सरब समाणा
मेरे साहिबा २

II

पुड़ धरती पुड़ पाणी आसणा
चार कुंट चऊबारा
सगल भवन की मूरति एका
मुख तेरे टकसाला
मेरे साहिबा २

III

जह जह देखा तह ज्योति तुम्हारी
तेरा रूप किनेहा।
इकत रूप फिरें परछन्ना
कोई न किस ही जेहा।
मेरे साहिबा २

IV

अण्डज जेरज उतभुज सेतज
तेरे कीते जनता।
एक पुरब मैं तेरा देखया
तू सभना माहि रमन्ता
मेरे साहिबा —

तेरे गुण बहुते मै एक न जानिआ
मै मूरख किछ दीजै
प्रणवत नानक सुण मेरे साहिबा 2
डुबदा पत्थर लीजै
मेरे साहिबा 2 —

रामजी राम राम

श्रीराम
29-3 97

शब्द 184

मिल मेरे प्रीतमा जीआ, तुध बिन खरी निमाणी
मै नैणी नीद न आवै जीओ, भावै अन्न न पाणी

II

पाणी अन्न न भावै मरीए हावे, बिन पिर क्या सुख पाईए
गुर आगे करउ बेनंती, जो गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईए

III

आपे मेल लए सुखदाता आपि मिलिआ घर आए
नानक कामण सदा सोहागण, न पिर मरै न जाए

रामजीरामराम श्रीराम
29 3 97

रामजी रामराम
श्रीराम

शब्द 185

ठाकुर तुम बिन आहि न मोरा 2

II

मात पिता भाई सुत बन्धप
तिन का बल है धोरा
मेरे ठाकुर --

III

अनिक रंग माइआ के पेखे
किछु साथ न चालै भोरा
ठाकुर ---

IV

मोहे अनाथ निगुर्ण गुण नाही
आइओ तुहारो धोरा
मेरे ठाकुर --

V

बलि बलि बलि बलि चरण तुहारे
इहा उहा तुहारो जोरा
ठाकुर --

VI

साध संग नानक दरस पाइओ
बिनसिओ सगल निहोरा
ठाकुर --

रामजीरामराम श्रीराम
29 3 17

गउड़ी 186

दइआ करहु बसहु मनि आई
मोहि निरगुन लीजै लड़ लाइ

II

सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे
अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे

III

मोहि अनाथ तुम्हरी शरणाई
कर किरपा हरि चरण धिआइ

IV

प्रभ चित्त आवे तो कैसी भीड़
हरि सेवक नाही जम पीर

V

सरब दुख हरि सिमरत नसै
जा के संगि सदा प्रभ बसै

VI

प्रभ का नाम मन तन आधार
बिसरत नाम होवत तन छार

VII

प्रभ चित आवे पूरन सब काज
हरि बिसरत सब का मोहताज

25 September Thursday

श्रीराम

Tomorrow

चरण कमल संग लागी प्रीति
बिसर गई सब दुरमति रीति

X

मन तन अन्तर हरि २ मन्त्र
नानक भगतन के घर सदा आनन्द

दइआ करहु म'धमु प्रभ.

राम जी राम राम

श्रीराम

कर किरपा प्रभु दीन दयाला
तेरी ओट पूरण गोपाला

श्रीराम
29.3.97

शब्द 187

मेरा मन लागा है राम प्यारे २, दीनदयाल करी प्रभ किरपा वस कीने पंच दूतारे

II

भव खंडन दुख भंजन स्वामी, भगत वछल निरंकारे
कोटि अपराध खिन भीतर, जां गुरमुखि नाम समारे

III

तेरा थान सुहावा रूप सुहावा, तेरे भगत सोहहि दरबारे
सर्व जीआ के दाते स्वामी, कर किरपा लेहो उबारे

IV

तेरा वरन न जापै रूप न लखीऐ, तेरी कुदरत कउन बीचारे
जल थल महीअल रविआ सर्व थांई, अगम रूप गिरधारे

V

कीरति करे सगल जन तेरी, तू अबिनाशी पुरख मुरारे
जिउ भावै तिउ राखहु मेरे स्वामी, जन नानक शरण दुआरे

राम जी राम राम श्रीराम
29 3.97

27 September Saturday

Week 39

राम श्रीराम राम

श्रीराम

शब्द 188

हमारै एकै हरि हरि 2

आन अवर सिञाणा न करी

हमारै एकै - - -

II

वडै भाग गुरु अपना पाइओ

गुरु मो को हरि नाम दृड़ाइओ

हमारै एकै -

III

हरि हरि जाप ताप व्रत नेमा

हरि हरि ध्याय कुशल सब खेमा

हमारै एकै -

IV

आचार विउहार जान हरि गुनिआ

सदा आनन्द हरि कीरतन सुनिआ

हमारै एकै -

V

कहु नानक जिन ठाकुर पाइआ

सब किछ तिस के घर मे आइआ

हमारै एकै -

राम श्री राम राम

श्रीराम

30 3.97

श्रीराम

शब्द 189

गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा 2
राम नाम जप सदा सुहेलो
सगल बिनासे रोगा कूरा 2

II

एक अराधहु साचा सोय
जा की शरणा सदा सुख होय
गुरु पूरा -

III

नीद सुहेली नाम की लागी भूख
हरि सिमरत बिनसे सब दूख
गुरु पूरा :

IV

सहज आनन्द करो मेरे भाई
गुरु पूरे सब चिंत मिटाई
गुरु पूरा -

V

आठ पहर प्रभु का जप जाप
नानक राखा होआ आप
गुरु पूरा -

रामजीरामराम

श्रीराम
30.7.97

शब्द 190

गोविन्द नाम मत बीसरै री बाई

गोविन्द नाम मत बीसरे - - .

II

अन्त काल जो लछमी सिमरैं

ऐसी चिंता माहि जो मरे

सरप जोनि वल वल अवतैरे

III

गोविन्द नाम

अन्त काल जो स्त्री सिमरे

ऐसी चिन्ता मे जो मरे

वेसवा जोनि वल वलो अवतरे गोविन्द

IV

अन्त काल जो लड़के सिमरे

ऐसी चिन्ता मे जो मरे

शूकर जोनि वल वल अवतैरे गोविन्द

V मंदर

अन्त काल जो मंदर सिमरैं

ऐसी चिन्ता मे जो मरे

प्रेत जोनि वल वलो अवतरे

गोविन्द

अन्त काल जो नारायण सिमरै
ऐसी चिन्ता महि जो मरै
बदति त्रैलोचन ते नर मुक्ता
पीताम्बर जा के हृदय बसै

भावार्थ

हम इस मनुष्य जीवन को प्रकार हर श्वास
मे भजन सिमरण ही करना चाहिए नही तो
हम कई नीची योनियो मे भटकना पड़ेगा।

राम जीराम राम

श्रीराम
30.9.97

पउड़ी

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश
हे पूरन हे सर्बमय दुख भंजन गुण ताम
हे संगी हे निरंकार हे निरगुण सब टेक
हे गोबिन्द हे गुण निधान जा के सदा बिबेक
हे अपरंपर हरि हरे है भी होवनहार
हे संतों के सदा संगी निराधार आधार

405

274-91
Week 40

~~रामजी रामराम~~

श्रीराम

Tomorrow

1

October
Wednesday

हे ठाकुर हउ बापरो
मै निरगुन गुन नही कोय
नानक दीजै नाम दान राखउ हिय पिरोये

रामजीरामराम

श्रीराम
30.3.97

बारह माह

चेत- चेत गोविन्द अराधीए होय आनन्द घणा
संत जना मिल पाईए रसना नाम भणा
जिन पाइआ प्रभु आपणा, आये तिस ही गणा
इक खिन तिस बिन जीवणा, बिरथा जनम जणा
जिनी राविआ सो प्रभु, तिन्हा भाग मणा
हरि दरशन नु मन लोचदा, नानक प्यास मना
चेति मिलाए सो प्रभु, तिन के पाये लगा

वैसाख- वैसाख धीरन क्यों वाडिआ, जिना प्रेम बिछोह
हरि साजन पुरख विसारि कै, लगी माइआ धोह
पुत्र कलत्र न संग धना, हरि अविनाशी ओह
पलचि पलचि सगली मुई, झूठे धन्धे मोह
इकस हरि के नाम बिन, अगे लइअहि खोह
दयु बिसारि विगुचणा, प्रभु बिन अवर न कोई

जेठ- हरि जेठ जुड़दा लोड़िये, जिस अगे सब निवनि
हरि सजण दावणि लगिआ, किसे न देई बन्न
माणक मोती नाम प्रभ, उन लगी नाही सन्न

रंग सब नारायणै जेते मन भावन
जो हरि लोड़े सो करे, सोई जीअ करंन
जो प्रभु कीते आपणे, सोई कहीअहि धन
आपणा लीआ जे मिलै विछुड़ क्यों रोवंन
साधू संग परापते नानक रंग माणंन
हरि जेठ रंगीला तिस धनी जिस कै भाग मथंन

आसाढ़ — आसाढ़ तपंदा तिस लगै, हरि नाहु न जिना पास
जगजीवन पुरख तिआग के, माणस संदी आस
दुयै भाय विगुचीऐ, गल पईसु जम की फास
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआस
रैणि विहाणी पछुताणी, उठ चली गई निरास
कर किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ प्यास
प्रभ तुम बिना दूजा को नही नानक की अरदास
आसाढ़ सुहंदा तिस लगै जिस मनि हरि चरणा निवास

सावण — सावण सरसी कामणी चरण कमल सिउ पिआर
मन तन रता सच रंग इको नाम आधार
बीखिआ रंग कूड़ाविया दिसन सभे छार

श्री रम

हरि बूंद सुहावणी, मिल साधू पीवणहार
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ, संम्रथ पुरख अपार
हरि मिलणै नो मनु लोचदा, करमि मिलावणहार
जिनि सखीए प्रभु पाइआ, हउ तिन कै सद बलिहार
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहार
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हार

भादुइ — भादुइ भ्रमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु
लख सीगार बणाइआ, कारजि नाही केतु
जितु दिनि देह बिनससी, तितु वेलै कहसनि प्रेतु
पकड़ि चलाइनि दूत जम, किसै न देनी भेतु
छडि खड़ोते खिनै माहि, जिन सिउ लगा हेतु
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु
जेहा बीजै सो लुणै, करमा संदड़ा खेतु
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु
से भादुइ नरकि न पाईअहि, गुरु रखण वाला हेतु

असुनि — असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ
मनि तनि पिआस दरसन घणी, कोई आणि मिलावै माइ
संत सहाई प्रेम के, हउ तिन कै लागा पाइ

श्री रक

Tomorrow

बिन प्रभ किओं सुख पाईए, होर दूजी नाही जाए
जिनि चाखिआ प्रेम रस, से तृप्त रहे अघाए
आप त्याग बिनती करे लेहो प्रभु लड़ लाए
जो हरि कंत मिलाइआ, से विछड़ कतहि न जाए
प्रभ बिन दूजा को नही, नानक हरि शरणाए
आसु सुखी वसंदिआ जिना मइआ हरि राए

कातिक — कतक कर्म कमावने दोस न काहू जोग
परमेश्वर ते भुलियां व्यापन सभे रोग
बेमुख होए राम ते, लगन जनम विजोग
खिन में कउड़े हो गए जितड़े माइआ भोग
विच न कोई कर सके, किस थै रोवहि रोज
कीता किछ न होवई लिखिआ धुर संजोग
वडभागी मेरा प्रभ मिले तां उतरहि सभ बिओग
नानक को प्रभ राख लेहो मेरे साहिब बंदी मोच
कतक होवे साध संग बिनसहि सभे सोच

मघर — मघर मांह सुहंदिआ, हरि पिर संग बैठड़ीआं
तिन की शोभा क्या गणी, जो साहिब मेलड़ीआं

तन मन मउलिआ राम सिउ, संगि साध सहेलीड़हां
साध जना ते बाहरी से रहन अकेलीड़हां
तिन दुख न कबहु उतरे, से जम के वसि पड़ीआह
जिनि राविआ प्रभ आपणा, से दिसनि नित खड़ीआह
रतन जवाहर लाल हरि कंठ तिन्हा जड़ीआह
नानक बांछै धूड़, तिन प्रभ शरणी दर पड़ीआह
मघर प्रभ आराधणा, बहुड़ न जनमड़ीआह

पोख - पोखि तुखार न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु
मन बेधिआ चरणारबिंद दरसन लगड़ा साहु
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु
बिखिआ पोह न सकई मिलि साधू गुण गाह
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाइ
कर गहि लीनी पारब्रहम बहुड़ न विछुड़ीआह
बार जाउ लख वेरीआ हरि सजणु अगम अगाह
सरम पई नाराइणै, नानक दर पईआह
पोख सुहंदा, सरब सुख जिस बखसे वेपरवाह

माघि — माघ मजन संग साधुआ धुड़ि कर इसनान
हरि का नाम धिआइ सुण सभना नू कर दान
जनम करम मल उतरै मन ते जाइ गुमान

काम क्रोध न मोहिए विनसै लोभ सुआन
सच्चे मारग चलदिआ उसतत करे जहान
अठसठ तीरथ सगल पुन जीअ दइआ परवान
जिस नू देवै दइआ कर सोई पुरख सुजान
जिना मिलिआ प्रभ आपणा नानक तिन कुरबान
माघ सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मेहरवान

फलगुण — फलगुण अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ
संत सहाई राम के कर किरपा दीआ मिलाइ
सेज सुहावी सरब सुख हुण दुखा नाही जाइ
इछ पुनी वडभागणी वर पाइआ हरि राइ
मिल सहीआं मंगल गावही गीत गोविंद अलाइ
हरि जेहा अवर न दीसई कोई दूजा लवै न लाइ
हलत पलत सवारिओन निहचल दितीअन जाइ
संसार सागर ते रखिअन बहुड़ न जनमै धाइ

जीहा एक अनेक गुण तरै नानक चरणी पाइ
फलगुण नित सलाहिए, जिसनू तिल न तमाइ

जिनि जिनि नाम ध्याया, तिन के काज सरे
हरि गुरु पूरा अराधिआ, दरगाह सच खरे

सरब सुखा निधि चरणा, हरि भवजल बिखम तरे
प्रेम भगति तिन पाइआ, बिखिआ नाही जरे

कूड़ गये दुबिधा नसी पूरी सच भरे
पारब्रहम प्रभ सेवदे मन अन्दर एक धरे

माह दिवस मूरत भले, जिन को नदर करे
नानक मांगे दरस दान किरपा करो हरे

हरे किरपा करो हरे 2 नानक मांगे दरस दान
किरपा करो हरे

रामजीरामराम

श्रीराम
1.4.97

राम नाम रस / श्री राम

आनन्द साहिब

आनन्द भइआ मेरी माई, सतगुरु मै पाइआ
सतगुरु ता पाइआ सहज सेती मन वजिआ वधाइआ
राग रतन परिवार परीआ शब्द गावण आइआ
शब्दो ता गावो हरि केरा मन जिनि वसाइआ
कहै नानक आनन्द होआ सतगुरु मै पाइआ
ए मना मेरिआ तू सदा रहो हरि नाले
हरि नाल रहो तू मन मेरे दुख सब विसारना
अंगीकार ओह करे तेरा कारज सब सवारना
सभना गला समरथ स्वामी सो किउ मनो विसारे
कहै नानक मन मेरे सदा रहो हरि नाले
साचे साहिबा किआ नाही घर तेरे
घर ता तेरे सब किछ है जिस देवे सो पावे
सदा सिफत सलाह तेरी नाम मन वसावे
नाम जिन के मन वसिआ वाजे शब्द घनेरे
कहै नानक सचे साहिबा किआ नाही घर तेरे
साचा नाम मेरा आधारो साच नाम आधार मेरा
जिन भुखां सब गवाइआ
कर शान्ति सुख मन आए वसिआ इच्छा सब पुजाइआ

सदा कुरबाणा कीता गुरु विटहु
जिस दीआ रह वडआइआ
कहे नानक सुणहु सन्तो शब्द धरो प्यारो
साचा नाम मेरा आधारो
वाजे पंच शब्द तित घर सभागे घर सभागे शब्द
कला जित घर धारिआ, पंच दूत तुध वस कीते वाजे
काल कंटक मारिआ
धुर करम पाइआ तुध जिन को से नाम हरि के लागे
कहे नानक आनन्द होआ तित घर अनहद वाजे
आनन्द सुनो वडभागीओ सगल मनोरथ पूरे
पारब्रहम प्रभ पाइआ उतरे सगल विसूरे
दुख रोग सताप उतरे सुनी साची बाणी
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी
सुणते पुनीत कहते पवित्र सतगुर रहिआ भरपूरे
बिनवंत नानक गुर चरणी लागे, वाजे अनहद तूरे

पवन गुरु पानी पिता, माता धरति महत
दिवस रात दुइ दाई दाइआ खेले सगल जगत
चंगिआइआ बुरिआइआ वाचे धरम हदूर
[illegible]

415

284-81
Week 41

रामजीराम राम

श्रीराम

Tomorrow

11 October Saturday

जिनि नाम धिआइआ गए मुशकत घालि
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि

अरदास

तूं ठाकुर तुम पै अरदास जिउ पिंड सब तेरी रास
तुम मात पिता हम बालक तेरे
तुम्हरी किरपा ते सुख घनेरे
कोई न जाने तुम्हरा अन्त
ऊचे ते ऊचा भगवन्त
सगल समग्री तुम्हरे सूत्र धारी
तुम ते होय सो आगिआकारी
तुम्हरी गति मिति तुम्ही जानी
नानक दास सदा कुरबानी
तुध आगे अरदास हमारी जीओ पिंड सब तेरा

वाहिगुरु

कहो नानक सब तेरी वडिआई
कोई नाम न जाने मेरा राम जी

हे राम जी हमारी बुद्धियों को अपनी ओर
प्रेरित करो

राम जी राम राम
श्रीराम

416

October
Sunday
12

ॐ भूर्भवः स्वाहः तत्सवितुर्वरेण्यम
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नाम प्रचोदयात
3 बार स्वाहा

हे सर्वशक्तिमान पिता
हम आप के बच्चे हैं आप हमारी रक्षा करना
हमें दुर्गुणों से बचाना हमें सद्गुण प्रदान करना
हम क्रोध को शान्ति से जीते
लोभ को संयम से जीते
मोह को प्यार से जीते
अहंकार को विनम्रता से जीते
पल पल मे आप का ध्यान करे
हमारी द्वैत बुद्धि को मिटाना
सब के घर मे सुख शान्ति देना
रोगो का नाश हो क्लेशो का नाश हो
बस यही प्रार्थना है स्वीकार करो 3

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

आरती

ॐ जय सतगुरु देवा 2
अपने भक्तो के संकट तुम दूर करो देवा

II ॐ जय - -

तुम हो अलख अविनाशी तुम अन्तरयामी
तुम ही कर्ता धर्ता, तुम सब के स्वामी

III ॐ जय - -

अपना रूप दिखाते करता 2 ध्यान रहे
तेरी कृपा का मेरे सतगुरु हर पल ध्यान रहे

ॐ जय - -

IV

हर पल तुम को ध्याऊ तेरे गुण गाऊ
बार 2 चरणो मे मै प्रभु शीश निवाऊ

V ॐ जय - -

घट मे आप विराजो मन मन्दिर साजे
बाजे अनहद बाजे जय श्री राम हरे

VI

जगमग ज्योति सुहावे रूप तेरा प्यारा 2
श्वेत वर्ण उजियारा सतगुरु है मेरा

सब पर कृपा करो मेरे प्यारे गुरुदेवा
क्षमा करो सब अवगुण सब तेरी सेवा
ॐ जय —.

VIII

तेरे द्वारे आए प्रभु जी करना आप रक्षा
इक पल भी न बिसरे नाम प्रभु तेरा
ॐ जय — —

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव
त्वमेव सर्वम् मम देव देव

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामय
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा
कश्चिद् दुख भाग भवेत्

सब पर कृपा करो भगवान
सबपर दया करो भगवान
सब को सब विधि हो कल्याण
सब जन लेवें तुम्हारा नाम

तभी होगा सब का कल्याण

धर्म की जय हो
अधर्म का नाश हो
प्राणीओ मे सद्भावना हो
विश्व का कल्याण हो

हर हर महादेव
जय2 श्री राधे 3 वार

समाप्त

THE END

रामजीरामराम

श्रीराम
4.1.97